Govt. Degree College

SAINJ

Distt. Kullu, (H.P.)

VALLEY VIBES

Yearly Magazine

(2024-25)

Email : gcsainjhp@gmail.com

Website : www.gcsainjhp.in

EDITORIAL BOARD

(Session : 2024-25)

Dr. Sujata
(Principal)

Ms. Nisha Negi
(Editor-in-Chief)

Staff Editors

Local Environment:	:	AP Suresh Kumar
	:	Dr. Kavita Katoch
Campus Life:	:	AP Prem Negi
	:	AP Pradeep Kumar
Creative Writing and Arts	:	AP Nisha Negi
Academic Insights	:	AP Hoshiar Chand
		Dr. Vandana Arya

Staff with Student Editors

Principal with Teaching Staff

Principal with Non-Teaching Staff

PRINCIPAL

Dear Students and Faculty Members,

It is with great joy and pride that I extend my warmest greetings to you all through the pages of Valley Vibes, our college magazine that truly resonates with the heartbeats of Govt. College Sainj.

Every year, this magazine becomes more than just a publication—it becomes a window into our world. It captures the voices, the dreams, the struggles, and the triumphs of our students and staff. And this year, our college magazine is titled *Valley Vibes* which beautifully weaves together four new threads that define who we are: our love for the local environment, the energy of campus life, our creative spirit, and our academic pursuit of knowledge.

As I flip through these pages, I feel a deep sense of connection—not just as a principal, but as a fellow traveller on this shared journey of learning and growth. Whether it's a poem written under the pine trees, a reflection on a lively campus event, or a research piece on Himalayan culture—each contribution echoes the soul of our college community.

To our students: you are the lifeblood of this institution. Keep expressing, exploring, questioning, and creating. Let your curiosity guide you and your roots ground you. Let this magazine be a space where you leave a mark—not just with ink on paper, but with thought, honesty, and vision.

To my colleagues: thank you for nurturing minds and shaping lives, often beyond the boundaries of classrooms. Your silent dedication reflects throughout *Valley Vibes*.

To the editorial team: my heartfelt appreciation for giving shape and voice to this collection of thoughts and talents. Your efforts will surely inspire many.

May *Valley Vibes* continue to grow as a reflection of who we are—a proud, passionate, and promising academic family nestled in the breathtaking valley of Sainj.

With best wishes,
Dr. Sujata
Principal

Editor-in-Chief

Dear Cherished Readers,

It is with great excitement and a deep sense of purpose that I present to you this special edition of our college magazine—a reimagined journey into the heart of our student community at Govt. Degree College, Sainj.

This year, we have taken a bold step away from the traditional magazine format. Instead of a conventional collection, we've embraced a structure that reflects both the evolving interests of our students and the world around us. Our magazine now unfolds across four thoughtfully curated sections: **Local Environment**, **Campus Life**, **Creative Writing and Arts**, and **Academic Insights**.

Each section represents a window into the diverse passions and perspectives that animate our college. *Local Environment* brings attention to the landscapes, traditions, and ecological challenges that shape our region. *Campus Life* captures the spirit, events, and daily rhythms that make our college a vibrant place of learning and belonging. *Creative Writing & Arts* offers a platform for the imagination—where poetry, stories, and visual art come alive. And *Academic Insights* showcases thoughtful explorations, reflections, and ideas rooted in scholarly curiosity.

This new format is more than just a redesign—it is a rededication. A commitment to celebrating student voices in all their depth and diversity. A recognition that education is not limited to lectures and exams, but found in the questions we ask, the stories we share, and the worlds we create with our words and images.

I am immensely proud of the Editorial Board and all the contributors who have embraced this vision with enthusiasm and care. Your creativity, discipline, and collaborative spirit shine on every page.
May this magazine not only reflect who we are, but also inspire who we are becoming.

Yours truly,
Nisha Negi
Editor-in-Chief

Section I
Local Environment

Hello Readers!

Welcome to the *Local Environment* section—where our roots meet our voices! Living and learning in the heart of Sainj Valley, we're surrounded by more than just scenic beauty—we're part of a living, breathing ecosystem that teaches us every single day. This section is dedicated to that connection. It's where we explore the hills we hike, the rivers that run beside us, the forests that shelter our wildlife, and the traditions that bind our community to the land.

This year, we decided not just to admire our surroundings—but to *engage* with them. Through articles, reflections, and student-led explorations, we've tried to spotlight the environmental richness of our region while also raising awareness about the challenges it faces.

What makes this section so special is that it comes straight from *us*—students who walk these roads, breathe this air, and care deeply about the place we call home. It's been exciting and sometimes eye-opening to document our local treasures and think critically about how we can preserve them for generations to come.

Huge thanks to all my fellow contributors who poured their passion and curiosity into this section. You made it vibrant, real, and impactful.

Stay wild, stay aware, and keep loving where you live!
With green vibes,

Reshama
B.A. III Year
Student Editor

World Heritage Site GHNPTrek: Jeeva Nalah

'ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क' द्वारा 'सैंज' व जिवा रेंज में वन विभाग द्वारा एक ट्रैक आयोजित किया गया था, जिसमें वन विभाग के अधिकारियों के साथ–साथ 'महाविद्यालय सैंज के विद्यार्थियों ने भी भाग लिया। इसमें जितने भी लोग शामिल थे उन्हें दो समूहों में बाँटा गया। जिसमें एक समूह 'सैंज रेंज' यह शाक्टि होकर 'जिवा रेंज' में गए इसमें हम 7 लोग शामिल थे। इसमें वन विभाग के अधिकारी तथा महाविद्यालय सैंज की दो छात्राएं रेशमा और कमला शामिल थी। वन विभाग द्वारा आयोजित इस ट्रैक का उद्देश्य 'कस्तूरी मृग' तथा अन्य जीवों, जानवरों तथा पशु पक्षियों का पता लगाना था कि क्या इन जंगलों में ये सभी जानवर व पशु–पक्षी सुरक्षित तो हैं या नहीं, उन्हें जंगलों में किसी तरह की हानि तो नहीं हो रहीं हैं। इस बात का पता लगाने के लिए 'ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क' में वन विभाग द्वारा एक ट्रैक का आयोजन किया गया, जिसमें निम्नलिखित स्थानों की यात्रा की गई जो इस प्रकार हैं:–

कुडंर से कसलधार :–

सबसे पहले हम सैंज से इकट्ठा होकर कुडंर गांव तक गाड़ी में गए। यहां से हमारा यह ट्रैक शुरू हुआ। यह गांव जंगलों के बीच में है। यहां का स्थाई देवता 'संलिग नाग' है। कहा जाता है कि पहले के समय में इनके पास केवल एक निशानी थी परंतु आज इनका रथ बनाया गया है। हम कुडंर गांव में लगभग 1:00 बजे पहुंचे तथा 1:30 बजे हम वहां से चले। चलते–चलते हम आगे एक स्थान में पहुँचे जहाँ का नाम 'गातीपाठ' था। यहां पर वन विभाग द्वारा एक हट बनाई गई है, जिसमें वहां जाने वाले लोग रह सकते थे, परंतु जब हम वहां पहुँचे तो हमने देखा वहां हट के चारों ओर जंगली जानवरों तथा पशुओं की हड्डियां और गोबर फैला हुआ था। इससे यह पता चलता है कि लोग अपने पशुओं को जंगल में छोड़कर जाते है तथा ठंड के कारण वह पशु उस हट में आते हैं तथा आसपास के जंगलो में भटकते रहते हैं। जिस कारण जंगली जानवर उन्हें अपना भोजन बना लेते हैं। 'गातीपाठ' में हम लगभग 2:15 पर पहुँचे, थोड़ी देर हमने वहां विश्राम किया और हमने परांठे भी खाए और 2:30 बजे हम वहां से चले।

'गातीपाठ' से चलने के बाद हम बिल्कुल चढ़ाई में चलने लगे। चलते– चलते हम 'शिल्फड़' नामक स्थान में पहुँचे जहाँ पर हमें एक सफेद चट्टान मिली। वन विभाग के अधिकारियों ने हमें बताया कि इस चट्टान का नाम 'सॉल्ट लिक्स' था। शिल्फड़' में जब हम पहुंचे तो हमें सबसे पहले 'कर्डी' जो एक तरह का पक्षी होता है वह देखने को मिला। शिल्फड़ से चलने के बाद हमें चलते–चलते बहुत–सी कर्डियाँ मिली और छोटे–छोटे पक्षियों के चहकने की भी आवाज सुनाई देने लगी। जब हम 'कसलधार' के नज़दीक पहुँचे तो मोनाल के चहकने की आवाज़ भी सुनाई देने लगी। 5:30 बजे हम कसलधार में पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही हमें दो स्थानों पर दो जोगणियां मिली। कहा जाता है कि वह दो जोगणियां पहले एक ही थी पर आज वहाँ दो जोगणियां हैं। क्योंकि कुडंर गाँव वाले तथा 'खड़ग्चा' गांव वालों ने उस जोगणी का बंटवारा करके उसे दो भागों में विभाजित किया। एक जोगणी 'कुडर गांव' वालों की तथा दूसरी 'खड़ंग्चा' गांव वालों की हैं। कसलधार में पहुंचकर हमने सबसे पहले लकड़ियाँ इकट्ठा की तथा आग जलाई। जितना हम ऊंचाई मे आते गए तो ठंड भी बढ़ने लगी थी। आग जलाने के बाद हम खाना बनाने वाले थे परन्तु उस स्थान पर जो पानी था वह सूख गया था जिस कारण हमारे दो साथियों नारायण जी और राहुल को पानी के लिए वापिस 'शिल्फड़' पहुँचना पड़ा जो 'कसल' से बहुत से बहुत नीचे था। पानी की कमी होने के कारण हमने खाना थोड़ा धीरे–धीरे बनाया। हमने खिचड़ी खायी जो बहुत ही स्वादिष्ट बना था। 9:30 बजे तक हमने खाना खा लिया था। 10 बजे हम सभी सो गए थे।

सुबह का समय :–

हम दोनों आपस में बातें करने बैठ गए और सुबह होने का इंतजार किया। 6 बजने ही वाले थे तो हमें एक पक्षी की आवाज सुनाई दी जिसका नाम था 'खुआक्ष' उसकी आवाज़ सुनकर सारे उठ गए और हम 4 लोग कसलधार की सबसे ऊँची चोटी पर चले गए, बाकि 3 लोग वहीं पर ही रहे। हम में से 4 'ऑबजरवर' तथा 3 'विक्टर' थे। ऑबज़रवर का यह काम होता है कि वह एक स्थान में चुपचाप खड़ा रहकर जानवरों तथा पशु पक्षियों को ऑबज़रव करना, पहचान करना, नाम नोट करना तथा फोटो लेना था। 'विक्टर' का यह काम होता

है कि वह नीचे रहकर ज़ोर से चीखे जिससे सभी जानवर, पक्षी ऊपर की ओर भागे जहां ऑवज़रवर खड़ा होता है। ताकि वह उन्हें देख सके जिससे पता लगे कि कौन–कौन से जीव यहां पर मौजूद हैं। कसलधार में हमें सबसे ज्यादा 'मोनाल' व 'कर्डियां' तथा छोटे पक्षी मिले। कसलधार में हमें भूरे भालू तथा ब्राउन भालू की मल–मूत्र की निशानियाँ भी मिलीं। ऐसे स्थान पर हमें भोजपत्र के पेड़ भी दिखाई दिए और साथ ही हमने हिमनद (ग्लेशियर) भी देखे। 9 बजे हम वापिस उसी स्थान में पहुंचे जहां पर हमने अपने टैंट लगाए थे।पानी की कमी के कारण हमने सुबह खाने में मैगी बनाई थी जो बहुत अच्छी बनी थी और साथ में रात की बची हुई खिचड़ी भी नाश्ते में खाई। 10:45 पर हम वहां से चल पड़े।

कसलधार से दरशाड़ा :–

कसलधार से लगभग हम 10:45 पर चले। सबने अपने–अपने बैग पैक किए और अपनी–अपनी बोतलों में पानी भरा क्योंकि हमें आगे चलने के लिए पानी की बहुत जरूरत थी। सबसे पहले हमने उतराई वाला रास्ता पार किया जो बहुत–ही लंबा रास्ता था। उसे पार करने के बाद हमने बहुत चढ़ाई व ढंकार वाले रास्ते से चलते गए। आधे रास्ते में हमारा पानी भी खत्म हो गया था। अब हमें पानी दरशाड़ा में पहुंच कर मिलना था। चलते–चलते हमें 'घोड़े का गोबर (Scat) मिला जिससे पता चलता है कि इन जंगलों में घोड़े अभी भी पाए जाते हैं। वहां से आगे चलने के बाद हमें 'तोष' के वृक्ष मिले जो कि निचले इलाकों में नहीं पाए जाते हैं। इन जंगलों में हमें बहुत से पेड़–पौधे देखने को मिले जैसे– ताल्श, देवदार, खुर्शु, मोहरू, बान, बुराश, खनोर, जामुन, काईल, कलूछा, रईल रखाल, कोईश, भोजपत्र आदि। रखाल के पेड़ में जो दाने होते हैं कहा जाता है कि यह दिल की धड़कनों के लिए आरामदायक होते हैं। हम सभी ने वह दाने खाए। हमें घोड़े के पांवों के निशान, जंगली 'चोरा' 'खुआक्ष' के पंख भी मिले। कुछ समय बाद हम दरशाड़ा में पहुँच गए थे। हमने टैंट वहां लगाए पानी भरा, लकड़ियां इकट्ठा की और आग जलाई। सबसे पहले हमने चाय बनाई, जिसके लिए हमें जंगल में ही चायपती मिली और वहां पर हमें पानी की कोई कमी भी नहीं थी तथा कुछ लोग खाना बनाने लगे। मैं और कमला हम दोनों कैमरा लेकर फोटो लेने लगे। उसके बाद हमने रोटियाँ बनाई और दाल के साथ चावल बनाए। जैसे ही अंधेरा होने लगा फिर हम सबने खाना खाया और आग सेकने बैठ गए। मैं और कमला एक टैंट में थी और हम दोनों को रात को नींद नही आ रही थी मैं सच कहूँ तो मुझे हमारे टैंट के बाहर से किसी के चलने की आवाज़ सुनाई देने लगी जिस कारण हम सो नही पाई और हम दोनों आपस में बातें करने लगी। कुछ देर बाद हम दोनों को भी नींद आ गई और हम सो गए।

अगला दिन 7–11–2024 :–

सुबह का समय था। लगभग 6:00 बजे थे जिस वक्त हमारी नींद गई हमें एक पक्षी की आवाज़ सुनाई दी जिसे सुनकर हमारी नींद खुल गई। वह पक्षी 'ईण' और 'खुआक्ष' की आवाज़ थी। इस आवाज़ को सुनकर हम सभी उठ गए। फिर हमने आग जलाई और चाय बनाने लगे। हम 3 लोग मैं, कमला और ऊषा (जो वन अधिकारी है) हम तीनों जानवरों और पक्षियों को ऑबज़र्व करने के लिए ऊँचाई वाले इलाके में चले गए जहाँ हमने मोनाल, खुआक्ष, कर्डियों के बोलने की आवाज़ सुनी और उन्हें उड़ते हुए देखा और उनकी आवाज़ रिकॉर्ड की। 6:28 am पर हमें जुजुराणा के चहकने तथा उड़ने की आवाज़ सुनी जिससे पता चला कि इन जंगलों में जुजुराणा अभी भी है। इसके बाद हमने चाय पी और आग सेकते गए और साथ में फोटो लेने भी लगे। लगभग 8:30 बजे हमने अपने टेंट और बैग समेट लिए। उसके बाद नाश्ता करके हम 9 बजे 'दरशाड़ा' से निकल पड़े।

दरशाड़ा से मझान (घर की ओर) :–

दरशाड़ा से चलने के बाद हम ऐसी झाड़ियों से होते हुए निकले जहां से रास्ता भी नहीं था। हमारे सामने एक बहुत ऊंचा पहाड़ था जिसे हमने पार किया। उसे पार करने के बाद हम बहुत ऊंचाई पर आ गए थे जहां से हमें चारों ओर सुन्दर नज़ारें दिख रहे थे और बहुत ही आनन्द की अनुभूति हो रही थी हमारा मन कर रहा था कि काश थोड़े और दिन यहां रह पाते। वहां से चलने के बाद हम 'दराबाईच' में पहुँचे जहां से हमने देखा एक शिकारी शिकार करने के लिए पत्थर के ऊपर बैठा है। हमने वहां पर 'चीता' भी देखा परन्तु वह दूसरे पहाड़ पर था। उसे हम केवल दूर से की देख पाए। 'दराबाईच' में हमें 'जोगणी' देखने को मिली। मझान व पाशी गांव वाले वहाँ पर भोग चढ़ाने के लिए आते हैं और मन्नत मांगते हैं। कुछ देर हमने 'दराबाईच' में विश्राम किया और हम नीचे की ओर उतरने लगे। ये हमारे ट्रैक का अंतिम दिन था। हम पेड़ों के बीचों–बीच से चलते गए और पक्षियों के चहकने की आवाज़ सुनाई देने लगी थी। हम सारे

'लड़ साचना' पहुंचे। इस जगह का नाम इसलिए ऐसा पड़ा क्योंकि यहां पर पत्थरों के बीच से लड़ो (भेड़ो) के जो सींग होते थे वह उन पत्थरों में फंस जाते थे जिससे यहां का नाम ही लड़ साचना पड़ा। यहां से चलने के बाद हम आगे मझान गांव में पहुंचे जो 'तीर्थो' का स्थान है। यहां पर तीर्थ का पानी बहता है जो पवित्र माना जाता है। मझान गांव से चलने के बाद हम नीचे की ओर निकल पड़े। हमें रास्ते में 'गूणी बन्दर' मिले जिनका मुँह काला ओर सफेद शैलियाँ(बाल) होती है। चलते–चलते हम रोड़ के किनारे पर पहुँचे जहां से तीर्थ का पानी बह रहा था। वहां पहुँचकर हम सबने अपने–अपने मुँह धोए और घर की ओर निकल गए।
इस ट्रैक में हमने बहुत सी मस्तियां भी की और रात को थोड़ा–बहुत ढंकार वाले रास्ते भी पार किए। यह हमारे जीवन का पहला ट्रैक था। ये ट्रैक मुख्यतः वन्य जीव जन्तुओं, पशु–पक्षियों खासतौर पर 'कस्तुरी मृग' पर था। कस्तुरी मृग तो हमें नहीं मिला पर अन्य जानवरों, पक्षियों तथा भिन्न–भिन्न पेड़–पौधों की जानकारी हमें प्राप्त हुई।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि कुडंर से मझान तक के इस GHNP के Trek में हमने अनेक पौधों, पशु– पक्षियों के बारे में जानकारी प्राप्त की और 3 दिन के इस ट्रैक में हमने बहुत मज़े किए।
हम सब बहुत खुशनसीब है कि हमें अपने कॉलेज की तरफ से GHNP के इस ट्रैक में जाने का मौका मिला। जिसमें हमने सीखा की जंगलों में ट्रैक कैसे किया जाता है और किस प्रकार हम जंगली जानवरों को पहचान सकते हैं तथा किस तरह हम उनकी रक्षा कर सकते हैं।

रेशमा व कमला
बी.ए. तृतीय वर्ष

देवता रिंगू नाग की गाथा

श्री रिंगू नाग मूलतः टमूहल (ठाणा) भूपन नामक स्थान में है। साथ ही रिंगू नाग देवता 'रिंगू वन' जो प्रसिद्ध 'नगाड़ी' है जोकि '99' बीद्या भूमी पर फैली हुई हैं। देवता की मान्यता के अनुसार इस वन में देवता की आज्ञा के बिना लकड़ी काटना व रिंगू वन में किसी भी तरह की लोहे की वस्तु ले जाना मना है। साथ में विवाहित औरतों का जाना भी निषेध है। इस वन में केवल कुवांरी कन्याएं ही जा सकती हैं। रिंगू नाग महाराज जी के बारे में विस्तारपूर्वक वर्णन अग्रलिखित पक्तियों में करेंगे।

उत्पति की गाथाः–

कहा जाता है कि पुराने समय में जब भलाण कोठी में राणाओं का राज था उस समय कुछ लोग कमाई के कारण इधर–उधर के इलाकों में अपने व्यापार के सिलसिले जाते रहते थे। उसी सिलसिले में एक शख्स भी गया था जो बांसुरी बजाने में माहिर था। अपने व्यापार से लौटकर आते वक्त वह 'धाऊगी कंडी' में आकर बैठ गया। गर्मियों के दिन थे तो वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया और बांसुरी बजाने लगा। कहा जाता था कि वहां आस–पास के इलाके में सात नाग रहते थे। वह कई दिनों से एक ग्वाले की गाय का दूध पी रहे थे। उस दिन वह ग्वाला छुपकर देखने लगा कि मेरी गऊएं शाम को दूध नहीं दे रही है। वह सोचता था कि कोई दिन में मेरी गायों का दूध पी रहा है उसने देखा कि उसकी गऊएं काश' की झाड़ियों में जाती हैं और वहां पर सात नाग गायों का दूध पीते हैं। उस दिन उस ग्वाले ने झाड़ियों में आग लगा दी। वह सातों नाग इधर–उधर भाग गए और उनमें से एक नाग एक व्यक्ति की गठड़ी में घुस गया। उस व्यक्ति ने गवाले से पूछा कि इन झाड़ियों में आग क्यों लगाई तो उसने उन सात नागों की पूरी कहानी बताई। वह व्यक्ति इस बात से अनजान था कि एक नाग उसकी गठड़ी में घुस गया था। कहा जाता है कि वह व्यक्ति शाम होने से पहले रैला पहुँचा। वहां

पर वह पानी पीने के लिए नारायण–सारी में बैठा तथा उसने अपनी गठड़ी से खाने के लिए सातू की खालड़ी निकाली। उसमें अब थोड़े ही सातू बचे थे। उसने कुछ सातू खाए और उसमें से थोड़े सातू बांटे। वह हैरान था कि उसके साथ धाऊगी कंडी से आने के बाद अजीब घटनाएं हो रही थी परन्तु उसने जितने भी सातू बांटे वह खत्म नहीं हो रहे थे। उसने सातुओं की खालड़ी दोबारा अपनी गठड़ी में डाल दी इस बार वह अपनी गठड़ी उठा नहीं पा रहा था। तब उसने वहां पर 'नागाधार' में खड़ी एक महिला को सहारा देने को कहा। उसकी गठड़ी इतनी भारी हो चुकी थी कि वह उसे उठा नहीं पा रहा था। वह कुछ ही दूरी पर एक पत्थर पर बैठ गया और अपनी गठड़ी को खोला तो उसमें एक सांप निकला। उसने तपाक से अपना 'तबरू' (जिससे पशुओं की बली देते हैं) निकाला और सांप को मार डाला। जब उस पर पहला वार किया तो उसका धड़ अलग कर दिया। उसका सिर एक झटके से 'सुचैहण' पहुँचा और वहां पर उसे 'श्री नाग' के नाम से देवता माना जाता है। कहा जाता है कि जब उसने दूसरा वार किया तो उस साँप की पूँछ कट गई और वह उस महिला के घर पर गिर गई जिसने उसकी गठड़ी उठाने में मदद की थी। वहां पर वह 'नाग देवता' के नाम से जाना गया। जो बीच वाला धड़ था वह उस व्यक्ति के साथ उसके घर टमूहल पहुंच गया। उस महिला ने जब उस मरे सांप की पूंछ देखी तो उसने अपने घर वालों से कहा कि इस पूंछ को अपने गांव के पीछे वाले जंगल में फेंक दो तो उन्होंने वैसा ही किया और आज वहां पर 'नगाड़ी' का मंदिर है। जब वह व्यक्ति घर पहुंचा तो उसने देखा कि उसके घर पर बहुत खून बह रहा था और उसके घर वाले खून से परेशान थे। वह खून उस सांप की रिंगे से निकल रहा था जो खत्म ही नही हो रहा था। फिर उस व्यक्ति ने अपने घरवालों को अपनी पुरी कहानी बताई। तब परिवार के लोगों ने उस सांप की पूजा की और कहा कि वह कोई नाग देवता है। इसके पश्चात वह खून बंद हो गया। उस राणा का पूरी भलाण कोठी में राज था इसलिए उसने पूरी कोठी में धाम दी और देवता का नामकरण तथा स्थापना के लिए जीवा के पंडितों को बुलाया गया। "बीच का रिंगा" होने के कारण इस का नाम "रिंगू नाग" दिया गया। उस सांप के रिंगे को रिंगू वन में रखा गया और शरनधार से वाईनल और नीचे की तरफ से सैनधार से चलइन्दा तक का स्थान उसे दे दिया और कटवालों को इसकी पहरेदारी दी गई कि इस वन में कोई भी बाहर का व्यक्ति, कोई औरत व किसी तरह की लोहे की वस्तुओं को अन्दर न लेकर जाएं, केवल पुरूष और कुवांरी लड़कियां ही उपवास रख कर इस वन में जा सकते हैं। कहा जाता है कि यह घोषणा भी की गई थी कि आज के बाद हर घर में रिंगू नाग की पूजा कुल्ज देवता के रूप में होनी चाहिए और यह मान्यता आज भी लोगों के अंदर है। यहां हर घर में रिंगू नाग को कुल देवता के रूप में पूजा जाता है। उस वक्त एक कहावत बनी थी : "लोहुआ रे वगे चले–मुंडीर लाग चले" आज भी टमुहल ठाणे में सिंगों के ढेर पड़े हुए हैं। इस तरह से नाग से रिंगू नाग बनने की कहानी सुनने में आती है।

आकार और विवरण

रिंगू नाग महाराज जी का जो आकार है वो लम्बा होता है जिसकी लम्बाई लगभग 5 से 6 फुट होती है। रिंगू नाग जी के रथ की जो लकड़ियां आती है वो मझान गांव से देवता रूद्र नाग की नगाड़ी से लाई जाती है। जिनको काटकर रिंगू नाग का रथ बनाया जाता है। इसका रथ "टमूहल" में बनाया जाता है। अब आते हैं हम देवता में लगे मुखों की ओर। पहला मोहरा अष्टधातु से बनाया गया है। यह मोहरा सबसे प्रमुख मोहरा होता है। बाकी मोहरे चाँदी के बनाये गये हैं। प्रमुख मोहरे के नीचे एक जंजीर बनाई गई है और जंजीर के नीचे एक चऊक बनाई गई है जो चाँदी की है। तथा चार मुंडरू और मोहरे के साथ–साथ चार कलश जो चाँदी के होते हैं तथा दो गलमें जिसमें एक गले से और दूसरी कमर से बनाई गई हैं, चांदी की होती हैं। सबसे ऊपर–ऊपर के हिस्से को मंडयाली कहते है जो चांदी की बनी होती है तथा इसके ऊपर "चांदी का छत्तर लगाया जाता है। रिंगू नाग महाराज जी के रथ को दो "जमाणों" के ऊपर उठाया जाता है। रिंगू नाग का रथ, पूरा का पूरा चांदी का ही बनाया गया है। देवता को घाघरा, धूम, टोप तथा लुंगी पहनाई जाती है। रिंगू नाग जी को गांवों की औरतें सुन्दर–सुन्दर फूलों की मालाएं बनाती हैं जिसे देवता के गूर, पंडित व धामी देवता को पहनाते हैं और देवता को सजाया जाता है।

पूजा विधि

रिंगू नाग जी की पूजा उनके मंदिर "भूपन" में होती है, जहां पर रथ होता है। रिंगू नाग जी की पूजा करने के लिए 15 प्रविष्टे और 20 प्रविष्टे व साजा को जीवा से पंडित आते हैं, जो गूर खानदान से होते हैं और माता आशापुरी के गूर पंडित होते हैं। रोज पूजा करने वाले रिंगू देवता के धामी "श्री ज्ञान चंद" जी कहते है कि

जब पंडित पूजा करते है तो उस समय पंडित पहले स्नान करेंगे, फिर धूप जलाते हैं उसके बाद दूध, चावल, गुड़ को इकट्ठा करके उसका भोग बनाया जाता है, कुंगू से तिलक लगाया जाता है। ये सुबह के वक्त किया जाता है। शाम को घी का दीया और आरती की जाती है। जब धामी सुबह के वक्त पूजा करते हैं तो वह सिर्फ धूप जलाते हैं और पूजा करते हैं। शाम के वक्त घी का दीया जलाते हैं जिसे पहाड़ी भाषा में "सजिऊआ" कहा जाता है। देवता को अलग–अलग तरह के फूलों से सजाया जाता है।

त्योहार

रिंगू देवता जी के अलग–अलग तरह के त्योहार मनाए जाते है जिनमें उन्हें पूरी सजावट के साथ लाया जाता है तथा इन त्योहारों में माता "आशापूरी" व देवता लक्ष्मी नारायण जी भी इनके साथ होते हैं। रिंगू नाग जी के त्योहार कुछ इस तरह से हैंः

I) साजा फागुनः–

ये देवता की एक तरह की तिथि होती है जिसमें रिंगू नाग अपने मंदिर भूपन से पूरानी सौह को आते हैं। इस तिथि में मिट्टी–जौ को पूजा जाता है। रिंगू देवता के गूर देवते की झारी में पानी डालते हैं जिससे गडूआ किया जाता है। फिर पूजा–पाठ किया जाता है।

ii) साजा बैशाखः–

इस त्योहार में देवता रिंगू नाग भूपन से रिंगू वन को लाये जाते हैं। इस त्योहार में लोग घर से आटे के शाटरे–बाकरे बनाकर ले जाते हैं, जिनका देवता को पहले भोग चढ़ाया जाता है फिर देवता की पूजा की जाती है। माता आशापूरी जी भी रिंगू नाग के साथ होती है। पूजा–पाठ करने के बाद लोगों ने जो शोटरे–बाकरे लाए होते हैं वह उनको खाते हैं और एक–दूसरे के साथ भी बांटते हैं।

iii) बिठ पर्व :–

बिठ पर्व बैशाख को मनाया जाता है, जिसमें रिंगू नाग भूपन से पूराने स्थान होते हुए आशापूरी के साथ तथा देवता लक्ष्मी नारायण जी के जोगणी माता कंडा को जाते हैं जहां पूजा–पाठ किया जाता है। लोग अपने अपने घर से खिचड़ी व घी लाते हैं, फिर देवी देवता को भोग लगाया जाता है। दूर–दूर से लोग इस पर्व को मनाने के लिए आते हैं। जोगणी माता को फूल पटड़ी चढ़ाई जाती है और पूजा की जाती है। फिर लोग वहां पर मिल बांट कर खिचड़ी का आनन्द लेते हैं। वहां से घर आते बार लोग अपने–अपने घर के लिए बिठ बनाकर लाते हैं और उसे अपने घर के खेत में लगाते हैं। वहां से देवी–देवता को नचाते हुए माता आशापूरी के मंदिर को लाते हैं। यहां पर लोग नाटी डालते हैं, मिठाईयां खाते हैं, बच्चे खिलौने खरीदते हैं और उसके बाद सब धीरे–धीरे घर चले जाते हैं।

iv) खीर :–

यह देवता की एक तिथि होती है। यह 13 प्रविष्टे को श्रावण महीने में होती है। इसमें रिंगू नाग भूपन से शानघाट को आते हैं और आशापूरी साथ में होती हैं। इसमें लोग अपने–अपने घर से आटा, घी, दूध अपने साथ लाते हैं और वहीं पर देवी–देवता को भोग चढ़ाया जाता है और पूजा की जाती है। उसके बाद मिलकर खाना खाते हैं और अपने घर चले जाते हैं।

v) हूम पर्व :–

हूम पर्व 'भद्र' महीने की 'चतुर्थी' में आता है। इसमें रिंगू नाग, आशापूरी व लक्ष्मी नारायण साथ में होते हैं। रिंगू नाग भूपन से घाट होकर टमूहल कोठी को जाते हैं, फिर मंझग्रां माता आशापूरी के मंदिर में आते हैं। जहां पर हूम पर्व मनाया जाता है। यहां पर लोगों ने सुबह से लकड़ियां लाकर रखी होती हैं जिन्हें रात को जागरे में जलाया जाता है। इस जागरण में गूर अग्नि के ऊपर से चलते हैं और हूम बोलते हैं। यह एक तरह

की खेल होती है जिसे देवी–देवता के गूर खेलते हैं। यहां पर दूर–दूर से लोग इस पर्व को देखने आते हैं। देवी –देवताओं को नचाया जाता है, लोग नाटियां डालते है, मिठाईयां एवं खिलौने खरीदते हैं। यह हूम पर्व रात को ही होता है। सुबह देवी–देवता रिंगू वन (नगाड़ी) को जाते हैं वहां माता आशापूरी के गूर 'गणभार्थ' (गणाई) करते हैं। उसके बाद घाट गांव को आते हैं जो कटवालों का गांव है। यहां पर देवी–देवता को जोड़ी–बकरे दिये जाते हैं। यह एक पुरानी परम्परा है जो आज भी निभाई जाती है। यहां पर देवी–देवता खुद चयन करते हैं वह किसके घर रहना चाहते हैं। लोग सुबह से शाम तक भजन –कीर्तन करते हैं, भोजन करते हैं और नाटियां डालते हैं। इस दिन को 'ब्रेएर' कहा जाता है।

शायरी मेला :–

यह मेला 'शौऊज' महीने में मनाया जाता है। इसे 9 प्रविष्टे को मनाया जाता है। इस दिन देवता रिंगू नाग, माता आशापूरी तथा देवता लक्ष्मी नारायण जी एक साथ विराजमान होते हैं। इस दिन लोग नाच–गाने के साथ नाटी डालते हैं और देवी–देवता को भी नचाते हैं।

रेशमा
बी.ए. तृतीय वर्ष

डुबी मेला

डुबी देवता पुंडिर ऋषि का हर साल मनाया जाने वाला एक बहुत लोकप्रिय त्योहार है। पुंडिर ऋषि देहुरी के सहराण गांव में निवास करने वाले एक बहुत ही शक्तिशाली देवता है। पुंडिर ऋषि जी को रोज सुबह स्नान करवाया जाता है और उनकी पूजा की जाती है। यह त्योहार यहां का सात दिन चलने वाला स्थानीय त्योहार है जो बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। डुबी मेले के दौरान लोग तथा गुर सात दिन तक व्रत रखते हैं। यह त्योहार बहुत ही अद्धभुत होता है।

यह त्योहार 23 सितम्बर को मनाया जाता है। इस दिन देवता श्री पुंडीर ऋषि को नए–नए कपड़े. गहने और फूलों की मालाएं पहना कर सजाया जाता है। 23 सितम्बर को पुडीर ऋषि को उनके शाही स्नान के लिए सहराण गांव ले जाया जाता है। लोग त्योहार में शामिल होने के लिए दूर–दूर से पहुंचते हैं। यह त्योहार पूरे रीति–रीवाज के साथ मनाया जाता है। डुबी के एक दिन पहले पुंडीर ऋषि जी का एक और त्योहार भी होता है जिसे हूम के नाम से जाना जाता है। यह हूम रात के समय होता है। हूम के खत्म होने के बाद लोग नाचते हैं और पुंडीर ऋषि को भी नाचना पड़ता है। यह भी एक धार्मिक तथा ऐतिहासिक त्योहार है।
यहां स्नान करना बहुत जरूरी होता है और यह स्नान साल में सिर्फ एक बार ही होता है। यह स्नान करने से देवता श्री पुडीर ऋषि अपनी शुद्धि करते हैं। यह शाही स्नान देहुरी के सहराण गांव में किया जाता हैं। यह जगह चारों ओर से पेड़–पौधे से घिरी हुई है। जहां पर पुडीर ऋषि स्नान करने जाते हैं वहां एक बहुत बड़ी झील है। उस झील को श्ष्सहरश के नाम से जाना जाता है। झील का जल शुद्ध माना जाता है। यह जल देवता पुंडीर ऋषि के शाही स्नान के लिए प्रयोग में लाया जाता है। यह डुबी मेला बहुत पहले से मनाया जाता है। इसका ऐतिहासिक कथन जानना कठिन है क्योंकि यह बहुत पुराने जमाने से चलती आ रही है। यह जल पशु–पक्षी ग्रहण कर सकते हैं परन्तु मनुष्य इस जल को नहीं पी सकते। यह केवल देवता के लिए होता है। देवता को सहराण बाजे–गाजे के साथ लाया जाता है। बजंत्रि ढोल, नगाड़ा, शहनाई, डमरू, डऊस, करनाली आदि बजाते हैं।

कार्यक्रम और गतिविधियां

इस त्योहार में नृत्य भी किया जाता है जिसमें बहुत लोग शामिल होते हैं। लोग नृत्य का आनद लेते हैं और इसमें नृत्य के साथ–साथ गीत भी गाया जाता है। वहां पर भोजन के लिए सभी को हलवा बनाया जाता है। यह

भगवान श्री पुंडीर ऋषि का प्रसाद होता है जिसे सभी लोगों में बांटा जाता है। इस डुबी त्योहार के पश्चात "सहराण" गांव में खेल भी खेले जाते हैं। अंत में जो "विजेता" होता है उसे डुबी मेले की तरफ से ईनाम मिलता है। सहराण में एक और देवता भी निवास करते हैं उनका नाम श्जेरश है जो बहुत शक्तिशाली हैं।

त्योहार की तैयारी

लोग त्योहार की तैयारी तीन–चार दिन पहले ही शुरू कर देते हैं। लोग अपने घर के कोने–कोने की सफाई करते हैं और अपने आस–पास के वातावरण को साफ करते हैं और घर को सजाते हैं। लोग नए कपड़े पहन कर मेला घूमने जाते हैं और वहां लगी दुकानों से विभिन्न प्रकार की वस्तुएं खरीद कर लाते हैं।

समारोह का दिन

इस त्योहार को लोग बहुत ही धूमधान से मनाते हैं। लोग इसको लेकर बड़े खुश होते हैं। इस त्योहार को देहुरी के सहराण गांव में मनाया जाता है। लोग एक–दूसरे के साथ अच्छे से रहते हैं।

समाज पर प्रभाव

इस त्योहार का समाज पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। यह हर साल होता है ओर लोग दूर–दूर से आते हैं। यह सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से अच्छा है।

निष्कर्ष :–

यह त्योहार बहुत अदभुत है जिसमें देवता श्री पुंडीर ऋषि जी सहराण गांव में अपना शाही स्नान करने आते हैं। यह त्योहार 7 प्रविष्टे तथा 23 सितम्बर को मनाया जाता है। देवता जी को तैयार करते है। पहले गुर सहर में स्नान करते हैं और बाद में देवता भी सहर का भ्रमण कर के खुद उसमें स्नान करते हैं। स्नान करने के बाद देवता को मैदान में लाया जाता है और वहां देवता जेर के साथ मिलन करते हैं और नाचते हैं। अंततः देवता कथऊगी को आते हैं और मेला खत्म हो जाता है।

बनीता कुमारी
बी.ए. प्रथम वर्ष

देव संस्कृति

<u>देव संस्कृति की उत्पति तथा गाथा :–</u>

देव संस्कृति की उत्पति प्राचीन वैदिक सभ्यता से जुड़ी है जो भारत की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह संस्कृति वैदिक धर्म, अनुष्ठानों, योग, ध्यान और अध्यात्मिक पर आधारित है।

1.) वैदिक युग और ऋषि पंरपरा :–

देव संस्कृति की शुरूआत वैदिक युग में हुई मानी जाती है, ऋषि–मुनियों ने वेदों की रचना की। इन वेदों में अध्यात्मिक ज्ञान, दर्शन, विज्ञान और धार्मिक अनुष्ठानों की जानकारी दी गई है। वेदों के मंत्रों का उच्चारण देवताओं की स्तुति में किया जाता था और ये मंत्र प्रकृति और ब्रह्मांड के विभिन्न तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

2.) धर्म और अध्यात्मिकः–

देव संस्कृति में धर्म का महत्व सर्वोपरि है, जिसे जीवन जीने की शैली के रूप में देखा जाता है। इसे सत्य, धर्म, कर्म और मोक्ष के चार पुरूषार्थी के रूप में संरचित किया गया है। यह संस्कृति व्यक्ति को आत्मा की शुद्धता, अध्यात्मिक उन्नति के साथ सामंजस्य में जीवन व्यतीत करने पर जोर देती है।

3.) योग और ध्यान :-

योग और ध्यान देव संस्कृति के मूल स्तंभ हैं, जिनके माध्यम से व्यक्ति आत्म साक्षात्कार और मोक्ष प्राप्त कर सकता है। प्राचीन ऋषियों ने योग और ध्यान के विभिन्न प्रकार विकसित किए, जिनमें शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक स्वास्थ्य पर ध्यान दिया गया।

4.) आस्था और अनुश्ठान :-

देव संस्कृति में आस्था और अनुष्ठानों का भी विशेष महत्व है। विभिन्न देवताओं और प्रकृति के तत्वों की पूजा की जाती है, और धार्मिक अनुष्ठान के माध्यम से व्यक्ति देवताओं से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। यह संस्कृति यज्ञ, हवन और मंत्रोच्चारण जैसे अनुष्ठान के माध्यम से प्रकृति के साथ संतुलन बनाने पर बल देती है।

5.) समाज और नैतिकताः-

देव संस्कृति का प्रभाव समाज की संरचना और नैतिकता पर भी पड़ा। इस संस्कृति ने समाज में नैतिक मूल्यों, सत्य,अहिंसा, दया और करूणा की प्रतिष्ठा की। इसका उद्देश्य एक ऐसा समाज बनाना था, जहां सारे प्राणी सुखी और शांतिपूर्ण जीवन जी सके। देव संस्कृति की यह गाथा भारतीय सभ्यता के मूल में गहराई से जड़ें जमाए हुए है और आज भी आध्यात्मिक मार्गदर्शन का स्रोत है। इसे स्थानीय भाषा में 'संघेड़' कहा जाता है। इस दिन ब्राम्हणों द्वारा एक विशेष प्रकार का मंडप बनाया जाता है। इस मंडप में विधीवत पूजा के बाद अंत में देवताओं की पालकियां, जिनकी संख्या 1, 2 अथवा 4 तक भी हो सकती है, आकर नृत्य करती हैं और साथ ही साथ आए श्रद्धालु भी मंडप पर आकर नृत्य शुरू कर देते हैं। हिमाचल में जो भी मेले उत्सव आयोजित होते हैं उनका सीधा संबंध हिमाचल के देवताओं से होता है।

देव संस्कृति का महत्वः-

देव संस्कृति का महत्व अत्यधिक गहरा और व्यापक है, क्योंकि यह मानव जीवन के हर पहलू को श्रेष्ठ बनाने और उसे अध्यात्मिक उन्नति की दिशा में ले जाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती है। इसके कुछ महत्व इस प्रकार हैः

1. अध्यात्मिक उन्नति : देव संस्कृति का मुख्य उद्देश्य आत्मा की उन्नति और ईश्वर के प्रति आंतरिक शांति और संतोष की प्राप्ति की दिशा में प्रेरित करना है।
2. नैतिक मूल्यों का विकास : देव संस्कृति जीवन में नैतिकता, सत्य, अहिंसा, करूणा ओर परोपकार जैसे मूल्यों को बढ़ावा देती है। ये मूल्य न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि समाज में भी शांति और सद्भाव बनाए रखने में सहायक होते हैं।

3. व्यक्तित्व का विकासः देव संस्कृति मनुष्य के भीतर दैवीय गुणों का विकास करती है, जैसे धैर्य, संयम, **परोपकार और ईमानदारी। इससे व्यक्तित्व अधिक संतुलित और मजबूत बनता है।**

4. समाज में सांमजस्यः– "वसुदेव कुटुंबकम" की भावना समाज में भाईचारे, एकता और सहयोग को प्रोत्साहित करती है जिससे सामाजिक संघर्ष कम होते हैं और शांति स्थापित होती है।

5. प्रकृति पर्यावरण के प्रति आदर :– देव संस्कृति में प्रकृति को देवतुल्य माना जाता है, और इसका संरक्षण और सम्मान करने पर बल दिया जाता है। यह पर्यावरण संतुलन बनाए रखने और प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग करने में सहायक है।

6. स्वास्थ्य और जीवनशैलीः– योग, ध्यान, और शुद्ध आहार को प्रोत्साहित करने वाली देव संस्कृति व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारने में मदद करती है। यह शरीर और मन के बीच सांमजस्य स्थापित करती है। जिससे दीर्घकालीन स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होते हैं।

7. धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर संरक्षणः देव संस्कृति के माध्यम से व्यक्ति अपने धर्म, परंपराएं और सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित करता है। यह अगली पीढ़ी को इन आदर्शो और संस्कारों से जोड़ने में सहायक होती है। इस प्रकार, देव संस्कृति का महत्व समाज और नैतिक उन्नति में है, साथ ही साथ यह एक सुसंस्कृति, सद्भावनापूर्ण और संतुलित जीवन जीने की कला को भी सिखाती है।

रीतिका
बी.ए. द्वितीय वर्ष

खोडू जहल देवता की गाथा

उत्पत्ति की गाथा :– 'खोडू जहल' (शेषनाग) नामक देवता हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में है। इनका निवास स्थान सैंज के 'शौहल नामक गांव में स्थित है। इनकी उत्पत्ति की कई सारी कहानियां हैं जो कि पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाई गई है। खोडू जहल को 'शेषनाग' का रूप माना जाता है। वास्तव में खोडू तथा जहल दो अलग–अलग देवता हैं। कहा जाता है कि इनकी उत्पत्ति भिन्न–भिन्न प्रकार से हुई है। खोडू तथा जहल को भाई–भाई माना जाता है। जब इन दोनों को शौहल नामक गांव में लाया गया तो इन दोनों को आपस में मिला दिया गया। तब से इन्हें खोडू जहल के नाम से जाना जाता है।
मान्यता है कि ये पूर्व में इस गांव में निवास नहीं करते थे। इन्हें यहां पर लाया गया है। पुराने बुजुर्गों द्वारा इस पर कई सारी कहानियां सुनाई गई हैं और इस अमुल्य जानकारी को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया गया है। खोडू तथा जहल की उत्पत्ति का विवरण इस प्रकार से है:–

खोडू देवता की उत्पत्ति :– खोडू देवता मणिकर्ण के शाट नामक गांव में निवास करते थे। कहा जाता है कि ये उस समय की बात है जब गांव के लोग समूहों में नमक लेने जाते थे। इसमें लगभग 4 से 5 दिन लग जाते थे। उस समय नमक की खान होती थी जहां पर नमक के बड़े–बड़े पत्थर होते थे। लोग इन पत्थरों को पीठ में ढो कर कई किलोमीटर चल कर जाते थे। जब वह नमक लेकर वापिस आ रहे थे तो वह थक गए और एक जगह आराम करने बैठ गए। वह थोड़ी देर तक उसी स्थान पर सो गए। जब उनकी आंख खुली तो उनकी पीठ पर जो नमक के पत्थर थे उन पर एक सांप आ बैठा। सभी लोग डर गए। तभी उनके बीच एक बुजुर्ग भी मौजुद थे। वे इन सब चीज़ों का काफी तजुर्बा रखते थे। वह भीड़ से अलग होकर सामने आए और उस सांप से कहा कि तुम कौन हो? क्या तुम कोई राक्षस हो? तब उस सांप ने कहा कि मेरा निवास स्थान शाट गांव में है। तब सभी को पता चला कि उनकी वहां पर बहुत मान्यता है। वहां के लोग इनकी पूजा करते हैं। तब वे उन्हें साथ लेकर 'भलाण' गांव से होते हुए 'तरेहड़ा' नामक स्थान पर पहुंचे जहां से 3 किलोमीटर की दूरी पर शौहल गांव है। वहां पर पूजा–पाठ करके उन्हें स्थापित किया गया। तब से सभी गांव के लोग स्वयं को खोडू देवता के अधीन मानते हैं। गांव के लोगों द्वारा इनका रथ तैयार किया गया है। जोकि 'झलौट' नामक गांव में एक बहुत पुराने लकड़ी के घर में रखा गया है। ये घर 3 मंजिल का है इसकी दूसरी मंजिल के बीच के कमरे में वह रथ रखा गया है और उनकी पूजा भी वहीं पर की जाती है।

जहल देवता की उत्पत्ति :– कहा जाता है कि जहल देवता 'बंजार के भला गांव में निवास करते थे।' इन्हें वहां से लाकर सैंज के 'शौहल' नामक गांव में स्थापित किया गया। इनकी स्थापना के पीछे एक व्यक्ति की कहानी सुनाई जाती है। कहा जाता है कि पुराने समय में एक व्यक्ति था, जिसने एक स्त्री से विवाह किया जोकि कुल्लू ज़िले के 'फडहरनी' नामक गांव की रहने वाली थी। ये दोनों दम्पति शौहल नामक गांव में रहते थे। विवाह के कुछ समय पश्चात् ही उनकी पत्नी की मृत्यू हो गई और उनकी कोई संतान भी नहीं थी। वह अब अकेला बच गया था, जिस कारण वह विरह में चला गया। एक व्यक्ति ने उससे कहा कि तुम मेरे साथ भला गांव चलो वहां पर मेरी 4 भांजियां हैं, तुम उनमें से किसी एक से विवाह कर लेना। तब वह उस व्यक्ति के साथ बंजार के भला गांव में कुछ दिनों के लिए रहने जाता है। एक दिन बैठे–बैठे उसकी आंख लग जाती है। तीनों बहनें आती हैं और उसका पैर लांघकर आगे बढ़ जाती हैं। कुछ समय बाद सबसे छोटी लड़की आती है वह उनका पैर हटा कर आगे बढ़ जाती है। तब वह अगली सुबह कहते हैं कि वह सबसे छोटी वाली लड़की से विवाह करना चाहता है। वचन के अनुसार उनका विवाह करवाया जाता है। विवाह के पश्चात् जब उनकी संताने हो जाती हैं तो वह स्त्री अपने गांव जाती है और अपने साथ वहां से 'त्रिशुल'साथ लेकर आती है। तब से उस त्रिशुल के साथ एक मुख बनवाया गया है। कहा जाता है कि ये मुख 'अष्टधातु' द्वारा बनाया गया है। अष्टधातु अर्थात 8 अलग–अलग धातु।

आकार और विवरण :– सामाजिक संबंधों के जाल को समाज कहा जाता है और यही समाज आपस में मिलकर सामाजिक रूप से एक प्रतिमा का निर्माण करते हैं। इस प्रतिमा को वह अपने ईष्ट का रूप मानते हैं। अलग–अलग समाजों में इस प्रतिमा का स्वरूप भिन्न–भिन्न प्रकार से होता है, इससे लोगों के विश्वास जुड़े होते हैं। हिमाचल प्रदेश की देव संस्कृति भी कुछ इसी प्रकार से है। वह भी

एक प्रतिमा का निर्माण करते हैं, जिसे 'देवता' कहा जाता है। देवता का एक 'रथ' तैयार किया जाता है। सभी लोग रथ को बहुत ही पवित्र मानते हैं। 'खोडू जहल' देवता जोकि सैंज घाटी के झलौट नामक गांव में निवास करते हैं। वर्तमान समय में इनके मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा है। लगभग आने वाले 1–2 सालों में बनकर तैयार हो जाएगा।

खोडू जहल देवता इनका आकार चौरस है, जिसमें की चार हिस्से हैं। प्रत्येक मणिकर्ण के तरफ 2–2 मुख लगाए गए हैं। कुल मिलाकर रथ में 8 मुखों का निर्माण किया गया है। इन मुखों का निर्माण 'अष्टधातु' द्वारा किया गया है। अष्टधातु अर्थात् इसे आठ अलग–अलग धातुओं को मिलाकर बनवाया गया है। इसे बनाने में सोना, चांदी, लोहा, पीतल, ताम्बा, कांसा, स्टील, नागत्रम्बा धातुओं का प्रयोग किया गया है। इसमें नागत्रम्बा नामक धातु की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता बताई जाती है। मान्यता है कि नागत्रम्बा धातु में एक विशेष प्रकार की शक्ति होती है। जब देवता को कंधे में उठाया जाता है तो कहते हैं कि देवता स्वयं हिलता है और हवा में उछलता है। इसके पीछे का कारण नागत्रम्बा धातु को ही माना जाता है। देवता का छत्तर चांदी का बनाया गया है। देवता को सुन्दर–सुन्दर पुष्प की मालाएं पहनाई गई हैं। इन्हें बनाने में डोल की कलियों का प्रयोग किया जाता है। गांव की महिलाएं इन मालाओं को अपने हाथों से बनाती हैं। महिलाएं समूहों में बैठती हैं और देवता के लिए समूह गान का आयोजन करते हुए इन पुष्प की मालाओं को तैयार करती हैं। हर हफ्ते देवता की मालाओं को बदला जाता है और एक नई माला देवता को पहनाई जाती है। इन पुष्प की मालाओं से देवता का सौन्दर्य और भी मनमोहक लगता है। देवता के मुख्य मुख पर एक सुन्दर ताज का निर्माण किया गया है। इस मुख की आकृति काफी मनमोहक है।

इंदु चाँदनी
बी.ए. द्वितीय वर्ष

देवता श्री ब्रम्ह्या जी

जनश्रुति :- स्वर्ग से राजस्थान के पुष्कर तीर्थ में अवतरित होकर देवता कांगड़ा, मंडी, शांघड़ होते हुए कनौन गांव में प्रकट हुए और यहां चार वंशों तदुआल, गुलरे, बझारू और चनाल की स्थापना कर उन्हें देव मंदिर बनाने का आदेश दिया। स्वयं उन्हें धन–पुत्र आदि का वरदान देकर उनकी रक्षा का वचन दिया। आज भी तदुआल वंश से कारदार, गुलरे से भंडारी, बझारू से गूर और चनाल खानदान से देवता का छठाली नियुक्त होता है।

प्रस्तावना :- देवता श्री ब्रह्म जी सैंज घाटी के सबसे प्रमुख देवता है। देवता ब्रह्म जी सैंजघाटी के कनौन गांव में वास करते हैं।
उनका मूल स्थान, मंदिर एवं भंडार कनौन में है। इनका मंदिर काष्ठ–प्रस्तर से पहाड़ी शैली में बना मंदिर है, जिसमें गारे से लिपाई की गई है। छत पर स्लेटों का आच्छादन है, द्वार पर गणेश, जानवरों की आकृतियां और बेल–बूटे उकेरे गए हैं। बह्मा जी के अलग–अलग स्थानों पर भी मंदिर हैं, जो कछैणी, डूघा, रूआड़ तथा तांदी में बनाए गए हैं। ब्रह्मा जी का अधिकार क्षेत्र कछैणी गांव से लेकर रूआड़ तक का पंद्रह–बीहा क्षेत्र तथा भलाण गांव तक था।

प्रबंध, न्याय प्रणाली तथा पूजा :- ब्रह्मा जी का प्रबंध कारदार की अध्यक्षता में परम्परानुसार गठित समिति द्वारा किया जाता है। ब्रह्मा जी की पूजा प्रातःकाल और सायं आरती में कमलनत्रे का पाठ किया जाता है। ब्रह्मा जी का धामी ब्रह्मा जी की पूजा करता है।

रथ तथा मोहरे :- ब्रह्मा जी का रथ चिंऊ वृक्ष की लकड़ी से बना है। अगले वाला खड़ा रथ के शीर्ष पर पहले 'बांवल' फिर टोप और सबसे ऊपर छत्र लगाया जाता है और रथ को चारों ओर से रेशमी वस्त्रों से सजाया जाता है। ब्रह्मा जी के मोहरे नौ हैं। मुख्य मोहरा अष्टधातु का है तथा अन्य आठ मोहरे स्वर्ण निर्मित हैं। ब्रह्मा जी के अपने ब्रह्म कुण्ड में अनेक प्रकार के मोहरे हैं।

मेले–त्योहार :- ब्रह्मा देवता और देवी ब्रह्मलक्ष्मी (कछैणी) को भाई–बहन माना जाता है। अतः इनके मेले–त्योहार सांझे ही होते हैं। पहले इनके मोहरे एक ही रथ पर सुसज्जित होते थे लेकिन अब दोनों के रथ अलग–अलग बने हैं तथा मेले में साथ–साथ चलते हैं। ये इकट्ठे ही सारी देव कार्यवाही और देवप्रथा निभाते हैं। बैसाख संक्रांति को ब्रह्मा देवता तथा देवी ब्रह्मलक्ष्मी के रथों को रस्सों से खींचते हुए हारियान ऊंचाई पर स्थित पुखरी नामक स्थान पर ले जाते हैं तथा देव कार्यवाही के उपरोक्त रथों को रस्सों से ही खींचते हुए वापिस लाया जाता है। आषाढ़ मास में दुष्टात्माओं को भगाने के लिए 'हूम' का आयोजन किया जाता है।

संक्रांति के दिन देवता की स्वीकृति से इसके लिए दिन निश्चित कर शुभमुहूर्त में देववाणी से देवदार का वृक्ष काट कर कुल्हाड़े से उसकी बारीक–बारीक छड़ियां बनाकर सूखने के लिए रख दी जाती हैं। हूम से पहले दिन इन छड़ियों को इस प्रकार बांधा जाता है कि यह एक विशाल मशाल बन जाती है, तब इसे 'दी' कहते हैं। हूम वाले दिन इसे देहुरी मंदिर से लाते हैं। रात्रि लगभग दस बजे देवी–देवता कनौन से देहुरी मंदिर आते हैं और जैसे ही उनकी आरती उतारी जाती है, वैसे ही देहुरी से पूर्व की ओर स्थित नाही नामक गांव की जोणी व शेषफूल सहित वहां के प्रत्येक परिवार के एक–एक व्यक्ति हाथ में मशाल लेकर जंगल के रास्ते ज़ोर–ज़ोर से अश्लील गालियां देते हुए देहुरी मंदिर की ओर आते हैं।

शिवानी चौहान
बी.ए. तृतीय वर्ष

देवता श्री लक्ष्मी नारायण जी की कथा और कुल्लू दशहरा

देवता श्री लक्ष्मी नारायण जी सैंज घाटी के प्रमुख देवताओं में से एक हैं। देवता जी कोठी बूंगा फाटी के धाऊगी गांव में वास करते हैं। श्री लक्ष्मी नारायण जी 18 करडू के पंचीदार देवता हैं जो सभी देवताओं की पंची अर्थात् न्याय करते हैं। देवता जी को "जड़ा नारायण" भी कहा जाता है जिसका अर्थ है कि वह सभी नारायण देवताओं की जड़ है। श्री लक्ष्मी नारायण जी का मूल स्थान धाऊगी गांव में स्थित कल्युण देहुरा में है। नारायण जी ने अपनी कला को तीन भागों में बांटा है, जिसमें मंझली कला (बीच वाली कला कश) अर्थात् सजा देने का हक 'चेड़ा' में दिया गया। वहां पर देवता श्री लक्ष्मी नारायण जी 'थनी चेड़ा' के रूप में विख्यात हुए। कन्हीं अर्थात परखोल' सराज में स्थापित हुई जहां पर वह 'लक्ष्मी नारायण जी परखोल' के नाम से विख्यात हुए और ज्येष्ठ कला पंची अर्थात् सबसे बड़ी कला अपने पास रखी जो सभी देवी–देवताओं का न्याय करता है। देवता श्री लक्ष्मी नारायण जी के अधीन धाऊगी गांव से लेकर कलोगी गांव तक का क्षेत्र आता है।

उत्पति का वर्णन– हस्तिनापुर में द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण पांडवो को राज–पाठ सौंप कर द्वारिका आए जहां उन्होंने 36 साल राज किया। उसके बाद वे भालका तीर्थ से होकर बैकुंठ की ओर चलने लगे। वे दिल्ली, उत्तराखंड कांगड़ा–किन्नौर से होते हुए कुल्लू आए। वहां पर 18 करडू इक्ट्ठे हुए और उन्होंने वहां 4 फुट बड़ा शक्ति पीठ मधुमक्खी के रूप में बनाकर उसे नग्गर तक पहुंचाया और वहां पर उसे स्थापित कर दिया। उसके बाद वहां से प्रस्थान करते हुए वे दियार पहुंचे। माना यह भी जाता है कि जब वे कुल्लू से आए तो वे अपनी कला को बांटते हुए आए थे। दियार से होते हुए भलाण, रैला, शैंशर, शाक्टी मरौड़, लपाह, बनोगी से होते हुए देव गढ़ पहुंचे। जब उन्होंने वहां से धाऊगी देखा तो धाऊगी के सुंदर वातावरण और वहां के मनमोहक दृश्य को देखकर उन्हें वह स्थान पसंद आया और उन्होंने धाऊगी में रहना पसंद किया। धाऊगी के कलिऊन देहुरा नामक स्थान पर उन्होंने अपना स्थान बनाया है। जहां पर अभी भी उनकी आदिकाल से स्थित नारायण जी की विष्णु रूप में एक मूर्ति एवं पिंडी स्थापित है। उनके देहुरा में पहुंचने का पता कुछ पौराणिक कथाओं में मिलता है कहा जाता है कि उस समय मिथिला से एक ब्राह्मण धाऊगी आए और वे भगवान में विश्वास नहीं करते थे। एक दिन धाऊगी में थमोड़ नामक स्थान पर एक आकाशवाणी हुई थी जिसमें कहा गया कि वो सृष्टि के पालनहार श्री लक्ष्मी नारायण जी हैं परंतु साधु को आकाशवाणी पर विश्वास नहीं हुआ। तभी प्रभु ने उसे कहा कि यहां से पूर्वोत्तर की ओर बढ़ते हुए कुछ दूरी पर एक जगह पर गीली मिट्टी मिलेगी वहां पर खुदाई करो। उस स्थान पर तुम्हें जल मिलेगा और उसके नीचे तुम्हें मेरी पिण्डी मिलेगी। जब ब्राह्मण ने वैसा ही किया तो उन्हें सचमुच में वहां जल मिला और वहां पर श्री हरि नारायण की पिण्डी भी मिली। तब ब्राह्मण को उन पर विश्वास हुआ और तभी से वहां उन्होंने नारायण की पूजा करनी शुरू कर दी थी। उसके पश्चात् वे वहां काफी समय तक रहे और वहां पर नारायण की भक्ति करने लगे।

आकार और विवरण – देवता श्री लक्ष्मी नारायण जी के 8 मोहरे अर्थात मुख स्वर्ण से सुशोभित हैं। देवता श्री लक्ष्मी नारायण जी का रथ 'अंगू' तथा 'चिंऊ' नामक वृक्ष से बनाया जाता है। देवता श्री लक्ष्मी नारायण जी के सिर पर याक के पूंछ के बाल लगाए जाते हैं, जिसे हम 'बंम्बल' कहते हैं और बालों के ऊपर सुंदर वस्त्रों का टोप लगाया जाता है। देवता जी के शीश अर्थात सिर के ऊपर सोने तथा चांदी का छत्तर लगाया जाता है।

पूजा विधि – देवता श्री लक्ष्मी नारायण जी की पूजा दो प्रकार से की जाती है, जिसमें एक प्रतिदिन की जाने वाली पूजा तथा दूसरी किसी विशेष अवसर या त्योहार पर की जाने वाली पूजा है। प्रतिदिन की जाने वाली पूजा पंचो उपचार विधि द्वारा की जाती है। इस विधि में गंध लगाना, फूल चढ़ाना, धूप–आरती और नैवेध अर्पित करते हैं। सर्वप्रथम इस विधि में पांच देवताओं का पूजन किया जाता है, जिसमें श्री गणेश जी, शंकर भगवान जी, दूर्गा माता जी विष्णु भगवान जी एवं सूर्य देव जी सम्मिलित होते हैं। दूसरी विधि षोड़शोपचार द्वारा की जाती है। 'षोड़शोपचार' अर्थात 16 तरह के उपचार या तरीको के द्वारा की जाने वाली विधि, जिसमें देवी–देवता को सोलह वस्तुएं अर्पित की जाती हैं। हर एक वस्तु अर्पित करते समय पवित्र मंत्रों को बोला जाता है। इस तरह से पूजा करना फलदायी माना जाता है।
त्योहार – धाऊगी में देवता जी श्री लक्ष्मी नारायण जी के हर वर्ष अनेक त्योहार मनाए जाते हैं, जिसमें हूम, शौयरी, फाग, फागली सभी त्यौहारों में प्रमुख माने जाते हैं।

फाग – देवता श्री लक्ष्मी नारायण जी के त्योहारों में फाग एक महत्त्वपूर्ण त्योहार है, जो होली के दिन मनाया जाता है। इस दिन देवता जी श्री लक्ष्मी नारायण जी होली खेलते हैं। इसमें सर्वप्रथम देवता श्री जमलु जी सैंज में होते हैं तथा देवता श्री लक्ष्मी नारायण जी धाऊगी में होते हैं। कुछ लोग उस दिन देवता जमलु जी को लेने के लिए सैंज आते हैं तथा देवता जमलु जी को सैंज से होली खेलते–खेलते धाऊगी को लाते हैं। धाऊगी में देवता श्री लक्ष्मी नारायण जी देवता जमलु जी से मिलते हैं तथा उसके पश्चात् वे सभी हरियानों के साथ होली खेलते हैं। वहां पर हनुमान जी का रूप लेकर एक व्यक्ति आता है तथा दो लड़कियां उस समय मंदिर के पास भजन गाते हुए नाचती हैं। धाऊगी में रघुनाथ जी का मंदिर भी स्थित है। जिस समय होलिका दहन किया जाता है, उस समय रघुनाथ जी का रथ निकलता है जो होलिका दहन की परिक्रमा करते हैं। उसके पश्चात् वे वहां से चले जाते हैं। देवता रघुनाथ जी के चले जाने के बाद देवता के गूर उस आग में चढ़ कर निकलते हैं तथा होलिका के जलते हुए पुतले को अपने ओर खींचने लगते हैं। इसे दो भागों में खींचा जाता है। उन सभी की आपस में प्रतियोगिता होती हैं कि उनमें से कौन जितेगा। इस प्रकार पूरा मेला खत्म होता है।

दशहरे पर्व के लिए निमंत्रण :– कुल्लू के दशहरे मेले में सम्मिलित होने के लिए कुल्लू जिले के विभिन्न मंदिरों में विराजमान देवियों और देवताओं को तहसीलदार तथा उप–जिलाधिकारी के माध्यम से आदरपूर्वक निमंत्रण भेजा जाता है। दशहरे में सम्मिलित होने की पुष्टि देवता कमेटी द्वारा बिठाई गई बैठक द्वारा किया जाता है। इसके बाद देवता जी को दशहरा उत्सव मनाने के लिए ले जाया जाता है।

दशहरा प्रस्थान :– देवता श्री लक्ष्मीनारायण जी कुल्लू दशहरे में सम्मिलित होने के लिए धाऊगी से मेले के दो दिन पूर्व ही पैदल यात्रा पर प्रस्थान करते हैं, क्योंकि उन्हें कुल्लू पहुँचने में दो दिन का समय लगता है। कुल्लू पहुँचने के बाद उन्हें पूर्व–निर्धारित शिविर में ठहराया जाता है।

ठहराव :– देवता श्री लक्ष्मी नारायण जी अपने हारियानों के साथ मौहल में पहुंचते हैं तथा वहां पर ठहरते हैं। उसके बाद वे वहां से कुल्लू दशहरा के लिए प्रस्थान करते हैं तथा कुल्लू में पहुंचते ही सर्वप्रथम वे राजा के बेड़े के पास जाते हैं। देवता लक्ष्मी नारायण जी का अपना स्थान कला केंद्र के पास है, जहां वे 7 दिनों तक वास करते हैं और उन सात दिनों तक वहां पर लोग दूर–दूर से देवता के दर्शन तथा उनका आशीर्वाद लेने आते हैं।

समापन :– कुल्लू दशहरे की समाप्ति सात दिनों बाद होती है। उन सात दिनों में कुल्लू में अनेक प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियां की जाती हैं, जिसमें कई देवी–देवता भाग लेते हैं। सातवें दिन लंका दहन किया जाता है, जिसके पश्चात् सभी देवी–देवता अपने घरों की ओर प्रस्थान करते हैं। घर आ कर उनका शुद्धीकरण किया जाता है।

गीता देवी व शिवानी चौहान,
बी.ए. प्रथम वर्ष व तृतीय वर्ष

सरेऊलसर

हिमाचल प्रदेश को देवों की भूमि कहा जाता है। यहां पर हर नदी, पहाड़, झील किसी न किसी देवता या देवी से जुड़ी है। जिस प्रकार सिक्खों के लिए अमृतसर एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है, उसी प्रकार से हिमाचल वासियों के लिए ये झीलें महत्व रखती हैं। हिमाचल की हर नदी, किसी न किसी देवता को समर्पित है। कुल्लू जिले में बहुत सी झीलें हैं। सरेऊलसर इन प्रसिद्ध झीलों में से एक है। यह झील माता बूढ़ी नागिन के लिए समर्पित है। सरेऊलसर के किनारे पर माता का छोटा व सुन्दर मंदिर है।

सरेऊलसर का इतिहास ÷
सरेऊलसर नामक स्थान पर 60 जोगणीयां एक साथ इकट्ठा हुई थी। उसी समय माता काली बूढ़े भेश में पीठ पर घड़ा लेकर आती है और उन जोगणियों के साथ खेल खेलती हैं। माता उन सभी जोगणियों से वचन लेती है कि जो इस खेल में हारता जाएगा वह अपना स्थान छोड़ती जाएगी। वह 60 जोगणियां माता से हारती गई और सरेऊलसर से दूसरे स्थान पर चली गई। जिससे यह सरेऊलसर नामक स्थान माता का हो गया। जो घड़ा माता रानी अपने साथ लेकर आई थी, वह झील में परिवर्तित हो गया। पाण्डव भी अज्ञातवास के समय इस स्थान पर आए थे और माता के मंदिर का निर्माण करवाया था। वे झील के किनारे पर धान उगाया करते थे। माता के मंदिर का निर्माण तीन बार करवाया गया। सरेऊलसर कुल्लू जिले के बन्जार व आनी को जोड़ता है जो जलोढ़ी जोत से पांच कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह झील ऊँची चोटी पर स्थित है। पेड़ों से घिरे होने पर भी इस झील में किसी भी प्रकार का तिनका तक नहीं है। माना जाता है कि अगर झील में किसी भी प्रकार का पत्ता या तिनका गिरता है तो उसे चिड़ियां उसी समय उठा लेती है। माता रानी ने झील की सफाई का जिम्मा एक छोटे से पंछी को सौंपा है जो अपना कार्य बखुबी निभा रही है।

झील की मान्यताएं व महत्व ÷ यह झील बूढ़ी नागिन से जुड़ी झील है। माता बूढ़ी नागिन को नाग देवता की माता माना जाता है। माता बूढ़ी नागिन इस झील में वर्ष में एक बार शाही स्नान या शुद्धिकरण के लिए जाती है। माता के सभी पुत्र भी इस झील/सौर में अपने शुद्धिकरण के लिए जाते हैं। इस झील की परिक्रमा करने से जब मनोकामनाएं पूरी होती हैं तो वह माता को घी की भेंट चढ़ाता है। उसी घी की धारा से झील की परिक्रमा करते हैं। इस झील में जाने की अनुमति किसी को नहीं है। यह झील आज पर्यटन के लिए विख्यात है।

कमला कुमारी
बी.ए. तृतीय वर्ष

हनुमान स्वरूप देवता आहिडु महावीर

देव संस्कृति :- हिमाचल प्रदेश की पहचान देव सस्कृति से है। हिमाचल में जो भी मेले–उत्सव आयोजित होते हैं, उनका सीधा सबंध हिमाचल के देवताओं से है।
देवता आहिडु महावीर हनुमान जी के स्वरूप हैं। देवता आहिडु महावीर जी सैंज घाटी के कन्नौन गांव के प्रसिद्ध देवता हैं। इनकी उत्पत्ति की गाथा कुछ इस प्रकार से है। देवता आहिडु महावीर जी देवी महामाई (भद्रकाली या मां काली) के चौकीदार थे। देवी महामाई कन्नौन की प्रसिद्ध देवी हैं। देवता महावीर आहिडु स्नोर वैली (ज्वालापुर) से देवी के साथ आए थे तथा दलाशनी (पनारसा) में देवी के साथ प्रस्थान किया। उसके बाद वह तरेढ़ा पहुंचे जहां पर उनका स्थान है। फिर वह सैंज खराटला पहुंचे जो कि एक छोटा सा गांव है। वहां पर देवी का एक छोटा सा मंदिर बनाया था तथा देवता आहिडु महावीर की मूर्ति भी स्थापित है। उसके बाद वह देवी के साथ भ्रमण करके शलवाड़ पहुंचे। वहां पर भी एक छोटा सा मंदिर बनाया गया है। फिर देवता आहिडु जी देवी के साथ सैंज शौहल आए तथा वहां पर देवता आहिडु महावीर जी तथा देवी महामाई ने जुआ खेला जिसमें देवता आहिडु जी की जीत हुई तथा देवी की हार। उसके पश्चात् देवी ने उन्हें वरदान दिया कि यहां पर तुम्हारे नाम से करथा मनाया जाएगा, जिसमें दाईं तरफ तुम होंगे तथा बांई तरफ मैं होंगी। जिस कारण हर साल वहां माघ (जनवरी) के महीने में करथा तथा फागली मनाई जाती है। उसके बाद वह अकेले ही बागावाई पहुंचे जहां इनका स्थान माना जाता है। तत्पश्चात यह कन्नौन पहुंचे जहां पर इन्होंने एक घर में निवास किया। उसके बाद यह अकेले ही कछैनी सैंज (कन्नौन) और उसके बाद देऊरी नामक एक गांव में पहुंचे जहां पर इनका भव्य मंदिर है। उसके बाद यह न्याही सैंज (कन्नौन) पहुंचे। तत्पश्चात् वह राईसारी (धाऊगी) पहुंचे, वहां पर भी उनका स्थान माना जाता है। उसके बाद वह पलदी पहुंचे। यहीं पर वह समाप्त हो गए तथा उनके यहां पर महा करथा मनाया जाता है।

आकार :- देवता आहिडु महावीर जी का रथ चांदी का बनाया गया है। इसमें चारों ओर दो–दो मुख लगाए हैं, जो कि सोने के हैं। देवता आहिडु महावीर की घंटी शंगल की बनी हुई है, जिसे रथ में स्थापित किया गया है। यह घंटी रथ की शोभा बढ़ाती है और इसी कारण उसमें दिव्य शक्ति का संचार माना जाता है। आहिडु महावीर का आकार चौरस है। कुल मिलाकर रथ में 8 मुखों का निर्माण किया गया है।

त्योहारः- देवता आहिडु महावीर जी का प्रसिद्ध त्योहार करथा है, जिसमें पलदी का करथा प्रसिद्ध त्योहार है। लकड़ी काटकर उसे जलाया जाता है। लोग बहुत झूमते हैं तथा 'दी' भी जलाई जाती है। यह हमारा प्रमुख त्यौहार होता है।

पूजा विधिः- देवता की पूजा में कुछ सामग्री का प्रयोग किया जाता है। देवता की पूजा सुबह की जाती है। पूजा की थाली को सजाया जाता है। थाली में धूप जलाया जाता है, फूल रखे जाते हैं तथा चावल टिका भी होता है इसके बिना पूजा अधूरी मानी जाती है।

स्नेहा भारती
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कुल्लू दशहराः इतिहास, परम्परा एवं मूल्य

कुल्लू दशहराः– यह प्रदेश के कुल्लू ज़िले में मनाया जाता है। इसे दशहरा या विजयदशमी के नाम से भी जाना जाता है लेकिन कुल्लू दशहरा अन्य स्थानों पर मनाए जाने वाले दशहरे से काफी अलग और अनूठा होता है

राम कथा पर आधारित :– कुल्लू दशहरे की शुरूआत रघुनाथ जी (भगवान राम) की पूजा से होती है। यहां यह मान्यता है कि भगवान रघुनाथ जी ने रावण पर विजय प्राप्त की थी और इसी खुशी में यह पर्व मनाया जाता है।

सात दिनों का उत्सव :– यह उत्सव दशहरे के दिन से शुरू होकर सात दिनों तक चलता है। इस दौरान कुल्लू घाटी के विभिन्न गाँवों से देवी–देवताओं की शोभा यात्राएं निकाली जाती हैं।

राजसी परंपराः– इस त्यौहार का संबंध कुल्लू के राजघराने से भी है। 17वीं शताब्दी में राजा जगत सिंह ने भगवान रघुनाथ जी को कुल्लू का प्रमुख देवता माना था।

संस्कृति और एकता का प्रतीकः– कुल्लू दशहरा न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह संस्कृति, लोक कलाओं और पारंपरिक नृत्यों का भी उत्सव है। विभिन्न गांवों से लोग अपने–अपने देवी–देवताओं की मूर्तियां और झांकियां लेकर आते हैं, जिससे यह पर्व विविधता में एकता का सजीव उदाहरण बनता है।

सामाजिक और आर्थिक योगदानः– इस पर्व के दौरान बड़ी संख्या में पर्यटक भी कुल्लू आते हैं, जिससे स्थानीय व्यापारियों और कारीगरों को लाभ होता है। कुल्लू दशहरा हिमाचल प्रदेश की समृद्ध संस्कृति को विश्व भर में पहचान दिलाता है। इस प्रकार कुल्लू दशहरा न केवल एक धार्मिक त्यौहार है बल्कि यह सामुदायिक सम्पूर्ण परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखने का भी प्रतीक है।

कुल्लू दशहरा और रामायण की पृष्ठभूमिः–
कुल्लू दशहरा रामायण की कथा से गहराई से जुड़ा हुआ है। रामायण के अनुसार भगवान राम (रघुनाथ) ने रावण पर विजय प्राप्त कर माता सीता को मुक्त किया था। एक संत की सलाह पर कुल्लू के राजा ने भगवान रघुनाथ जी की मूर्ति अयोध्या से मंगवाई और उन्हें अपना ईष्ट देवता माना। राजा ने भगवान रघुनाथ जी को कुल्लू राज्य का राजा घोषित किया और तब से कुल्लू दशहरे में रघुनाथ जी की प्रमुख भूमिका रही है।

रथ यात्राः– कुल्लू दशहरे का सबसे महत्त्वपूर्ण और आकर्षक कार्यक्रम भगवान रघुनाथ जी की रथ यात्रा है। दशहरे के पहले दिन भगवान रघुनाथ जी की मूर्ति को विशेष रूप से सजाए गए रथ में रखा जाता है। इस रथ को सैंकड़ों भक्त रस्सों से खींचकर ढालपुर मैदान तक ले जाते हैं। यह यात्रा कुल्लू दशहरे का केन्द्र बिंदु है और पूरे क्षेत्र के लोग इसमें भाग लेते हैं।

देवताओं का मिलनः– कुल्लू दशहरे में कुल्लू घाटी के विभिन्न गांवों के देवी–देवता भी भगवान रघुनाथ जी के सम्मान में इकट्ठा होते हैं। इन देवी–देवताओं को भी भगवान रघुनाथ जी का सहायक माना जाता है। इस प्रकार रघुनाथ जी की पूजा के साथ अन्य देवी–देवताओं की उपस्थिति भी उत्सव का एक अहम हिस्सा होती है, जिससे यह पर्व और भी विशेष बन जाता है।

सात दिन का उत्सवः– दशहरे के दिन से शुरू होकर यह उत्सव सात दिनों तक चलता है। इन सात दिनों के दौरान भगवान रघुनाथ जी के प्रति आस्था प्रकट करते हुए विभिन्न अनुष्ठान, नृत्य और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। भगवान रघुनाथ जी की रथ यात्रा और उनके प्रति समर्पण इस पूरे उत्सव के केंद्र में होते हैं।

धार्मिक आस्था का प्रतीकः– भगवान रघुनाथ जी को यहां राम का रूप मानकर पूजा जाता है। जो धर्म की विजय का प्रतीक है दशहरे के दिन रघुनाथ जी की पूजा यह याद दिलाती है कि अर्धम का नाश और धर्म की विजय ही जीवन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। इस प्रकार कुल्लू दशहरा में रघुनाथ जी की भूमिका न केवल धार्मिक आस्था और परंपरा का प्रतीक है बल्कि यह इस पर्व का मुख्य आधार है, जिसके बिना कुल्लू दशहरा की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसे विजयदशमी के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व अर्धम पर धर्म की जीत का प्रतीक है और इसी प्रसंग से जुड़ी कहानियों के आधार पर पूरे भारत में दशहरा
मनाया जाता है। कुल्लू दशहरे की शुरूआत 17वीं शताब्दी में कुल्लू के राजा जगत सिंह के शासनकाल में हुई थी। लोक कथाओं के अनुसार राजा जगत सिंह को उनके जीवन में एक त्रासदी का सामना करना पड़ा और इससे मुक्ति पाने के लिए उन्हें सलाह दी गई कि वे भगवान रघुनाथ (राम) जी की मूर्ति को अयोध्या से ला कर उसकी पूजा करें। राजा ने यह मूर्ति मंगवाई और तब से कुल्लू दशहरा रघुनाथ जी की पूजा से प्रारंभ होता है। राजा ने रघुनाथ जी को कुल्लू राज्य का राजा घोषित किया और तभी से भगवान राम को कुल्लू का अधिपति माना जाता है।

रघुनाथ जी की पूजाः– कुल्लू दशहरा भगवान रघुनाथ की पूजा के साथ आरंभ होता है और रघुनाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है। जिसे कुल्लू घाटी के विभिन्न देवता भी अपनी उपस्थिति से गौरवान्वित करते हैं।

कुल्लू के दशहरे में देवताओं की श्रेणियां :–

मुख्य देवताः– ये प्रमुख देवता होता है, जिनकी पूजा पूरे आयोजन के दौरान होती है। राजा रघुनाथ जी को इस श्रेणी में रखा जाता है, जो कुल्लू दशहरा के केन्द्र में होता है। राजा रघुनाथ जी को भगवान राम का रूप माना जाता है और वे इस उत्सव के मुख्य देवता हैं।श्रेणी में रखा जाता है, जो कुल्लू दशहरा के केन्द्र में होता है। राजा रघुनाथ जी को भगवान राम का रूप माना जाता है और वे इस उत्सव के मुख्य देवता हैं।

ग्रामीण देवता (ग्राम देवता) :– ये विभिन्न गांवों के स्थानीय देवता होते हैं। हर गांव से इन देवताओं को उनकी पालकी में बैठाकर दशहरे के मेले में लाया जाता है और राजा रघुनाथ जी के दरबार में उनकी उपस्थिति दर्ज कराई जाती है। इन देवताओं को राजा रघुनाथ जी के सम्मान में बुलाया जाता है।

पारिवारिक देवता (कुल देवता) :– ये देवता किसी विशेष परिवार या कुल के देवता होते हैं, जिनकी पूजा पीढ़ियों से की जाती है। दशहरे के दौरान इन देवताओं को भी आमंत्रित किया जाता है।

वशिष्ट या अनुष्ठानिक देवताः– ये देवता विशेष अनुष्ठानों और धार्मिक कर्मकांडो से जुड़े होते हैं। इनकी पूजा विशेष धार्मिक उद्देश्यों के लिए की जाती है। कुल्लू दशहरे में यह परंपरा अनोखी है, जहां विभिन्न गांवों और कुलों के देवताओं को एक साथ लाकर भगवान रघुनाथ जी के सम्मान में भव्य समारोह आयोजित किया जाता है।

धनेश्वरी,
बी.ए. प्रथम वर्ष

देव संस्कृति

हिमाचल प्रदेश की पहचान देव संस्कृति से है तथा हिमाचल में जो भी मेले–उत्सव आयोजित होते हैं उनसे सीधा सम्बंध हिमाचल के देवी देवताओं का है।

मेरे गांव का नाम देवगढ़ गोही है, जो कुल्लू ज़िला के सैंज घाटी में स्थित है। मेरा गांव एक सुंदर सी पहाड़ी पर स्थित है। यहां से प्रकृति के अद्भूत नज़ारे देखने को मिलते हैं, जो कि इस खूबसूरत प्रकृति के आंचल में बसे प्यारे गांव के सौंदर्य में चार चांद लगा देते हैं। गांव के बीच में ही हमारे आराध्य देवी–देवता, देवता बूढ़ा नारायण जी तथा रूपी घाटी की आदिशक्ति महामाई कमला भगवती जी का मंदिर है। महामाई कमला भगवती जी 5 कोठी रूपी तथा 24 कोठी सराज की देवी मानी जाती है। यह गांव फाटी रैला तथा कोठी भलाण में आता है।

उत्पत्ति की गाथा :– माता कमला भगवती सृष्टि की उत्पत्ति के समय हस्तिनापुर में प्रकट हुई। वहां से माता कागड़ा, मंडी, कमल कुंड, डुंगरी, मनाली, कुल्लू क्षेत्र से होते हुए पंजेई, तरेड़ा, सजाहरा, ग्वालू और शोचा गई।

तत्पश्चात् माता को गोही अच्छा लगा परंतु वहां उस समय राक्षस निवास करते थे। माता ने छल से उनके साथ सौदा किया। गोही से बहुत नीचे एक नाला है जिसे हम कुल्हा गाड़ कहते हैं। वहां एक बड़ा पत्थर था, जिसका आकार एक विशाल मकान से बड़ा था। कमला भगवती माता ने राक्षसों से कहा था कि अगर तुम ये पत्थर उठाकर सूर्य उदय से पूर्व गोही में पहुंचाते हो तो मैं यहां से चली जाऊंगी। अगर तुम हारे तो तुम सब यहां से चले जाना। वो राक्षस मान गए थे और बहुत मेहनत करने के बाद भी वह विशाल पत्थर गोही से थोड़ा नीचे तक पहुंचा दिया था। परंतु तब तक सूर्य उदय हो गया जिस कारण वो राक्षस वहां से चले गए। तब से महामाई कमला भगवती देवगढ़ गोही में रहती हैं।

आकार और विवरण :– महामाई कमला भगवती का रथ बम्ली शैली का बना हुआ है। और माता के मोहरे स्वर्ण से सुशोभित हैं। माता के 9 मुख, एक अष्टधातु तथा एक धातु का मुख है। माता के सिर पर याक के पूंछ के बाल लगाए हैं, जिसे हम बंबल कहते हैं। बालों पर सुनहरे वस्त्र का टोप लगाया जाता है और सबसे ऊपर सोने का छत्र सजाया जाता है। तथा चांदी के 'जमाण' लगाए जाते हैं।

पूजा विधि :– सर्वप्रथम सुबह माता का धामी 'मुरगणी' नामक तीर्थ स्थल से नहाकर माता की पूजा के लिए तीर्थ स्थल से पानी लाता है। उस समय के लिए माता के पुजारी भी मंदिर में पहुंच जाते हैं और फिर वह पूजा विधि शुरू करते हैं। पूजा में कुछ सामग्रियों का प्रयोग किया जाता है जैसे :– धूप, फूल, चावल, टिका, इत्यादि। सर्वप्रथम पुजारी तीर्थ स्थल से लाए हुए पानी से माता का मुख स्नान कराता है। फिर पुजारी पूजा की थाली को सजाता है, जिसमें धूप जलाया जाता है, फूल सजाये जाते हैं तथा थोड़े–से चावल और चंदन टिका भी रखा जाता है। इन सब के बिना पूजा अधूरी मानी जाती है। पूजा समाप्त होने के बाद पुजारी वहां पर आए सभी लोगों को चंदन से टिका लगाता है तथा उन्हें देवी–देवता को फूल देता है। जिन्हें हम पहाड़ी भाषा में 'शेश' या 'खिल' भी कहते हैं। इस प्रकार पूजा विधि समाप्त होती है। साजा, पंद्रह प्रविष्टे, बीस प्रविष्टे को देवी–देवता के पास कुछ खास पूजा होती है। अर्थात् इन दिनों माता के गुर, धामी तथा हारी लोग एकत्रित होते हैं। इस दिन माता के गुर के माध्यम से माता अपने 'हारियान' अर्थात् हारी लोगों को सलाह देती है। अगर कुछ बुरा हो रहा हो तो उसका संकेत देती है। वर्ष भर में कुछ महीने के साजे को 'गुर गादी' बैठती है, जिसमें पूरे 'हारियान' को चावल से शाई देते हैं, और सभी की समस्या का निवारण किया जाता है।

त्यौहार :– देवगढ़ गोही में हर वर्ष अनेक त्यौहार मनाए जाते हैं।

जैसे :– शौयरी, कनैक्त, चौदह बिठ, बाही बिठ इत्यादि। इनमें से प्रमुख त्यौहार कनैक्त तथा बाही बिठ हैं। यह इसलिए प्रमुख हैं क्योंकि 'कनैक्त' के दिन महामाई कमला भगवती का जन्म

दिवस माना जाता है तथा 'बाही बिठ' को देवता बूढ़ा नारायण जी का जन्म दिवस माना जाता है।

कनैक्त :– कनैक्त भाद्रपद व अश्विन के महीने में बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। इस मेले की खासियत यह है कि इस दिन माता के गुर, धामी, पुजारी तथा गांव के अन्य लोग व्रत भी रखते हैं तथा श्रद्धा के मुताबिक सेब, खीरे, जौ, मक्की, अखरोट, अनार इत्यादि मां को चढ़ाते हैं। माता के दर्शन होने के बाद व्रत तोड़ा जाता है। उसके बाद भक्तजन भजन–कीर्तन करते हुए माता के ध्यान में मग्न हो जाते हैं। इस दिन बच्चे, बुजुर्ग तथा सभी लोगों में खुशी की लहर छा जाती है। सभी बच्चे इकट्ठे होकर मौज–मस्ती करते हैं। अनेक मिठाइयां तथा खिलौनों की दुकानें भी लगी होती हैं। लोग माता के दर्शन के लिए सुबह तक आते रहते हैं। सुबह के चार बजे मंदिर में देवी–देवता के 'कारकूनी' द्वारा देवी–देवता के पास दीपक जलाए जाते हैं। कनैक्त के दिन रात को 8 बजे के बाद सांस्कृतिक संध्या शुरू होती है तथा स्थानीय स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा तथा अन्य लोगों द्वारा अनेक प्रकार के कार्यक्रम देर–रात तक प्रस्तुत किए जाते हैं। अंत में लोग मिठाइयां तथा खिलौने खरीद कर घर की ओर चले जाते हैं। इस प्रकार से कनैक्त समाप्त हो जाता है।

बाही बिठ :– बाही बिठ अप्रैल महीने मे साजे के दूसरे दिन अर्थात दो प्रविष्टे को मनाया जाता है। इस मेले की खासियत यह है कि इस दिन देवता बूढ़ा नारायण का जन्मदिवस माना जाता है। बाही बिठ पहाड़ी भाषा के 'बैसाख' महीने में मनाया जाता है। बाही बिठ के दिन बूढ़ा नारायण जी को सजाकर उसी स्थान पर ले जाते हैं, जिस स्थान पर उनका जन्म हुआ था, उस स्थान को बहुत अधिक पवित्र माना जाता है। इस दिन बुरांश के फूल के बिठ बनाए जाते हैं। बूढ़ा नारायण जी के पवित्र स्थल से महामाई कमला भगवती तथा बूढ़ा नारायण जी को श्रद्वालू नचाते–नचाते मंदिर तक लाते हैं। उसके पश्चात् वहां के स्थानीय लोग कुल्लवी नाटी प्रस्तुत करते हैं और साथ में आराध्य देवी–देवताओं को नचाया जाता है। वह दृश्य अत्याधिक मनमोहक और अद्भूत होता है। ये मेले यहां की समृद्ध संस्कृति का दर्शन कराते हैं।

ईशा
बी.ए. तृतीय वर्ष

तांदी अग्निकांड पीड़ितों के लिए सैंज महाविद्यालय की समाजिक पहल

1 जनवरी 2025 को नए साल के पहले दिन ही तांदी गांव में आग की घटना हुई। तांदी गांव हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले के बंजार उपमंडल में स्थित है। भयंकर आग दुर्घटना दोपहर के समय घटी थी और देखते ही देखते आग ने पूरे गांव को अपनी चपेट में ले लिया। गांव के बेबस लोग नम आंखों से अपने जले हुए आशियानों को निहारते रहे। इस अग्निकांड में गढ़पति शेषनाग का भण्डार अर्थात् जहां देवता जी का सोना, चांदी व श्रृंगार का सामान रखा जाता है, पूरा जलकर राख हो गया। लोग अपना कीमती सामान भी बाहर निकाल न पाए। इस में कोई जान का नुकसान नहीं हुआ था। घटना की सूचना मिलने के बाद सैंज महाविद्यालय के केन्द्रीय छात्र परिषद के जागरूक छात्रों व IQAC के सदस्यों, डिजास्टर मैनेजमेंट सेल के तहत यह कार्यक्रम प्रोफेसर सुरेश कुमार के निर्देशन में आयोजित किया गया। इस कार्य में पहला कदम था महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों को एक ग्रुप में जोड़ना किन्तु मुश्किल यह थी कि उस समय महाविद्यालय में शीतकालीन सत्र की छुटियां शुरू हो गई थी। अंततः 4 जनवरी तक सभी विद्यार्थियों को ग्रुप में जोड़ लिया गया था। हमारा लक्ष्य एक सप्ताह के अंदर तांदी गांव के प्रभावित लोगों की मदद करना था और ऐसा करने में हम पूर्णतः सफल हुए। 5 जनवरी 2025 को महाविद्यालय की ओर से एक आर्थिक सहायता की पहल शरू की गई जिसमें सभी विद्यार्थियों ने 200 रूपये की धनराशि का योगदान दिया। इस पुनित कार्य में महाविद्यलय की प्राचार्य महोदया व अन्य सभी शिक्षक गणों ने भी धनराशि देकर इस कार्य को सफल बनाने में अपना सहयोग दिया। 8 जनवरी 2025 को इस कार्य को आगे बढ़ाते हुए महाविद्यालय के 13 विद्यार्थियों ने जिसमें 6 छात्र व 7 छात्राएँ थीं, सैन्ज बाजार में धनराशि एकत्र करने की अनुमति महाविद्यालय की प्रधानाचार्या महोदया से मांगी व उन्होंने इस कार्य के लिए सहमति दे दी थी। प्रातः 10 बजे से 4 बजे तक विद्यार्थियों ने पूरे सैन्ज बाजार से धन एकत्रित किया और सभी ने इस पुनित कार्य में अपनी इच्छा अनुसार धनराशि दी। यह कार्य हम एक सप्ताह के अंदर करें ऐसा हमारा लक्ष्य था जिसके तहत हमने 8 जनवरी तक 46,258 रूपये इकट्ठा कर लिये थे। तांदी गांव के प्रभावित लोगों से बातचीत करके उनकी मांगों के अनुसार उनके लिए सैंज महाविद्यलय की ओर से 15 ट्रंक, 15 केतली, 15 कुकर, 15 कढ़ाई, 15 थरमोस, 15 परात, व 15 तवा देना निश्चित किया गया। 10 जनवरी को सैंज महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने समाजिक दायित्व निभाते हुए अग्निकांड पीड़ितों को राहत सामग्री प्रदान

की और उन्हें मानसिक सहारा दिया। गांव वालो ने छात्रों की इस मदद के लिए उनकी सराहना की। यह पुनित कार्य महाविद्यालय की प्रधानाचार्या महोदया, शिक्षक गणों व विद्यार्थियों के सहयोग के बिना अधूरा था। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रधानायार्या महोदया डॉ. सुजाता ने सैंज महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों की, केन्द्रीय छात्र परिषद की, IQAC और डिजास्टर मैनेजमेंट सेल की इस समाजिक पहल की सराहना की। यह कदम विद्यार्थियों के समाजिक सेवा और आपदा प्रबंधन के प्रति उनकी जागरूकता को दर्शाता है। इस पहल ने समाज में एक सकारात्मकता का संदेश भी दिया है।

शिल्पा
अध्यक्षा
महाविद्यालय छात्र परिषद संघ
राजकीय महाविद्यालय सैंज

World Heritage Sites GHNP

ग्रेट हिमालय नेशनल पार्क द्वारा **सैन्ज** व जीवा रेंज में समय–समय पर GHNP में पाए जाने वाले जानवरों और पक्षियों की गणना की जाती है। जिसके लिए वन–विभाग के कर्मचारी GHNP के घने जंगलों में जाते हैं। इस बार 05 –10 नवम्बर तक हिमालयन थार, कस्तूरी मृग, ब्लू शीप आदि की गणना करना मुख्य उद्देश्य था। साथ ही अन्य पशु–पक्षी की जानकारी इकट्ठा करना भी था। इस वर्ष GHNP का सहयोग 'Guardians of World Heritage Site GHNP Sainj' के सदस्यों ने किया। इस समूह में महाविद्यालय सैन्ज के छात्र–छात्राएं हैं। जिनका इस बार की गणना के लिए चयन हुआ। जिसमें 4 लड़किया और 8 लड़के थे। जिनमें से 2 लड़कियां जीवा रेंज में गई और बाकि 10 लड़के–लड़कियां सैन्ज रेंज में गए। इसमें हमारे महाविद्यालय के दो प्रोफेसर भी साथ थे। इस कार्यक्रम का आयोजन यह पता लगाने के लिए किया जाता है कि GHNP के अंतर्गत आने वाले सभी पशु–पक्षी सुरक्षित हैं या नहीं, कहीं शिकारी द्वारा कोई जाल तो नहीं बिछा रखे हैं।

GHNP में जाने के लिए हमें एक लम्बा ट्रैक तय करना था जो कुछ इस तरह थाः

महाविद्यालय से रोपा

05–11–2024 को हम सब छात्र–छात्राएं और प्रोफेसर जो कि ट्रैक पर जा रहे थे सभी 10:00 बजे महाविद्यालय प्रांगण में इकट्ठा हो गए क्योंकि आज से हमारा ट्रैक शुरू होना था। ग्रुप फोटो लेने के बाद 10:15 पर कमला और रेशमा अपने ट्रैक पर निकल गई क्योंकि इन दोनों का जीवा ट्रैक अलग दिशा में था। उसके कुछ समय बाद लगभग 10:40 पर हम सभी भी रोपा रेस्ट हाऊस के लिए निकल पड़े। 12:00 बजे हम सब रोपा पहुंचे जहां वन विभाग के अधिकारी हमारा इंतजार कर रहे थे। रेस्ट हाऊस के पास कैम्पर हमें लेने के लिए आई जिसमें हम सब अपना–अपना समान लाद कर खुद सवार हो गए।

रोपा से निहारनी

गाड़ी में सवार होने के बाद हम रोपा से निहारनी के लिए निकल गए। 15 मिनट के सफर के बाद हम न्यूली बाजार पहुंचे जहां हम सब ने खाने–पीने की चीजें ली। उसके बाद हम निहारनी जाने के लिए निकल गए। लगभग 1:00 बजे निहारनी पहुँचे। यहां से आगे का सफर पैदल तय करना था। सभी ने हमारी नजर शाकटी गांव की ऊपर की पहाड़ी पर पड़ी जहां एक चट्टान दिखी जो कि बहुत बड़ी तो थी

परन्तु उस पर पुरा मनुष्य का चेहरा छपा हुआ था। इस पत्थर के ठीक नीचे शाकटी गांव बसा हुआ है। हमारे पोर्टर दलिप सिंह जी और सुरत राम जी ने बताया कि इसे 'सतोगनी की जोगणी' कहा जाता है। यह शिला देवता श्री बिट्ठ ब्रह्म द्वारा स्थापित कि गई है ताकि शाकटी गांव का बचाव हो सके। माना जाता है कि यह शिला उस वक्त मन्त्र की गई थी जब स्थानीय देवता का आपस में युद्ध चला था। जब हम आगे की ओर चले तो हमें एक अखरोट मिला जो कि गुट्ठु ने खाया था। यह 11:10 पर मिला था। वहीं थोड़ा आगे की ओर चलकर हमें भालु के पंजों के निशान मिले और साथ ही साथ हमें मधुमक्खी का छत्ता मिला जोकि भालू द्वारा खाया गया था। यह छत्ता हमें 11:12 मिनट पर मिला। फिर हम आगे की ओर बढ़ गए। हम बात करते हुए चढ़ाई चढ़ते गए। आधा–पौना–घंटा चढ़ाई चढ़ने के बाद हम 11:50 पर कुटला पहुंचे जहां चारों ओर बड़े–बड़े वृक्ष गिरे हुए थे। वृक्षों के बीच से हमें आवाज़ें सुनाई देने लगी जब हमने देखा तो हमें मोनाल–करडी दिखाई पड़े जो दूसरे पेड़ों की ओर उड़ते हुए दिखाई दिए। फिर धीरे–धीर हम चारों ओर जानवरों के निशान खोजते हुए आगे बढते रहे।कुछ देर चलने के बाद हमें आगे चलकर लगभग 9 मोनाल और 10 करडी उड़ती हुई मिली और वहीं साथ ही भालू के पंजों के निशान और शौच मिला। उस वक्त लगभग 12:02 मिनट हो रहे थे।फिर हम हुमथणी पहुंचे जहां फोरेस्ट वालों द्वारा एक काटेज बनाया हुआ है। वहीं से थोड़ा ऊपर हमने सब का इंतजार करते हुए थोड़ी देर विश्राम किया। यहां रास्ते का पता नहीं लग रहा था क्योंकि 4–5 फीट लम्बी झाड़ जैसा घास चारों ओर था। किसी भी तरफ से रास्ता दिख नहीं रहा था। इस सफर में अभी तक लगातार चढ़ाई थी और लगभग 1 बजे हमने चढ़ाई पूरी कि फिर उतराई वाला रास्ता शुरू हुआ। बीच में रास्ता अधिक खराब था। मेरे हाथ में सुरेश सर का कैमरा था। मेरा पांव फिस्लने वाला था। मैंने खुद को तो संभाला पर झटका लगने से कैमरे के लैंस के कवर का लॉक खुला और खाई में गिर गया। गिरने के बाद उसके मिलने की उम्मीद नहीं थी परंतु हमने फिर भी खोजा और वह मिल गया। कुछ समय बाद हम भेद नाला पहुंचे जहां हमने लंच किया। उसके बाद हम सब अपनी–अपनी बोतल में पानी भरकर आगे की ओर चल पड़े। अब हमें लगातार 2 से 3 घंटे चढ़ाई चढ़नी थी। हमने सफर दोबारा शुरू किया। नाले से ऊपर की ओर रिंगल का छत्ता दिखा जो कि ऊंचे पेड़ पर था।

उसके बाद हम निरंतर आगे बढ़ते गए और हमें रास्ते में हमें कई प्रकार के पेड़ पौधे जैसे– नगाह, तालश, भोजपत्र आदि मिले। चढ़ाई चढ़ते समय डर भी लग रहा था क्योंकि रास्ता बहुत तंग था और खाई थी। उसके बाद अंधेरा होने से पहले 4:30 के आस–पास ढेल से थोड़ा नीचे पहुंचे जहां चारों ओर घास की झाड़ियां थी और भालू द्वारा सूखे पेड़ों को अजीब ढंग से काटने के निशान थे।जैसे अंधेरा होने लगा हम ढेल पहुंच गए, जहां नंद लाल और विरेन्द्र भाई ने आग जला दी। आग जलाने के बाद दो टैंट लगाए गए। मैंने, नंदलाल, और विरेन्द्र भाई ने डेरे से थोड़ी दूर जा कर लकड़ी लाई। जहां हमें अजीब–अजीब आवाजें सुनाई देने लगी जैसे हमें कोई बुला रहा था। हम डर गए। हमने जल्दी लकड़ी इकट्ठा की और डेरे के पास पहुंच गए। फिर चाय बनाई और बिस्किट खा कर सारे दिन की थकान उतार सब लोग खाना बनाने में लग गए। सारा खाना आग पर ही बनाया गया। 8:30 बजे हम सबने खाना खा लिया और कुछ देर बात करने के बाद नंद लाल टैंट में सोने चले गया। फिर कुछ देर बाद मैं भी सोने चला गया। सब लोग सुबह 4:30 बजे तक उठ चुके थे। जितने में मैं और नंद लाल उठे, हैपी जी ने भोजन (हलवा) बना दिया था। 06:00 बजे हम सब ढेल टॉप जोगणी के पास पहुंचे। ढेल टॉप पर भी लोग दूर–दूर खड़े हो गए। विरेन्द्र लपाह वाले रास्ते पर चले गए। हम सही रास्ते से होते हुए भऊरी माता के पास पहुंच गए, जहां बहुत ही सुन्दर पुल बना हुआ था और साथ ही माता के कुछ निशान रखे हुए थे। हमें आगे कोई नहीं दिखा जिसके कारण हम वहीं बैठ गए और कुछ फोटो लिए। उतने में ही हमारे एक पोर्टर आए और फिर हम उन के साथ चलते रहे। रास्ता बहुत ही खराब था। कहीं खाई दिख रही थी तो कहीं नालें। लगभग तीन बजे हम डेंगा पहुंच गए जहां पहुँच के पता लगा कि हमारे तीन साथी उस रास्ते पर आए ही नहीं। जब उन्हें कॉल की तो पता चला वह अभी पीछे ही हैं क्योंकि वह रास्ता भटक गए थे। कुछ समय बाद हमारे तीनों साथी आए और सब ने खाना खाया। अपना–अपना सामान उठाया और चल पड़े। यह 141 कि.मी. का सफर पैदल चलकर पूरा करना था।

निहारनी से डेंगा

निहारनी से पैदल चलकर सफर शुरू करने के बाद हम सब बाह गांव पहुंचे जो कि निहारनी से 2 कि. मी. दूरहै। इस गांव से थोड़ा आगे जाने के पश्चात हमें चॉक मिला जहां से एक रास्ता मझाहण और दूसरा शाकटी की ओर जाता है। कुछ समय फोटो लेने के पश्चात हम आगे की ओर चल पड़े। उसके पश्चात पुल पार किया। शाकटी के लोगों को इसी पुल को पार करके भारी भरकम सामान अपनी पीठ पर और घोड़ों पर ले जाना पड़ता है। इस पुल से वह नजदीकी बाज़ार से जुड़े रहते हैं। यदि यह पुल न हो तो नदी पार करने में मुश्किल होगी और साथ ही सामान ले जाने में भी। इस पुल को पार करने के बाद मैं और नंद लाल सबसे आगे चले गए और चैनगाह के पास बैठ गए। उतने में हमारे बाकि साथी भी वहां पहुच गए। उन्होंने कहा कि उन्हें आगे का रास्ता पता था तो वह आगे चले गए परंतु आगे जा कर भटक गए। जैसे ही हमारी टीम ढेल की ओर निकली मैंने देखा कि रक्तिसर वाले अपना कैमरा वहीं भूल गए हैं। B.O. सर ने दो लड़कों को उन्हें कैमरा देने के लिए भेजा परंतु वह बहुत आगे चले गए थे जिस कारण हम उस कैमरे को भी अपने साथ ढेल ले गए। हमारा सफर 12 कि.मी. का था जिसे हमें अंधेरा होने से पहले तय करना था। 10:40 पर हमने खोड़ा थाच में विश्राम किया जहां चारों ओर अखरोट के पेड़ थे। वहां कुछ गाय बैल भी थे। जोकि शाकटी के स्थानीय लोगों द्वारा जंगल में चरने के लिए छोड़े हुए थे।

डेग से शाकटी

सब लोगों ने खाना खाया और वह कुछ समय वही रूके गए। उतनी दंर में नंदलाल और मैं आगे निकल गए। चढ़ाई चढ़ने के बाद उतराई उतरते रहे, फिर आगे चलते पानी का नाला मिला। वहां पानी पिया भी और भरा भी। लगभग 7 बजे मैं और नंद लाल गुगना टॉप पर पहुंचे यहाँ से शुगाड़ के आस–पास के इलाके दिखने लगे। कुछ समय के बाद फॉरेस्ट वर्कर शेर सिंह जी भी वहां पहुंच गए। थोड़ी देर उनके साथ बातें करने के बाद हम आगे की ओर चल पड़े। कुछ समय बाद हम शुगाड़ से थोड़ा पीछे पहुंचे जहां छोटी गाय जंगल में चर रही थी जोकि शुद्ध पहाड़ी गाय थी। यह कद में तो छोटी होती है परंतु इसका दूध बहुत फायदेमंद होता है। थोड़ा आगे चल कर गांव आया वहां से आगे 10 मिनट बाद बहुत ही सुंदर झरना दिखाई दिया। यह झरना काफी ऊँचाई से गिर रहा था। यहीं से थोड़ा आगे खेत थे जहां ऊपर की तरफ ढंकार में लंगुरों का झुंड दिख रहा था। वहां से आगे 5 मिनट का सफर बाकी गया था। नंद लाल और मैं 05:05 मिनट पर शाकटी बगला पहुंच गये जहां हमारे रहने के लिए टैंट लगे हुए थे। हमारे बाकी साथियों के आने से पहले हमने आग जला ली थी। लगभग 6:00 बजे के करीब अंधेरे में हमारे सभी साथी पहुंच गए। 8:30 बजे हम सब ने खाना खा लिया उसके बाद हम सभी की टीमों का निर्माण किया गया। शाकटी से आगे के लिए टीम रक्तिसर, ढेल और बहाली थाच बनाई गई। मेरा और नंद लाल का चयन ढेल टीम में हुआ। हमारी टीम में 12 लोग थे। सब लोग 10:00 बजे तक सो गए। अगले दिन 06/11/2024 को सुबह–सुबह 03:00 बजे ठण्ड लगने लगी तो मैं और नंदलाल जाग गए। काफी देर हमने ठण्ड सही परंतु हमारा टैंट भी ओस पड़ने के कारण गिला हो गया था। फिर आग जलाई और वहीं बैठे रहे। सात बजे तक सब जाग गए थे और ब्रश करके आग सेकने लगे। 09:30 बजे हम सब बाहर ही खाना खाने बैठ गए। खाना खाने के बाद हमने अपना सामान उठाया और शाम को जैसे बताया गया था उसी तरह अपने–अपने समूह के साथ अपनी–अपनी दिशा की ओर चल पड़े। रक्तिसर वालों को शाकटी गांव तक हमारे साथ चलना था क्योंकि रक्तिसर और ढेल को शाकटी गांव तक एक ही रास्ता था। उसके बाद हम अलग–अलग हो गए। नदी से होकर हम गांव पहुंचे। नदी पार करने के लिए नदी में लोगों द्वारा बड़े बड़े पत्थर रखे गए थे ताकि लोग आसानी से नदी पार कर सकें। फिर हम शाकटी गांव पहुंचे, वहां से आगे फिर हमें नदी पार करनी पड़ी। उस रास्ते पर खतरा बहुत था क्योंकि वहां केवल लकड़ी के दो लम्बे फट्टे थे जिन पर संतुलन बनाना आवश्यक था। पुल पार करने के बाद दोनों टीमें अपनी–अपनी दिशा में चल पड़ी। हमारी टीम में 12 लोग बचे थे जोकि ढेल जाने वाले थे:

1. बॉबी (पोर्टर) 2. सुरत राम (पोर्टर) 3. हैपी (पोर्टर) 4. चुनी लाल (पोर्टर) 5. दलीप सिंह (पोर्टर) 6. नंद लाल (विद्यार्थी, बी.ए. तृतीय वर्ष) 7. तुषार चौहान (विद्यार्थी, बी.कॉम तृतीय वर्ष) 8. प्रिया मेहता (विद्यार्थी, बी.ए. तृतीय वर्ष) 9. कविता ठाकुर (बी.ए. प्रथम वर्ष) 10. योग राज (B.O) 11. सुरेश कुमार (प्रोफेसर, G.D.C. सैंज) 12. वीर सिंह (फोरस्ट वर्कर)।
मुझे रास्ते में मस्कडिअर के आने की आवाज़ आई। मैंने सभी कैमरामैन को सतर्क होने को कहा परंतु उसने मुझे देख कर रास्ता बदल दिया। उसके पश्चात आगे बढ़ने से पहले जोगनी माता के चरणों में नारियल अर्पित किया। लगभग 9:00 बजे तक हमने आस–पास देखा और वहां हमें कई प्रकार की जड़ी–बुटीयाँ मिली जैसेः लोसर, चोटा, पंजा, पतिर, गुगल धूप, बिट्ठल धूप, पंतगल बुरान।

खरशुः– यह सबसे ऊँचाई पर पाया जाने वाला एक पेड़ है, जिसके ऊपर कोई अन्य वृक्ष नहीं पाया जाता।
पंतगल बूरानः– इस पेड़ का काफी बढ़ा झाड़ होता हैं। मस्क डीअर इसी में रहते हैं। क्योंकि इस झाड़ में कोई अन्य जानवर नहीं रहता।

थोड़ा नीचे उतरने के बाद एक मोनाल हमारे कुछ दूर पर उड़ा। जितने में फोटो लेने के लिए कैमरा निकाला उतने मे वह पहाड़ी के ऊपर जा बैठा जहां वह दिखाई नहीं दे रहा था। फिर रास्ते में आते समय मस्क डिअर के पांव के निशान मिले जो कि मुझे बिल्कुल ताज़े लग रहे थे। परंतु सर ने कहा कि यह पुराने है। थोड़ी नीचे हमें ताज़ा मल मिला जिससे हमें भरोसा हो गया कि जब आवाज़ आई थी उस समय मस्क डियर उसी रास्ते नीचे की ओर आया था। कैंप साइट पहुँच कर हम सभी ने हाथ मुंह धोया और खाना खाया। फिर सब लोग धूप सेकने लगे और कुछ देर मैं भी धूप में सो गया। प्रिया और कविता ताश खेलने लगे। शाम को 4:00 बजे मैं, नंद लाल सुरेश सर, विरेन्द्र भाई और बी.ओ. सर दोबारा टॉप पर गए। जहां मैंने मस्क डिअर के पांव का निशान देखा जो कि सुबह का ही था। उस समय वॉकी–टॉकी पर बहली थाच ने रिपोर्ट दी कि उन्हें हिमालयन थार और घोरल मिले। उसके बाद उनसे कोई बात नही हुई। टॉप पर पहुंचकर हमें कोई भी पशु नही मिले। सूर्यास्त के बाद जब हम वापस आए तो बाकी लोग उतने में रोटी बना रहे थे। हमने दिन में बड़ी–बड़ी लकड़ियां इकट्ठी की थी जो हमें रात में आग जलाने के काम आई। रात को 2:00 बजे हमारे डेरे के पास लोमड़ी आ गई। लगभग 3:00 बजे प्रिया और कविता को ठण्ड लग गई। 04:00 बजे मैं भी उठ गया। ठण्ड लग रही थी पर बिस्तर से बाहर जाने का मन नहीं कर रहा था। ठण्ड में काफी हिम्मत करने के बाद मैं उठा क्योंकि मुझे बाहर से बदबू आ रही थी। मैंने लकड़ी इकट्ठा करके आग जलाई और फिर सब बारी–बारी उठने लगे। सबने अपना सामान पैक किया, फिर टैंट खोलकर पैक किया, खाना खाया और आगे चलने की तैयारी करने लगे। अब घर वापसी शुरू हो चुकी थी। हम ग्रुप फोटो लेने के बाद 10:00 बजे ढेल से लपाह की ओर चल पड़े।

ढेल से लपाह

हम ढेल से 10:00 बजे निकले। उसके पश्चात हमें 5–6 घंटे लगातार ऊतराई ऊतरनी थी। रास्ते में कई जगह हमें डर लगा कि उन जगहों से हम गिरने वाले हैं। रास्ते की हालत बहुत ही खराब थी। फिर हमने लपाह पहुंचने से पहले लंच किया। लगभग 3:00 बज चुके थे। उसके बाद हम लपाह गांव के लिए चल पड़े। जब हम गांव में पहुंचे तो देखा कि वहां के लोगों ने आज भी गाय पाली है। वह आज भी बैलों पर निर्भर हैं। और जब वहां के लोग जानवरों को जंगलों से घर ले जाते हैं तो वे साथ ही लकड़ी भी घर ले जाते हैं। फिर हम रेस्ट हाऊस पहुंचे जहां हमने पहले चाय पी और मैगी खाई, फिर लकड़ी इकट्ठा करके आग जलाई। प्रिया और कविता वहां अपने रिश्तेदार के घर चली गई और भी सुबह जब हम रोपा के लिए निकले उस वक्त वह भी हमारे साथ आए।

लपाह से रोपा

सुबह 07:00 बजे हम रोपा के लिए निकल पड़े। 08:30 बजे हम निहारनी पहुंचे जहां हमने देखा कि गांव

वाले शाक्टी के लिए चादर पीठ पर उठा कर ले जा रहे थे। कोई सीलेंडर सपेन से लपाह की ओर भेज रहे थे तो कुछ घोड़े पर राशन ले जा रहे थे। 09:30 बजे हम लोग रोपा पहुंच गए। जहां ब्रेकफास्ट करने के बाद सब अपने घर की ओर चले गए। हम सब बी.ओ. सर की गाड़ी में सैंज तक आए। नंद लाल मातला में ही उतर गया और हम सब सैंज में उतरे। इस तरह हमारा सफर पूरा हुआ।

निष्कर्ष

यह मेरे जीवन की पहली ट्रैकिंग थी। इससे पहले मैं कभी भी ऐसे जंगलों में नहीं रहा था, न तो इतना पैदल सफर किया था। मुझे तो डर था कि मैं यह सफर पूरा भी कर पाऊंगा या नहीं। परंतु सभी के साथ बातें करते–करते कैसे इतने दिन बीत गए, पता ही नहीं चला। ये दिन मेरी जिंदगी के सबसे यादगार दिनों में हमेशा शामिल रहेंगे।

तुषार चौहान व नंद लाल
बी. कॉम./बी.ए. तृतीय वर्ष

Aid for Fire Victims in Tandi Village (Banjar Subdivision)

In response to the devastating fire that impacted multiple families in Tandi Village, essential household items were distributed to those affected as a gesture of support and solidarity. This relief effort was organized by the IQAC and CSCA members of Govt. College Sainj through a crowd funding initiative on January 15, 2025.

We extend our heartfelt gratitude to all individuals and organizations who stepped forward in this time of need. The affected families have expressed their sincere appreciation for the timely assistance.

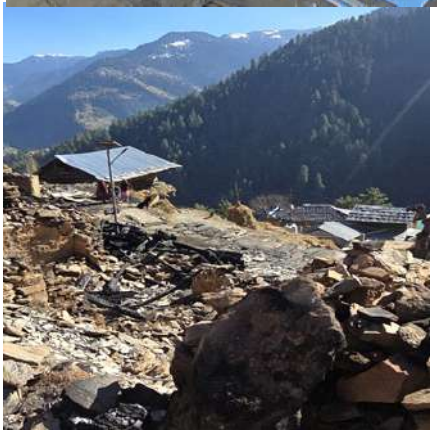

Tushar
B.Com. III Year

Campus Development Initiative by IQAC

As part of its commitment to institutional growth and participatory development, the Internal Quality Assurance Cell (IQAC) of Government Degree College, Sainj, initiated a Campus Development Drive aimed at enhancing the college infrastructure.

In this initiative, the teaching and non-teaching staff members voluntarily contributed funds, which were utilized for the procurement of cement and sand bags to support ongoing development work within the college campus.

This collaborative effort reflects the dedication and responsibility shown by the college staff towards improving the academic environment and infrastructure for the benefit of students.

The contribution not only supplements infrastructural resources but also strengthens the culture of internal resource mobilization and teamwork.

Key Highlights:

i. Voluntary staff donations (teaching & non-teaching)
ii. Purchase of cement and sand for campus development
iii. Initiative coordinated and recorded under the IQAC

Aryan
B.A. III Year

Old Students Association Members (2024-25)

CSCA Body Members (2024-25)

The Student Vanguards

Tushar Chauhan
NSS Leader (Boys)

Priya
NSS Leader (Girls)

Dabe Ram
R&R Rover Crew
Leader (Boys)

Hemlata
R&R Rover Crew
Leader (Girls)

Gopal Singh
OSA President
(2024-25)

Vineet Singh
Eco Club President
(2024-25)

Rohit Palsara
Gender Champion
(Boys)

Chandra Kumari
Gender Champion
(Girls)

Reshma
Red Ribbon
Club

Reena Kumari
Participation in North Zone
Inter-university Football

Field Visit of Dubi Fair by Dept. of Music & Sociology

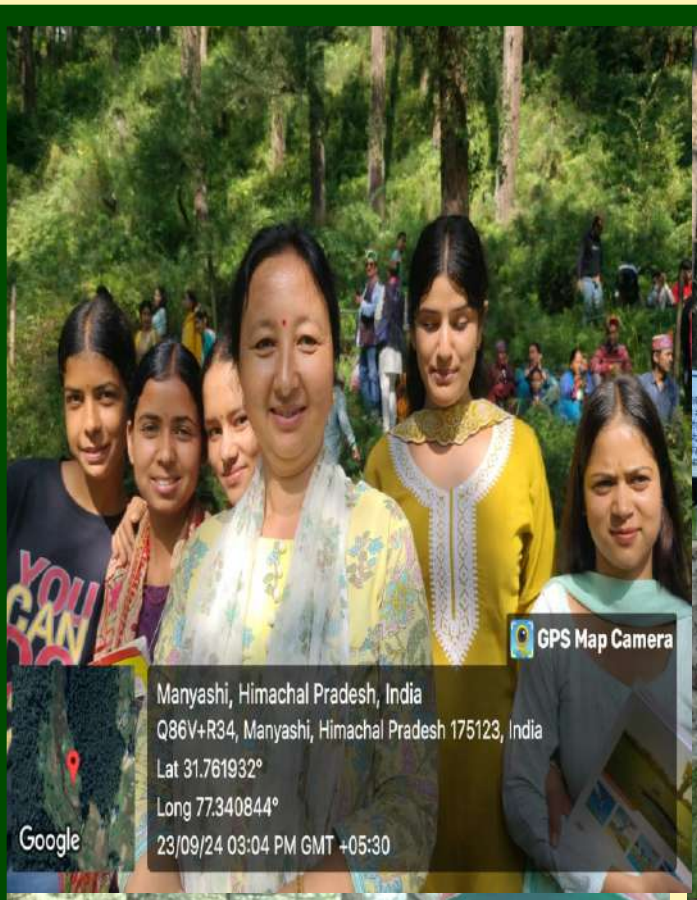

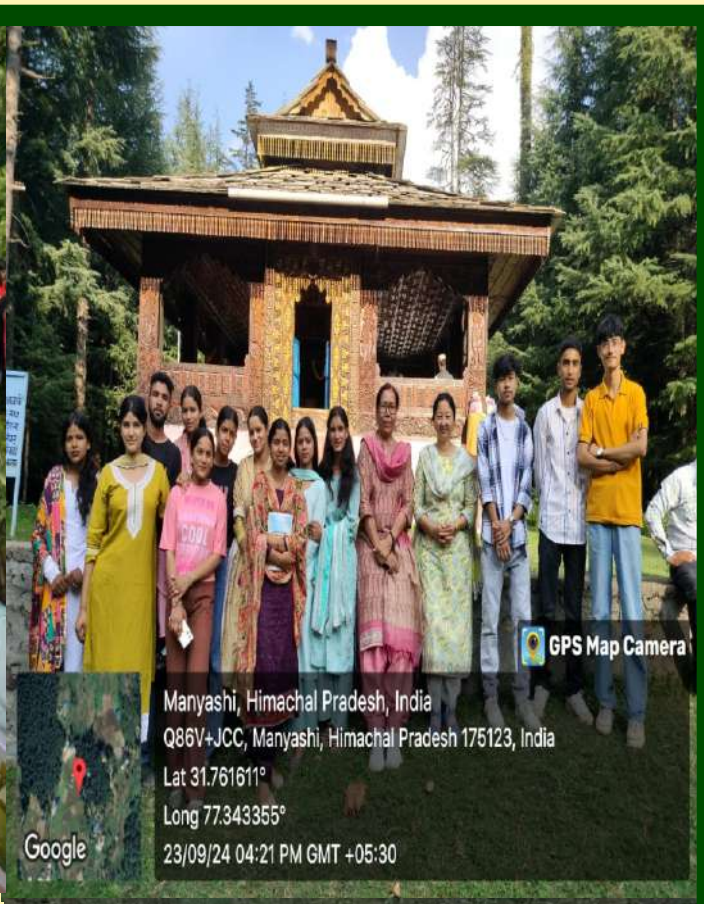

Women Cell Workshop

Red Ribbon Club

Section II
Campus Life

Dear Friends,
It is with immense joy that I write to you as the Student Editor of the *Campus Life* section—a space that holds within it the shared year long laughter, energy, challenges, and triumphs.

This section is a tribute to the spirit that unites us. Whether it's the quiet moments between lectures, the rush of organizing cultural programs, the cheers on the sports ground, or the bonds forged in the classrooms—*Campus Life* is where memories are made, friendships are deepened, and identities take shape.

Curating this section has been a beautiful reminder of how much life pulses through our campus. From student clubs and competitions to heartfelt farewell and behind-the-scenes glimpses of college life, every piece in this section carries a story—a moment, a feeling, a truth.

I would like to thank every student who contributed their words, photographs, and experiences. Your voices have brought this section to life, and your enthusiasm continues to inspire.
To our teachers, and staff—thank you for being our guides and cheerleaders.

I hope that as you read these pages, you smile, you reflect, and perhaps, you relive a memory or two. Because *Campus Life* is, in the end, about all of us—together.

Kamla
B.A. III Year
Student Editor

सोशल मीडिया व विद्यार्थी जीवन

सोशल मीडिया ने आज के युवा के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और विद्यार्थी इसका अधिक से अधिक उपयोग कर रहे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक, इंस्ट्राग्राम, X (ट्विटर) ने विद्यार्थियों को अपने विचारों और रचनाओं को सांझा करने का शक्तिशाली माध्यम प्रदान किया है। हालांकि सोशल मीडिया के अत्याधिक प्रयोग से विद्यार्थियों के शैक्षिक और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। विद्यार्थियों को इसका उचित उपयोग करना चाहिए और अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

नुकसान

* चैट्स को सोशल मीडिया का एक बहुत ही बड़ा नुकसान माना जाता है क्योंकि युवा वर्ग चैट्स पर अपना समय बर्बाद करता है। वे चैट्स पर घंटो बिताते हैं।

* मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव– सोशल मीडिया पर ज्यादा उपयोग करने से विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य खराब होता है।

* वास्तविक जीवन से दूरी–सोशल मीडिया पर समय बिताने से युवा वास्तविक जीवन से दूर हो सकते हैं।

फायदे :-

* कनेक्टिविटी– सोशल मीडिया दूर–दूर रहने वाले दोस्तों, परिवार और समान विचारधारा वाले लोगों से जुड़ने में मदद करता है।

* जानकारी तक पहुंच– यह नवीनतम घटनाओं, विचारों और जानकारी तक पहुंच प्रदान करता है जिससे लोग जागरूक रह सकते हैं।

* सामाजिक जागरूकता – यह लागों को दुनियाभर में हो रही घटनाओं और समाजिक मुद्दों के बारे में जागरूक करता है।

रोहित ठाकुर
बी.ए. प्रथम वर्ष

ज़िंदगी मुस्कुराने लगी

जब भी हम रोए सर पर हाथ मिला उनका
जब भी हम खोए तो साथ मिला उनका
तो ज़िंदगी मुस्कुराने लगी।

जब भी हम दुःखी हुए तो सहारा मिला उनका
हर तकलीफ में मुस्कुराने का एहसास मिला उनका
तो ज़िंदगी मुस्कुराने लगी।

मां कहते हैं हम उन्हें, हमें सारा प्यार मिला उनका
पिता कहते हैं हम उन्हें, हमें संस्कार मिला उनका
और नाम मिला उनका तो ज़िंदगी मुस्कुराने लगी

यूं तो हम लिख नहीं सकते उनसे मिले जज्बातों को
बस उनके प्यार के साथ ज़िंदगी मुस्कुराने लगी।

बचपन

एक बचपन का जमाना था
जिसमें खुशियों का खजाना था
चाहत चाँद को पाने की थी
पर दिल तितली का दिवाना था
खबर ना थी कुछ सुबह की
न शाम का ठिकाना था
थक कर आना स्कूल से
पर खेलने भी जाना था
माँ की कहानी थी
परियों का फसाना था
बारिश में कागज़ की नाव थी
हर मौसम सुहाना था।

भावना देवी
बी.ए. तृतीय वर्ष

Bullying: a Student's Nightmare

College should be a happy time in a young person's life. What can make people's life miserable during the time, then? In my opinion, there is one word which answer this question-bullying. Unfortunately, bullying is still part and parcel of college life. It can affect student of any age, and both boys and girls. A friend of mine had a very negative experience at college last year as an older boy called her names sometimes. He used to post nasty messages about her on Facebook. Obviously, my friend felt very upset about this and it affected her self-confidence. Some days she didn't want to come to the College at all.

What can we do to stop this problem?

First and foremost, we need to be aware that such incidents are happening in the classes and to be very strict when they have a case of bullying. In addition, teacher should conduct seminars and special lectures to spread awareness about this problem, which might make bullies realize how badly they hurt their
victims.

As for students, if they find out a classmate is being bullied, they should support them as much as possible and let teachers know. Bullying can be a nightmare but there are things we can do to prevent it. Hopefully, one day all students will be able to go to the college without fear to being bullied.

Anita
B.A. II Year

कॉलेज जीवन का अनुभव

कॉलेज लाइफ को किसी के जीवन के सबसे यादगार सालों में से माना जाता है। यह स्कूली जीवन से बिल्कुल अलग है।

कॉलेज लाइफ हमें नए अनुभवों और उन चीजों से रूबरू कराती है जिनसे हम पहले परिचित नहीं थे। कुछ लोगों के लिए कॉलेज लाइफ का मतलब है जीवन का भरपूर आंनद लेना और जमकर पार्टी करना। जबकि दूसरों के लिए यह अपने करियर के बारे में गंभीर होने और उज्जवल भविष्य के लिए पूरी तरह से अध्ययन करने का समय है। फिर भी कॉलेज जीवन हम सभी के लिए एक यादगाार समय है। हर कोई इतना भाग्यशाली नहीं होता कि कॉलेज जीवन का अनुभव कर सके। लोगों को विभिन्न कारणों से कॉलेज जाने का मौका नहीं मिल पाता। कभी–कभी उनके पास ऐसा करने के लिए मज़बूत वित्तीय पृष्ठभूमि नहीं होती जबकि कभी–कभी उन्हें अन्य जिम्मेदारियां निभानी होती हैं। जिन लोगों ने कॉलेज जीवन जिया है वे हमेशा समय को पीछे मोड़कर इसे एक बार फिर से जीने की इच्छा करते हैं।

विपाशा पालसरा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कॉलेज का मेरा सफर

वो कॉलेज का दिन जिसके सपने मैं अपने स्कूल से देख रही थी। 12 साल स्कूल में बिताने के बाद यह एक नई चुनौती थी।
"First impression को best बना देना" भगवान से बस यही विनती थी। सुबह जैसे ही कॉलेज में पहुंची तो सब अलग सा था, न वो Classes का Time Table school जैसा था और न ही वह डर वाला माहौल था। स्कूल में तो हम सिर्फ पढ़ना लिखना सीखते हैं, ज़िंदगी के असल मायने तो हमें कॉलेज ही सिखाता है। जैसा कॉलेज के बारे सुना था ये तो उससे बिलकुल अलग है – मौज–मस्ती से भरे ये तीन साल आसान भी हैं और मुश्किल भी। यहां teachers अलग, दोस्त अलग हैं और अलग है Campus की सूरत और हालत। आज़ादी तो यहां पूरी है पर, इस आज़ादी का गलत फायदा अगर हम उठाते हैं तो आखिर में हम खुद ही मुश्किल में पड़ जाते हैं।
College Trip के अलावा कभी घूमने का Plan तो बनाया नहीं क्योंकि दोस्त ही ऐसे मिले की दो तो आ भी जाए तो दो आने के लिए राज़ी नहीं होते।
कुछ Teachers दोस्तों की तरह बतलाएंगे और कुछ इतना सुनाऐंगे कि लगता है हे भगवान ये क्लास से कब जाएंगे। हजारों सपने लेकर हम कॉलेज आए थे। बहुत से पूरे भी किए। पर सब अचानक से हो गया पता ही नहीं चला।
धीरे–धीरे ये सफर अपनी मंजिल की ओर बढ़ेगा और हमें जिंदगी के दरवाजे तक छोड़ेगा। स्कूल की तरह इसकी भी सिर्फ यादें ही रह जाएगी। जो ज़िंदगी भर मुझे हर मोड़ पर कुछ न कुछ बताएगी।

ये बच्चे से बड़े होने का सब्र है, कॉलेज' ये महज़ एक लफ्ज़ नहीं पूरा सफर है।

जब भी देखूंगी पुराने पन्ने पलटकर, बस यही कहूँगी काश वापस लौट आए ये कॉलेज का सफर।

कमला
बी.ए. तृतीय वर्ष

महाविद्यालय की प्रवेश प्रक्रिया

महाविद्यालय प्रवेश वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से छात्र महाविद्यालयों और कॉलेज में यू.जी. शिक्षा में प्रवेश कर सकते हैं।
एडमिशन सिस्टम एक देश से दूसरे देश में और कभी एक से दूसरे संस्थान में व्यापक रूप से भिन्न हो सकता है। हमारे महाविद्यालय में प्रवेश प्रक्रिया इस प्रकार हैः

I) ऑनलाईन आवेदन – सर्वप्रथम महाविद्यालय में प्रवेश करने के लिए कॉलेज की वेबसाइट gdcsainjedu.in पर जाकर ऑनलाईन आवेदन करना पड़ता है और अपनी personal details डालनी पड़ती हैं। उसके पश्चात आप अपनी रूचि के अनुसार विषय चयनित कर सकते है। आपको कुछ Documents upload करने होते है जैसे–
+2 Marklist, 10th Marklist, Aadhar Card,
Himachal Bonafide,
Migration Certificate etc.

ii) काउसिंल प्रक्रिया – इस प्रक्रिया में आपको आपके स्कोर, रैंक तथा उपलब्ध सीटों के आधार पर आपको पाठ्यक्रम आंबटित किया जाता है। लेकिन सैंज महाविद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या कम होने के कारण आपको अपने मनपसंद विषय तथा एडमिशन आसानी से मिल जाती है।

iii) समय पर आवेदन– आवेदन की अंतिम तिथि से पहले आवेदन करना होता है। तिथि समाप्त होने के पश्चात आपका आवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा।

iv) फीस जमा करें – कॉलेज में एडमिशन लेने के लिए फीस Online तरीके से जमा होती है। निर्धारित तिथि के अंदर ही फीस भरें।

इसके पश्चात् आपकी महाविद्यालय में एडमिशन हो जाती है, आपको अपना रोल नबंर भी मिल जाता है और आप महाविद्यालय के विद्यार्थी बन जाते हैं।

नीतिका चौहान
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कॉलेज की राहः एक नया सफर

कॉलेज जीवन एक ऐसा पड़ाव है जहाँ स्कूल की किताबों से निकलकर एक नए संसार में प्रवेश करते हैं। यह वह जगह है जहाँ आप न केवल ज्ञान अर्जित करते हैं बल्कि खुद को भी बेहतर ढंग से समझते हैं और भविष्य के लिए तैयार होते हैं। कॉलेज जीवन में आपको स्वतंत्रता मिलती है, लेकिन साथ ही जिम्मेदारी भी। अब आप अपने समय का प्रबंधन खुद करते हैं, अपनी पढ़ाई का रास्ता खुद चुनते हैं और अपनी पसंद के अनुसार गतिविधियों में शामिल होतें हैं। कॉलेज में आपको नए दोस्त मिलते हैं, जो आपके जीवन में एक नई महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आप अलग–अलग पृष्ठभूमी और विचारों वाले लोगों से मिलते हैं, जिससे आपकी सोच व्यापक होती है और आप दुनिया को नए नज़रिये से देखते हैं। कॉलेज में आपको गहन ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलता है। कॉलेज जीवन में आपको खुद को बेहतर ढंग से समझने का मौका मिलता है। आप अपनी ताकत और कमजोरियों को पहचानते हैं। कॉलेज जीवन आपकी भविष्य की नींव बनाता हैं। आप जो कुछ भी सीखते हैं, वह आपके करियर और जीवन के लिए महत्वपूर्ण होता है। कॉलेज जीवन एक ऐसा सफर है जो आपको न केवल ज्ञान एवं कौशल प्रदान करता है, बल्कि आपको एक बेहतर इंसान भी बनाता है। इस सफर का आनंद लें, नई चाजें सीखें, नई दोस्ती करें और अपने भविष्य के लिए तैयार रहें।

सानिया चौहान
बी.ए. द्वितीय वर्ष

मैं महाविद्यालय में क्यों ?

जब हम विचारों के असमंजस में डूब जाते हैं तो अंतरात्मा की ध्वनि हमें राह दिखाती है।
वर्ष 2023 में कक्षा 12वीं का रिजल्ट आया तो मेरी ज़िदंगी ने यू करवट बदली जैसे गिरगिट अपना रंग। ज़िदंगी की शांत धाराओं में विचारों की सुनामी आ गई। किस क्षेत्र में जाऊँ, विषय क्या अपनाऊ एक गंभीर चुनौती बन गई। विकल्प तो अनेकों थे, किन्तु मेरे भीतर की भावनाओं ने महाविद्यालय जाने के लिए प्रेरित किया। हालांकि लोगों से सुनी कॉलेज लाईफ की बातें, तथा अपने आस–पास ग्रेजुएट भाई–बहनों के हालात देख मुझे अपने निर्णय पर शंका भी होती।
महाविद्यालय में प्रवेश करने के बाद अपने निर्णय को लेकर में कभी चितिंत भी हो जाता। धीरे–धीरे दिन बीतते गए। वो स्कूल की तरह प्रतिबंधों का अभाव, नए लोगों से मुलाकात, अपने निर्णय खुद लेना, कॉलेज मेरे लिए एक नया अनुभव था। कक्षा के दौरान अध्यापकों की बातें ध्यान से सुनना तो कभी सुनकर अनसुनी करना, कभी क्लास छोड़कर क्रिकेट खेलना, तो कभी इच्छा न होने पर घर से न आना जैसी लापरवाहियाँ भी इस उम्र में स्वभाविक हैं। किंतु यह भी ज्ञात था कि यह आजादी हमें खुद मुश्किल में भी डाल सकती है। इस विचार को ध्यान में रखते हुए मैंने स्वंय को प्रतिबंधित करते हुए, चहुँमुखी विकास के उद्देश्य से महाविद्यालय द्वारा व्यक्तित्व विकास, कौशल विकास तथा ज्ञानवर्धन के लिए प्रदान किए गए स्वर्णिम अवसरों का लाभ उठाया।
कॉलेज, स्कूली शिक्षा की तरह केवल पठ्न–पाठन नहीं बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। यह वह समय है जब हमें आजादी के होते हुए भी स्वंय को प्रतिबंधित रखना पड़ता है। अतएव कॉलेज लाईफ वह साधना सफर है जो हमें जीने की सही राह दिखाता है। आज मुझे प्रतीत होता है कि उस समय लिया गया मेरा निर्णय उचित था। आज यदि मेरे ज़हन में ऐसे ख्याल आते हैं तो ऐसे विचारों पर पूर्ण विराम लगाने को मैं स्वंय को सक्षम पाता हुँ कि मैं महाविद्यालय में क्यों ?

डाबे राम
बी.ए. द्वितीय वर्ष

हौसला है तो मंज़िल है

जब हौसला बना लिया ऊँची उड़ान का
फिर देखना फिज़ूल है कद आासमान का
ज़िदंगी जीना आसान नहीं होता
जब तक न पड़े हथौड़े की चोट
पत्थर भी भगवान नहीं होता

मंजिल उन्हीं को मिलती है
जिनके सपनों में जान होती है
पंखों से कुछ नही होता
हौसलों से उड़ान होती है।

झुकता वही है जिसमें ज्ञान होता है
अकड़ तो मुर्दों की पहचान होती है
संगीत सुनकर ज्ञान नहीं मिलता
मंदिर जाकर भगवान नहीं मिलता।

पत्थर तो इसलिए पूजते हैं लोग
कि विश्वास के लायक इंसान नहीं मिलता
कुछ इस तरह उस फकीर ने जिंदगी की मिसाल दी
मुट्ठी में धूल ली और हवा में उछाल दी।

हेमलता
बी.ए. द्वितीय वर्ष

शुणा लोको हिन्दी रा महत्व

शुणा लोको हिन्दी रा महत्व, हिन्दी सा ऐंडा विषय
हिन्दी री होआ सा हमेशा विजय हिन्दी एक राज्य री नई पुरे हिन्दूस्ताना री सा
पढ़दै रहा गणित, अग्रेजी ता सा संस्कृत पर हिन्दी रे बगैर सी अधुरा सब कीछ
हिन्दी सभी भाषा री केरा सा रखवाली संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी या हो पंजाबी
हिन्दी विषय सा रा छन्द–अंलकारे सजाऊ हिन्दीए सा म्हारा भविष्य बनाऊ
अगर चाहसी तुहे किछ केरिया रिहाँणा ता हिन्दी भाषा रा ज्ञान बढ़ाणा
आसावे तेवे होणा हिन्दी पांदे नाज तेवे आसा पहनाणा ताज
जैवे होला तुसावे हिन्दी रा पूरा ज्ञान तेवे होणा देशा न तुसरा सम्मान

अनुराग धामी
बी.ए. तृतीय वर्ष

My Three Year Journey in the College

Time flies, and looking back at my three years in college, I realize how much I have grown- both academically and personally. From my first day on campus to my final year, this journey has been filled with learning, friendship, challenges, and unforgettable memories.

The Beginning- Stepping into a New World
Like every student, I stepped into college with excitement and nervousness. The transition from school to college was a big change. New classmates, new and a whole new environment- it was overwhelming at first. But soon, I found myself adapting, making friends, and exploring different aspect of college life.

Avoiding Responsibilities- A Fear of not Being Enough
From the very beginning, I avoided responsibilities- not because I was lazy, but because I feared I wouldn't be able to do them well. I always doubted wheather I was capable enough, this fear held me back from taking initiatives and stepping into leadership roles. However, as time passed I started realizing that avoiding something doesn't make it disappear; facing it does.

Uncertainty about the Future
For a long time, I was unsure about my future. Initially, I wanted to prepare for civil services, but the thought of the preparation, time and intense competition made me hesitate. Later, I considered joining coding classes, thinking it would be a quicker and more stable career path. But thanks to my teachers, who guided me and made me realize my true potential, I am now back to my original goal- preparing for civil services.

My Teacher Once Said
"Your past doesn't matter, but your present decide what your future holds."
These words changed my perspective and I stopped worrying about past mistakes and started focusing on making present better.

Lesson Beyond Books
Academically, these three years have been enriching. The subject I studied not only enhanced my knowledge but also shaped my perspective on life. But more than that, college taught me lessons that textbook could not, such as- teamwork, leadership, patience and the importance of time management.

Being a Class Representative [CR] gave me a unique experience. It wasn't just about representing my classmate; it was about responsibility, communication and problem-solving. This role helped me build confidence and leadership skill that I will carry forward in life.

Challenges and Growth
No journey is complete without challenges. There were moments of stress, especially during exams, assignments, and managing responsibilities but each challenge became a stepping stone towards growth. With the support of my teachers, friends, and self-detemination, I overcame hurdles and became a stronger version of myself.

Memories to Cherish
Beyond studies, college life was full of fun moments - cultural events, group discussions, last-minute exam preparations, and the countless laughs shared with friends. These moments made my college years special and created bonds that will last lifetime.

A New Beginning Awaits
As I step out of college, I do so with gratitude. I am thankful for the experiences, the people I met, and the knowledge I gained. This journey has been a foundation for my future, and while It's bittersweet to say goodbye, I know that new opportunities and challenges await.

Three years ago, I walked into this college as a student who doubted himself. Today I walk out as a person ready to take on the world, with clarity, confidence, and a dream to achieve.

Thank you, to all my teachers for shaping me into who I am today!

Manoj Thakur
B. A. III Year

कॉलेज में विद्यार्थी जीवन

मेरे कॉलेज का नाम "राजकीय महाविद्यालय सैंज" है। कॉलेज का जीवन बहुत ही सुन्दर जीवन होता है। कॉलेज जीवन विद्यार्थियों के सुनहरे पल होते हैं जिसमें बहुत सारी यादें जुड़ी होती हैं। जब मेरा पहला दिन था तो मैं बहुत उत्साहित थी। हमारा कॉलेज बहुत छोटा था क्योंकि हमारा कॉलेज बन रहा है। जब हमारी पहली क्लास हुई थी तो प्रोफेसर राकेश कुमार ने कहा था कि आप सब ये सोच रहे हैं कि कॉलेज छोटा है इसमें कैसे पढ़ाई करेंगें, छोटा रूम है। सभी के मन में ऐसे ही विचार थे। तो उन्होंने एक बहुत अच्छी बात कही थी कि कॉलेज छोटा है या बड़ा है हमें यह नहीं देखना चाहिए। हमें देखना चाहिए कि शिक्षा कितनी बड़ी है और वह हमें किस ऊँचाई तक ले जा सकती है, हमें क्या सीखना चाहिए, क्या त्यागना चाहिए ताकि जो हमारा लक्ष्य है वह प्राप्त हो सके। कुछ भी छोटा या बड़ा नहीं होता। मन में सच्ची लगन होनी चाहिए। उसके बाद मैंने कभी भी अपने कॉलेज को छोटा नहीं समझा। जहां हमें अच्छी शिक्षा मिलती है वह स्थान कभी छोटा नहीं हो सकता।

कॉलेज की पढ़ाई

कॉलेज में तीन वर्ष की पढ़ाई होती है जिसमें आप अपनी मनपसंद के विषय को चुन सकते हैं। सैंज कॉलेज में आर्टस और कॉमर्स के बच्चे पढ़ते हैं। हमारे कॉलेज के सारे विद्यार्थी कुल मिलाकर 200 से अधिक हैं। कम बच्चों के साथ–साथ हमारी शिक्षा, सभी प्रोफेसर, और प्रिंसिपल भी बहुत अच्छी हैं। हमारी प्रिंसिपल, डॉ. सुजाता, की मुझे एक बात लुभाती है कि वह बहुत सादे तरीके से रहती है और उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट रहती है।

कॉलेज फंक्शन

कॉलेज में हर साल कई फंक्शन होते हैं जो विद्यार्थी जीवन को नई दिशा की ओर ले जाते हैं। कॉलेज के फंक्शन में कई गतिविधियाँ होती हैं जिसमें विद्यार्थी बहुत कुछ सीखता है जैसे सड़क सुरक्षा, एड्स दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, हिन्दी दिवस आदि जिसमें सभी बच्चे भाग लेते हैं। हमारे कॉलेज में साल में एक बार NSS Camp भी लगता है।

कॉलेज का सबसे बड़ा समारोह "वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह" होता है जिसका इंतजार सभी विद्यार्थियों को रहता है। इस दिन उनको अपनी मेहनत का फल मिलता है। इस दिन कई गतिविधियाँ करवाई जाती हैं, और बच्चों को अवार्ड दिए जाते हैं। कॉलेज में खेल–कूद की प्रतियोगिता भी होती हैं, जिसमें लड़के, लड़कियों में अलग–अलग गतिविधियां करवाई जाती हैं जैसे क्रिकेट, खोखो, वॉलीबॉल, बास्केटबॉल, फुटबॉल, रेस, हाई जंप, आदि। जिससे मनोरंजन के साथ–साथ उत्साह भी बढ़ता है। कॉलेज से हमें शिक्षा की डिग्री मिलती है और हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है। मेरे तीन वर्ष कब बीत गए मुझे पता ही नहीं चला। मैं इतना कहना चाहुंगी कि कॉलेज जीवन बहुत सुनहरा अवसर होता है। सभी को ये दिन मजे करके बिताने चाहिए क्योंकि यह समय लौटकर कभी नहीं आता। लेकिन कॉलेज का समय मस्ती करने के साथ पढ़ने का भी होता है जहां पर हम अपने भविष्य को उज्जवल बना सकते हैं।

नेहा
बी.ए. तृतीय वर्ष

कॉलेज की यादें

कॉलेज की दीवारें, मेरी यादों की पोटली भर देती हैं। तीन साल का सफर, दोस्तों के साथ बिताए गए पल, प्रोफेसरों की बातें, मेरे दिमाग में गूंजती हैं। होशियार सर के साथ बिताए वो मस्ती वाले पल, प्रेम सर की वो प्रेरक बातें, किताबों की खुशबू, मेरी आत्मा को भिगो देती है। कैंपस की हरियाली, मेरे दिल को ताज़गी देती है। दोस्तों के साथ बिताए गए पल मेरी ज़िंदगी को रंगीन बना देते हैं। शिक्षकों ने हमें ज्ञान की राह दिखाई, हमारे सपनों को पूरा करने में मदद की। आपकी शिक्षा ने हमें मजबूत बनाया और हमारे भविष्य को उज्जवल बनाया, आपकी मेहनत और समर्पण को सलाम, आपकी शिक्षा ने हमें जीवन का मार्ग दिखाया। हम आपके आभारी हैं।

आपकी शिक्षा ने हमें सफलता की ओर बढ़ाया।
धन्यवाद, हमारे शिक्षकों का,
आपकी शिक्षा हमारे साथ हमेशा रहेगी।

गंगा
बी.ए. तृतीय वर्ष

पराशर ऋषि यात्रा का मेरा अनुभव

मैं ईशा कुमारी राजकीय महाविद्यालय सैंज में बी.ए. स्नातक तृतीय वर्ष की छात्रा हूं। हमारे महाविद्यालय में Rover/Ranger नामक संस्था है जो सक्रिय रुप से अपना कार्य कर रही है। इस संस्था द्वारा हमें मण्डी जिला के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल ऋषि पराशर की यात्रा भी कराई गई। इस यात्रा का जो अनुभव मुझे हुआ वो मैं आपके साथ साझा कर रही हूं। यह यात्रा एक दिवसीय थी। महाविद्यालय के रेंजर रोवर के सदस्य तथा अध्यापक वर्ग इस यात्रा के हिस्सेदार बने थे। हमने महाविद्यालय सैंज से बस द्वारा पराशर के लिए प्रस्थान किया और करीब 11 बजे के आसपास हम वहां पहुंचे। वहां की प्राकृतिक सुंदरता का दृश्य देखने योग्य और मनमोहक था। पराशर में मुख्य आकर्षण वहां निर्मित ऋषि पराशर का पैगौड़ा शैली में बना मन्दिर तथा एक प्राकृतिक झील है। इस झील की खासियत इसमें तैरता हुआ एक टापू है, जो इस क्षेत्र की सुंदरता को चार चांद लगा देता है। सर्वप्रथम हमने वहां पहुंच कर ऋषि पराशर के दर्शन किये तत्पश्चात इस दिव्य तालाब की परिक्रमा की। उसके बाद वहां पर हमने मिल–जुल कर भोजन किया और पहाड़ी लोकनृत्य भी किया। पराशर की खुबसूरत वादियों का भ्रमण करने के पश्चात हम सभी अपनी बस में बैठ गए तथा घर की ओर रवाना हो गए।

ईशा कुमारी
बी.ए. तृतीय वर्ष

भारत में बेरोज़गारी की समस्या

आज भारत देश प्रगति की राह पर अग्रसर है। परंतु आज इस राह में बेरोज़गारी देश के सम्मुख एक प्रमुख समस्या है जो प्रगति के मार्ग को तेजी से अवरूध करती है। आज भारत में बेरोज़गार युवक–युवतियों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। स्वतंत्रता के 70 वर्ष पश्चात भी सभी को रोजगार देने के अपने लक्ष्य से हम मीलों दूर हैं। युवाशक्ति की यह बेरोज़गारी राष्ट्र के लिए निरंतर हमारी प्रगति, शांति और स्थिरता में बाधक है।

हमारे देश में बेरोजगारी बढ़ने के अनेक कारण हैं। देश में 90% किसान अपूर्ण और अर्द्ध बेरोजगार हैं जो फसलों के समय व्यस्त रहते हैं और शेष समय उनके पास करने के लिए कोई कार्य नहीं होता। भारत में बेरोज़गारी बढ़ने का मुख्य कारण है– जनसंख्या में वृद्धि। जनसंख्या वृद्धि होने के कारण संसाधनों को जनसंख्या की तुलना में जुटाना बहुत कठिन हो गया है। जिससे देश की अर्थव्यवस्था का संतुलन बिगड़ गया है। आज हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था भी बेरोज़गारी का प्रमुख कारण बनी हुई है। वर्षों से इस में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। जिस कारण शिक्षा प्राप्त करने बाद युवकों को नौकरी प्राप्त नहीं होती।

आज हमारे देश को इस बात की आवश्यकता है कि वे बेरोज़गारी के मूल कारणों की खोज करें और उनके उपाय किए जाएं। महाविद्यालयों में व्यवसायिक, तकनीकी एवं कार्य पर आधारित शिक्षा होनी चाहिए जिससे वे आसानी से नौकरी पा सकें। वर्तमान में सरकार इस बात पर अधिक बल दे रही है कि सभी युवक केवल सरकारी सेवाओं पर आश्रित न रहें। सरकार युवकों की स्वरोजगार के अवसर प्रदान कर रही है। हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा चलाया गया Make in India अभियान इसका एक उदाहरण है।

बेरोज़गारी देश की एक बहुत बड़ी समस्या है। सरकार के द्वारा बेरोज़गारी को खत्म करने के बहुत से कदम उठाए जा रहे हैं। बेराजगारी व्यक्ति की ईमानदारी, सच्चाई और दया का गला घोंट देती है।

अनुराग धामी
बी.ए. तृतीय वर्ष

महाविद्यालय में होने वाली दो दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता

विद्यार्थी जीवन में खेलकूद का बहुत अधिक महत्व है। इसलिए प्रत्येक वर्ष हमारे महाविद्यालय में दो दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन नवंबर– दिसंबर में करवाया जाता है। इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की खेलकूद के प्रति रूचि तथा उनकी प्रतिभा को बाहर लाना होता है तथा इससे उनका शारीरिक और मानसिक विकास भी होता है। इस दो दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता के प्रथम दिन एथलैटिक्स प्रतियोगताएं करवाई जाती है। जिसमें 100 मी. रेस, 400 मी. रेस, मिक्स रिले, भाला फेंक आदि प्रतियोगिता करवाई जाती हैं। खेलकूद प्रतियोगिता जैसे– कबड्डी, वालीबॉल, बैडमिंटन, क्रिकेट, आदि भी करवाई जाती हैं। प्रतियागिता मे प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष की छात्र छात्राओं की अलग–अलग टीम बनाई जाती हैं। पर्ची के माध्यम से निर्धारित किया जाता है कि किन दो टीमों के बीच प्रतियोगिता करवाई जाएगी। इस दो दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों के लिए रिफ्रैशमेंट की व्यवस्था भी की जाती है। प्रतियोगिता के दूसरे दिन दोनों का परिणाम घोषित किया जाता है तथा प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी व उनकी टीम को वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह के दिन सम्मानित किया जाता है।

शालू
बी.ए. द्वितीय वर्ष

निपुण शिविर का अनुभव (R&R)

मैं सौरव नेगी GDC Sainj का विद्यार्थी हूँ। मैं पांच दिवसीय निपुण शिविर का अनुभव आपके साथ साझा करूँगा, जो रिवालसर (मण्डी) में लगा था। इस शिविर में पूरे हिमाचल प्रांत के Rover ने भाग लिया था। इस शिविर में हमारे विद्यालय के पाँच Rover ने भाग लिया था। निपुण शिविर में जाने से पहले हम पांचो Rover को Scout & Guide के बारे में कोई जानकारी नहीं थी कि ये क्या है, ये क्या काम करता है तथा इसकी स्थापना किसने की? जब हमने यह पांच दिवसीय शिविर लगाया तो हमें पता चला कि Scout & Guide का वास्तविक उद्देश्य क्या है। हमें पता चला कि Rover & Ranger का उद्देश्य युवाओं को शिक्षित करना है ताकि वे जिम्मेदार नागरिक बन सकें और समाज कि प्रति संवेदनशील हो। निपुण शिविर में हमें प्राथमिक चिकित्सा, सामुदायिक, आपातकालीन स्थिति मे खतरे में फंसे मनुष्य तथा जीव–जन्तुओं की सहायता करना सिखाया गया। Rover & Ranger समाज की विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामाधान करने लिए निःस्वार्थ त्याग और समर्पण की भावना के साथ व्यक्तिगत एवं संगठित रूप से सेवाएँ प्रदान करते हैं। इसकी स्थापना 1907 ई. में लार्ड वेडेन पॉवेल ने ईग्लैंड में की थी। आज भी Scout & Guide के सदस्य BP6 के आदर्शों पर चलते हैं। Ranger & Rover का आदर्श वाक्य निःस्वार्थ सेवा करना है।

सौरव नेगी
बी.ए. द्वितीय वर्ष

Rover Pre-RD शिविर का अनुभव

मैं प्रेम कुमार ROVER GC Sainj का छात्र हूँ। मैं पांच दिवसीय Pre RD शिविर का अनुभव आपके साथ साझा करूंगा जो रिवालसर (मण्डी) में लगा था। हमारे विद्यालय से 5 Rover और 5 Ranger उस शिविर में गए थे। लेकिन मैं आपको अपना अनुभव बताना चाहूँगा कि Scout & Guide क्या होता है? यह क्या करते हैं? इसका मैंने निपुण शिविर में अध्ययन किया। इसलिए Pre-RD शिविर में मेरा अनुभव बहुत अच्छा रहा। मैंने सीखा कि Rover का उद्देश्य युवाओं को शिक्षित करना है ताकि वे जिम्मेदार नागरिक बन सकें और समाज के प्रति जागरूक हो सकें। इस शिविर में मैंने सीखा कि कैसे अनुशासन में रहकर सभी कार्य करने चाहिए। इस शिविर में मैंने समय का महत्व भी सीखा क्योंकि Pre RD शिविर में सभी गतिविधियां समय पर करनी पड़ती थी। इससे मुझे समय का सदुपयोग करने की सीख मिली। Pre-RD शिविर में सभी ज़िलों के महाविद्यालयों से Rover and Ranger प्रतिभागी आये थे जिनसे बातचीत करके मैंने बहुत कुछ सीखा। हमें उस शिविर में सिखाया गया कि हमें सबके साथ प्रेमभाव से रहना चाहिए। उस शिविर में बताया गया कि जब कोई आपातकालीन घटना जैसे – बाढ़, भूकंप, आग लगना, जैसी घटना घटित हो तो उस समय हमें किस तरह उस परिस्थिति से निपटना चाहिए। Pre RD शिविर का अनुभव बहुत अलग था क्योंकि इसमें मैंने बहुत कुछ सीखा जो मेरी जिंदगी में काम आ सकता है। मुझे बहुत खुशी है कि मुझे Bharat Scout and Guide जैसी संस्था से जुड़ने का मौका मिला जिससे मुझे जिदंगी में बहुत कुछ नया सीखने को मिला।

प्रेम कुमार
बी.ए. द्वितीय वर्ष

पराशर झील के लिए रोवर/ रेन्जर इकाई की एक दिवसीय क्षेत्रीय यात्रा

दिनांक 5 दिसम्बर 2024 को मंडी ज़िले में स्थित पराशर झील के लिए राजकीय महाविद्यालय सैंज की भारत स्काउट्स/गाइड्स इकाई द्वारा एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण आयोजित किया गया। इस भ्रमण का नेतृत्व इकाई के सीनियर/रोवर/रेन्जर लीडर प्रो. प्रेम नेगी एवं डॉ. वंदना ने किया। इस यात्रा में प्रो. प्रदीप कुमार भी सम्मिलित थे। इसमें भारत Scout/Guide Unit से जुड़े लगभग 35–40 छात्र–छात्राओं को घूमाने के लिए 'पराशर झील' लेकर गए जो सैंज से लगभग 82 KM की दूरी पर पड़ता है। हम सभी लागों को सुबह 7:45 तक बस स्टैंड पर एकत्रित होने के लिए कहा गया था। Trip की शुरूआत सुबह 8 बजे 'सैंज बस स्टैंड' से होती है। बस में हम नाचते, गाते, झूमते हुए पनारसा पहुंचे जहां से हमें पराशर जाना था। पनारसा में लगभग 20 मिनट तक बस रूकी क्योंकि हमें अपनी unit के एक छात्र (तनुज) का इंतजार करना था वह कुल्लू से आने वाला था। जब तक हमने उसका इंतज़ार किया तब तक अध्यापकों ने हमें Snacks और Fruits खिलाए। तनुज के पहुंचते ही हम पनारसा से पराशर के लिए रवाना हो गए। घने जंगलों के बीच, हिमालय पर्वतों से, घास के मैदानों से होकर हम गुज़रे। जहां हमें प्रकृति को बेहद करीब से जानने का मौका मिला। पराशर से लगभग 6 कि.मी की दूरी पर हमने बस से बाहर निकलकर एक ग्रुप फोटो लिया। लगभग 11 बजे हम पराशर झील पहुंचे और वहां पहुंचते ही हमने पराशर ऋषि के दर्शन किए तथा झील की परिक्रमा की। उसके बाद फोटो, वीडियो बनाई और पराशर की प्राकृतिक सुन्दरता का आंनद लिया तथा उसके बाद हमने भोजन किया। सभी अपने–अपने घर से स्वादिष्ट और भिन्न–भिन्न प्रकार के पकवान बना कर लाए थे। भोजन करने के बाद हमने काफी मौज–मस्ती और कुल्लवी नाटी की। तत्पश्चात हमने पराशर झील से अपनी बस की ओर प्रस्थान किया। अंतमः 5 बजे हम बस में बैठ गए और मस्ती करते, नाचते–गाते शाम को 7 बजे सैंज बस स्टैंड पहुंचे। इस प्रकार हमारी एक दिवसीय यात्रा समाप्त हुई।

पराशर में की गई कुछ गतिविधयां :

पराशर झील :–

हिमाचल अपनी खूबसुरती, बर्फ से ढके ऊंचे पहाड़ व हरे–हरे मैदानों के लिए जाना जाता है। यहां कई ऐसी झीलें हैं, जो न चाहते हुए भी पर्यटकों का ध्यान आकर्षित कर ही लेती हैं। इनमें से ही हम एक सुप्रसिद्ध झील की बात कर रहे हैं, जो चारों ओर से खूबसुरत पर्वतों से ढकी हुई है। जी हां, हम बात कर रहें हैं–पराशर झील की। यहां सुन्दर नज़ारा व झील के बीच में स्थित टापू इसे और भी खूबसूरत बनाते हैं। झील काफी गहरी है तथा यहां पानी भी सफेद क्रिसटल की तरह एकदम साफ नज़र आता है। पराशर झील हिमाचल प्रदेश के मण्डी जिले में है और यह समुद्र तल से लगभग 2730 मीटर (लगभग 9000 फीट) की ऊंचाई पर है। इस झील में मछलियां भी पाई जाती हैं।

पराशर झील

पराशर का इतिहास :–
माना जाता है कि इस स्थान पर ऋषि पराशर ने बहुत लम्बे समय तक तपस्या की थी और लगभग 630000 वर्षो तक ध्यान करने के बाद वे यहीं देव समाधि में विलीन हो गए थे।

ऋषि पराशर के नाम पर पड़ा झील का नाम :–
ये जगह ऋषि पराशर की तपोस्थली भी कही जाती है और इसी कारण इसका नाम "पराशर झील" पड़ा। ऋषि पराशर मनु ऋषि के पुत्र व ऋषि वशिष्ठ के पोते है। ऋषि पराशर राज परिवार के शाही देवता भी माने जाते हैं। पराशर ऋषि को मण्डी मे सर्वोपरि देवता माना जाता है तथा अन्य देवी–देवता यहां स्नान के लिए आते हैं।

पराशर झील की खासियत :–
इस झील के बीच में एक टापू है जो तैरता रहता है। यह तैरता हुआ टापू इसकी सुदरंता को बढ़ा देता है। इस टापू को टहला कहा जाता है। इधर–उधर टहलते रहने के कारण इसका नाम टहला पड़ा। दूसरी रहस्य की बात यह है कि इस झील की गहराई को आज तक कोई नहीं माप सका। आधुनिक युग होने के बाद भी यह एक आश्चर्य से कम नहीं है। कहा जाता है कि पराशर ऋषि ने तपस्या करने से पहले एक गड्ढा खोदा जिसने धीरे–धीरे झील का रूप ले लिया तथा टहले पर बैठकर ऋषि झील की परिक्रमा करते थे।

पराशर ऋषि को समर्पित मंदिर :–
पराशर ऋषि को समर्पित मन्दिर अत्यंत सुदंर है। इस मंदिर का निर्माण मंडी के राजा बानसेन ने 13–14वीं शताब्दी में करवाया था जिसमें ऋषि पिंडी (पत्थर) के रूप में मौजूद हैं। यह भी कहा जाता है कि पूरा मंदिर एक देवदार के पेड़ का उपयोग करके बनाया गया था और मंदिर के निर्माण में 12 साल लगे थे। यह मन्दिर पगौड़ा शैली में बना हुआ है।

पर्यटन स्थल के अतिरिक्त पराशर का धार्मिक महत्वः–
पराशर एक धार्मिक स्थल है, जहां श्रद्धालु दूर–दूर से पराशर ऋषि के दर्शन के लिए आते हैं। पर्यटन के साथ–साथ पराशर झील का धार्मिक महत्व भी है। हर साल यहां पर आषाढ़ मास की संक्रांति, भादों के कृष्ण पक्ष की पंचमी को विशाल मेलों का आयोजन किया जाता है, जिसमें श्रद्धालु दूर–दूर से आते हैं।

पराशर के प्रसिद्ध मलों का वर्णन –

I.) **सरानाहुली** :– यह मेला जून महीने में पराशर में मनाया जाता है। मान्यता है कि हर वर्ष किसान नई फसल निकलने पर देवी–देवताओं को भोग लगाने के बाद ही इसे ग्रहण करते हैं जिसे चढ़ाने कि लिए हजारों किसान इस दिन अपने–अपने देवता और परिवार सहित यहां पहुंचते हैं। पराशर ऋषि के दरबार में हाजिरी लगाने के बाद भक्त झील की पूरी परिक्रमा करते हैं और क्षेत्र की सुख शांति और सुरक्षा की कार बांधकर अपने घर लौटते हैं।

ii) **ऋषि पंचमी मेला :-**

यह मेला पराशर ऋषि के मंदिर में भाद्रपद की शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है। यह पराशर ऋषि के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है जिस कारण इसे ऋषि पंचमी मेला कहते हैं। दिन को तीन देवता (वरनाग, देव गणपति भटवाड़ी और पराशर ऋषि) पवित्र झील की परिक्रमा करते हूए डुबकी लगाते हैं। रात्रि मंदिर में 'जाग' होम का आयोजन किया जाता है। जहां वरनाग ऋषि और गणपति के गुर आग में दहकते अंगारों के बीच देवखेल करते हुए दैविय शक्ति का दर्शन करते हैं। साथ ही क्षेत्र की सुख, समृद्धि और खुशहाली को लेकर रक्षा कवच भी बांधते हैं।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि इस यात्रा में हमने केवल पराशर झील की प्राकृतिक सुंदरता को नहीं निहारा, बल्कि उसके धार्मिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा शैक्षिक महत्व को भी गहराई से समझा।

कमला देवी
बी.ए. तृतीय वर्ष

Alumni Activities

Swacchata Hi Seva

हिमाचल लोगमत न्यूज़
शिमला > कुल्लू > मंडी > सोलन > कांगड़ा
30-09-2024, सैंज कुल्लू
www.himachallogmatnews.in

राजकीय महाविद्यालय सैंज में "स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा" का आयोजन

17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक मनाया जा रहा "स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा" कार्यक्रम

हिमाचल लोगमत न्यूज़

17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक चलने वाले "स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा" के अंतर्गत राजकीय महाविद्यालय सैंज, कुल्लू में कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नारा लेखन, पोस्टर मेकिंग, भाषण प्रतियोगिता और स्वच्छता रैली का आयोजन किया गया। भाषण प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अपने विचारों को साझा किया। इस प्रतियोगिता में ममता ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि रोहित ने द्वितीय और विजय ने तृतीय स्थान हासिल किया। विद्यार्थियों ने स्वच्छता के महत्व को अपने भाषणों में प्रस्तुत किया। नारा लेखन प्रतियोगिता में ममता ने पहले स्थान पर कब्जा जमाया, जबकि चांदनी और गोविंद क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। छात्रों ने अपने नारे के माध्यम से समाज में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रयास किया। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में अंकिता ने प्रथम, कशिश ने द्वितीय और अनीता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

विद्यार्थियों ने रचनात्मकता का परिचय देते हुए स्वच्छता के प्रति संदेश देते हुए पोस्टर तैयार किए। कार्यक्रम के अंत में, एक स्वच्छता रैली का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के आसपास के क्षेत्र की सफाई की। इसके बाद, सैंज बाजार में भी सफाई अभियान चलाया गया। महाविद्यालय की प्राचार्य, डॉक्टर सुजाता जी ने विद्यार्थियों को स्वच्छता के प्रति विशेष ध्यान देने के लिए प्रेरित किया और कहा कि स्वच्छता केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज के प्रति हमारी प्रतिबद्धता है। इस प्रकार, राजकीय महाविद्यालय सैंज ने "स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा" के अंतर्गत कई सकारात्मक कदम उठाते हुए समाज में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

NSS ACTIVITIES

Section III
Creative Writing and Arts

Welcome to another exciting edition of Creative Writing and Arts – a space where imagination knows no bounds and every idea finds its voice!

As the student writers of 'Creative Writing and Arts', we believe in the power of creativity to inspire, challenge, and transform. Our magazine is more than just a collection of art and writing – it's a platform for expression, a space where every voice has the opportunity to be heard. Through words, images, and stories, we connect with one another and share perspectives that reflect our unique experiences.

In a world that often priorities speed and efficiency, the value of creative expression can sometimes feel diminished. But here, in our magazine, we embrace the quiet power of art to move hearts, spark dialogue, and break boundaries.

Each submission we receive tells a story, whether it's a personal reflection, an imagined world, or an artistic interpretation of our times. The process of creation can be challenging – it requires patience and perseverance. But it's in those moments of struggle that we grow as artists and thinkers.
ed world, or an artistic interpretation of our times. The process of creation can be challenging – it requires patience and perseverance. But it's in those moments of struggle that we grow as artists and thinkers.

I would also like to express my heartfelt gratitude to our respected Principal and teachers for trusting me with the responsibility of being the editor of this section. Their support and encouragement have been invaluable in making this publication a reality.

As we present this issue, I encourage all of you to continue creating and sharing your work. Your art matters, your words matter, and together, we are shaping a legacy of creativity that will live on long after graduation.

Manoj Thakur
B.A. III Year
Student Editor

Carefree Childhood Days

Aryan
B.A. III Year

सुकून

सांसारिक कोलाहल से परे
मंद–मंद घंटियों की ध्वनि
मानसिक शांति और एकाग्रता का
श्रृंगार सा प्रतीत होती है।

ये ठंडी हवा शांति की इस लहर को
इसके ही अंतिम छोर पर ले जाती है,
पेड़ों की छांव को चीरती सुनहरी किरणें
जिंदगी को भी सुनहरा बनाती हैं।

काश ये अनुभूति मैं हर पल महसूस कर पाता
पर शायद मेरे लिए ये भी काफी है।

विजय
बी.ए. प्रथम वर्ष

क्या किया जाए इन लम्हों का

क्या किया जाए इन लम्हों का,
जो कभी पीड़ा दिए, कभी आराम।

न जाने मैं अक्सर क्यों खो जाता हूं
इन अपने बनाए लम्हों में ?
कभी ज़िंदगी में सफलता पाने
तो कभी अपनी ही खुशियों का नामों निशान मिटाने।

कभी सोचूं क्यों जिया जाए इन लम्हों को,
तो कभी अगर जिया जाए तो
कैसे जिया जाए इन लम्हों को?

ये लम्हें भी बड़े अजीब हैं,
जब पीड़ा दिए तो अनंत दिए
जब प्रसन्नता दिए तो फूले न समाए।

विचार करता हूं क्या जिया जाए इन लम्हों को
या जाने दिए जाए इन लम्हों को ?
शायद ये ही ज़िंदगी है मुसाफिर
अगर जिया जाए तो जिया जाए इन लम्हों को।

विजय
बी.ए. प्रथम वर्ष

प्रेम सार –मोह व्यभिचार

" प्रेम मोह में अंतर गहरा है,
जैसे धरती–अम्बर के बीच हवा का पहरा है"

" मोह पाने की चाह है,
प्रेम त्याग की राह है"

" प्रेम एक बार है ,
मोह बार–बार है"

" प्रेम एक बहार है,
सुख–दुःख का सार है"

" मोह व्याभिचार है,
खुशियों का संहार है"

" प्रेम एक वरदान है,
जो कर जाने वो महान है"

" मोह अभिशाप है,
पापों का संताप है "

" प्रेम है एक से,
मोह है अनेक से"

" प्रेम ईश्वर का रूप है,
मोह काल का दूत है"

" प्रेम आत्मा का स्वरूप है,
गंगा के समरूप है"

" मोह मन का मैल है,
विष सा विषैल है"

" प्रेम स्वर्ण–कंचन है,
मोह कंकर–पाषाण है"

" प्रेम त्याग समर्पण है,
मोह चाह का दर्पण है"

" प्रेम तो अपार है,
मोह का न सार है।"

विजय
बी.ए. प्रथम वर्ष

My Experience with Riding a Bike

Riding a bike has been one of the most thrilling and liberating experiences of my life. The feeling of wind rushing past, the freedom to navigate through traffic, and the convenience of quick travel make it an unmatched mode of transportation.

However, biking is not just about speed and excitement– it also requires caution and responsibility. Riding in heavy traffic, facing unpredictable weather and ensuring safety with proper gear have all been learning experiences for me. Every ride teaches me patience, awareness, and the importance of road discipline.

Despite the challenges, my bike remains my favorite companion on the road- whether it's a short trip to college or a long ride to escape the valley, the journey is always exciting. Riding a bike is not just about getting from one place to another—it's about enjoying the ride itself.

Arun Thakur
B.A. III Year

The Unseen Battle: A Journey of Strength and Survival

She was the girl everyone admired—the topper, the perfectionist the one who never failed with a shining academic record and a promising future, it seemed like she had it all. But what people didn't see was the battle she fought every single day—the silent war against stress, disappointment and self doubt.

The weight of expectations was suffocating. Her family's pride in her success felt more like a burden than an achievement. She was never allowed to fail, never given a moment to breathe. Even when she stood victorious, a part of her felt exhausted, lost in a world where being "good enough" was never "truly enough".

Then came the unexpected twist—a spark of rebellion in the form of a game. Not a challenge from textbooks or exams, but a battle in the virtual world. She secretly started learning to play that game, not for herself, but for someone she loved. Her relationship was the one place where she felt truly seen—not as a topper, not as someone who had to prove herself, but as a person who was loved for who she was. She found joy in the little things. The way he believed in her even when she doubted herself, and the small moments of happiness kept her going. But life had its way of testing her. The stress soon manifested in ways she couldn't ignore; acne, weakness, sleepless nights—her body started showing signs of a war her mind was too stubborn to acknowledge. Looking in the mirror, made her feel insecure.

Was success worth it if it came at the cost of her own well being? Then, in the midst of all this chaos, there was one person who changed everything—her professor, a woman of wisdom and strength, she was more than just a teacher. She was a guiding light, someone who saw beyond the grades and into the soul. "You don't have to be perfect to be remarkable," the professor once said. Those words stayed with her, echoing in the quiet corners of her mind. For the first time, she felt like she had permission— to make mistakes and to simply be herself.

That's when she made a choice—to fight back, not against the world but against the weight she had carried for too long. She started embracing her flaws, prioritizing her health, and rediscovering her passion for art and music. Slowly, she realized that true success wasn't just about grades or achievements—it was about balance, about finding joy in the little things.

And so, she walked forward—not as the girl who never failed, but as the girl who learned to rise, again and again. Because in the end, life isn't about perfection. It's about resilience, about standing tall despite the storms, and about rewriting your own story when the world tries to write it for you.

"Success is not just about never falling, but about rising every time life tries to break you."

Ankita
B.A. I Year

काश मैं, मैं न होता

“कर जाता हूँ गलतियाँ बहुत सी
जिन्हें सुलझाना मेरे हाथ में न था
अगर हम पास होते तो भ्रमणायें बहुत सी मिट जाती,
काश मैं, मैं न होता तो बात आज कुछ और ही होती,
तुम मेरे होते प्रिए और ये जिंदगी खुशहाल सी
होती।।

अधूरा बनाकर मुझे भेजा इस दुनिया में,
फिर भी दोष अपने आप को देता रहा,
मैं तो अधूरा ही था प्रिए
फिर मेरा हर काम कैसे पूरा होता,
काश अगर मैं, मैं न होता
तो आज बात कुछ और ही होती,
तुम मेरे होते प्रिए और ज़िंदगी ये खुशहाल सी होती।।

यादों के सहारे जी तो लूंगा मगर,
संग संग रह कर, सुख दुःख सह कर,
पूरी ज़िंदगी हम अपनी साथ बिताते,
पर खैर काश मैं, मैं न होता
तो आज बात कुछ और ही होती,
तुम मेरे होते प्रिए और ज़िंदगी ये खशुहाल सी होती।।

अफसोस है तुम्हें न पाकर भी खोने का बहुत
लेकिन अगर तुम्हें पाकर खोया होता तो
शायद आज ये ज़िंदगी, ज़िंदगी नहीं जहन्नुम होती,
काश मैं, मैं न होता
तो बात आज कुछ और ही होती
तुम मेरे होते प्रिए और ज़िंदगी ये खुशहाल सी
होती।।

उम्मीद है तुम्हें भविष्य में पा जाने की
और पा जाने के बाद कभी न खोने की,
लेकिन एक बात याद रखना प्रिए
भावना ये प्रेम की तुमसे थी, तुमसे है
और हमेशा तुमसे ही रहेगी,
काश मैं, मैं न होता तो बात कुछ और ही होती
तुम मेरे होते प्रिए
और ज़िंदगी ये खुशहाल सी होती।।

विजय
बी.ए. प्रथम वर्ष

Even Love Change

Seasons change, people do too
They appear in your life
cherry blossom, soft like petals.
Beautiful as wandering colourful butterflies,
Fragrant flowers mesmerizing garden full of garlands.

Spreading love threads everywhere
Love envoy bees send love messages
Gets nectar in exchange
Aware of truth still pretend,
Still ignore their loss.

Finally, reality comes with numerous stings
Taking revenge for each nostalgia
Soft petals shrink, become museum antiques
Only thorns remain giving innumerable stings.

Colourful butterflies disappear
Colours fade, everything become transparent
no lies, no pretention
Truth, truth everywhere
Piercing pain without wounds.

Autumn swallow cherry blossom
No! truth swallow pretentious lies.

Victory
B.A. I Year

चंद्रभागा

मैं चंदा की चंद्रा
तुम सूर्य के भागा प्रिए,
तुम रवि से तपते
मैं चांदनी सी शीतल प्रिए।

तुम आदित्य से तेजवान
मैं सोम सी सोमवान प्रिए,
जब तोड़े हमने सारे बंधन
बने तुम चंद्रा के भागा और
मैं भागा की चंद्रा प्रिए।

है हम दोनों में प्रेम अपार
और पवित्रता गंगा सी प्रिए,
सुख–दुःख के धागे जोड़ हुआ संगम हमारा प्रिए
डूब तुम्हारे अनंत प्रेम में पा ली मैने विजय प्रिए।

देव कहते थे प्रवृति से परे प्रेम न होगा,
पर हो कर एक तोड़े हमने सारे रीति–रिवाज प्रिए।
जब हुआ संगम हमारा
बने हम अस्किनी–चंद्रभागा प्रिए।

विजय
बी.ए. प्रथम वर्ष

ज़िंदगी

भगवान की सुंदर भेंट है ज़िंदगी,
सुख–दुःख दोनों समावेश हों जिसमें
वो रोमांचक सफर है ज़िंदगी।

खुशी के हर पल को जी भर कर जीना है ज़िंदगी,
लाखों गमों में भी उस खुशी का इंतजार है ज़िंदगी।

थक हार कर नई शुरुआत करना
वो इक नई उम्मीद है ज़िंदगी,
उम्मीदों पर खरे उतरकर किसी का
मन जीतना वो विश्वास है ज़िंदगी ।

अथक प्रयासों के पश्चात
मिलने वाली विजय है ज़िंदगी,
अपनी–सबकी जिंदगी में खुशियों
के रंग बिखेरना वो त्यौहार है ज़िंदगी।

दया पथ पर चल मदद करना
वो जग–जौनार है ज़िंदगी,
सुख–दुःख में जब अखियाँ बतलाए
वो पहली बरसात है ज़िंदगी।

अंत में चीर निंद्रा में सामा जाना
वो शांति का प्रतीक है ज़िंदगी।।

विजय
बी.ए. प्रथम वर्ष

The Mountain and Me: A Story of Ego and Destiny

There is a mountain that has stood outside my window since my childhood. Every day, I have looked at him, and in his silent majesty, he has looked back at me. At first, he was just a part of the landscape, a familiar shape against the sky. But over time, he became something more—a presence, a challenge, almost a rival. Somewhere along the years, we developed an ego problem.

The mountain stood tall, unmoving, as if mocking my ambitions. He seemed to whisper, "You will never reach me." And I, in return, would gaze at him with a quiet defiance, thinking, "One day, I will." But time passed, and life got in the way. The dream of reaching the mountain's end, remained just that—a dream.

But one day will come when I decide enough is enough. I will wake up early, something I rarely do. On that morning, I will do things differently. I usually don't drink coffee in the morning, but on this day, I will. I will sit by the window, cup in hand, looking at the mountain not as an impossible challenge, but as a destination. Then, I will walk to my car—not just any car, but the one I have always dreamed of owning. The engine will roar to life, echoing my determination. The road will stretch before me, winding toward the mountain, and I will follow it without hesitation.

As I drive, the mountain will no longer seem so distant. The closer I get, the smaller he will appear, and I will realize that he was never as intimidating as I once thought. It was my own hesitation, my own fear, that made him seem so vast.

Finally, I will reach the end of the road, at the foot of the mountain. I will step out, stand there, and look up at him. Perhaps he will still look down at me with his silent pride. But I will smile, because on that day, it will no longer be a battle of egos. It will be a meeting of two old acquaintances—one who stood firm, and one who finally arrived.

And maybe, just maybe, the mountain will nod in quiet approval.

Rahul Thakur
B.A. II Year

The Stock Market: A Game of Risk Reward and Strategy

The stock market is like a giant chessboard—every move matters. Some see it as a thrilling way to build wealth, while others fear its unpredictability. In my view, it's not just about luck; it's about strategy, patience, and a deep understanding of the game. Investing in stocks isn't a shortcut to riches. It requires research, discipline and the ability to stay calm during market swings. Many beginners jump in based on hype or advice from others, only to face losses. The key is to invest wisely—study the companies. understand market trends, and think long term. I find the stock market fascinating because it teaches real life lessons. It sharpens decision making, builds patience, and shows that success isn't about winning every trade but making the right choices over time. Yes, the market has risks, but that's what makes it exciting! If approached with knowledge and a clear strategy, it can be one of the best ways to grow wealth. The thrill of watching your investments grow or learning from setbacks makes the stock market more than just numbers—it's a dynamic world of opportunities waiting to be explored!

Anuj
B.A. III Year

The College Friends I Met

Starting college was a new and exciting journey, but what made it truly special were the amazing friends I met along the way. Each one brought something unique into my life—some became my study partners, others my late night adventure buddies, and a few turned into my closest confidants.

From sharing notes to sharing dreams, we've laughed through silly moments and supported each other through tough times. Whether it's group projects, friendly gossip, or last minute exam prep, every experience feels more meaningful with them by my side.

These friendships have not only made college life enjoyable but have also taught me valuable lessons about trust, support, and companionship. No matter where life takes us, I know these bonds will always hold a special place in my heart.

Ansh Soni
B.A. III Year

Nauvari Saree: Pride of Maharashtra

The Nauvari Saree, also known as the nine yard saree, is a vibrant symbol of Maharashtra's rich cultural heritage. Traditionally worn by Marathi women, it reflects strength, grace, and a deep connection with tradition. Originating during the era of the Maratha Empire, this unique drape was designed for ease of movement, making it both elegant and practical. During the annual celebration, I wore this saree to showcase its timeless beauty. The bold colours, intricate gold zari work, and elaborate patterns added a regal charm to the event. The look was complemented by traditional jewellery, including the nath (nose ring), green glass bangles,and a pearl necklace. What makes the Nauvari Saree stand out is its distinctive draping style, resembling a dhoti, symbolizing empowerment and resilience. It is worn during festivals, weddings, and cultural ceremonies.

Anchal
B.A. II Year

The Power of Small Habits

Success is often thought to come from big, bold actions. However, the truth is that small, consistent habits shape our lives more than we realize. Whether it's reading for 10 minutes a day, exercising for a few minutes, or drinking enough water, these little actions add up over time.

Imagine if you improved just 1% every day. While that may seem insignificant, over a year, these tiny improvements compound into something remarkable. The key is consistency. Instead of waiting for motivation, building habits ensures progress even when you don't feel like it.

Start small. Pick one habit today—perhaps waking up 10 minutes earlier, writing down three things you're grateful for, or limiting screen time before bed. Over time, these small actions can lead to a big transformation in your life.

Himani Thakur
B.A. I Year

हिन्दी साहित्य का उजाला

हिन्दी साहित्य का उजाला,
इतिहास में बसा एक निराला सितारा।
कबीर की गूंज में संतों की डोर,
दर्द भरी बातों में सच्चाई का शोर।

तुलसी के शब्दों में भक्ति का रंग,
सूरदास की मधुरता, सपनों का संग।
कविताओं में बसी मानवता की पुकार,
हर पंक्ति कहती है जीवन का आदान–प्रदान।

समय की धारा में बदलते रंग,
पर साहित्य की धूप है अमर उमंग।
हर कविता में इतिहास का प्रकाश,
हिन्दी साहित्य से हमें मिलती है नई आस।

आओ मिलकर सुनाएं हम कथा को,
जहां शब्दों में है विश्वास का जोश।
हिन्दी साहित्य की अमर धारा,
हमारी पहचान, हमारा अभिमान।

किरन
बी.ए. द्वितीय वर्ष

A Trek to Remember: Exploring the Great Himalayan National Park

Nestled in the lap of the Himalayas, the Great Himalayan National Park (GHNP) is a paradise for nature lovers and adventure seekers. My recent trek to this UNESCO World Heritage Site was an unforgettable experience, filled with breathtaking landscapes, diverse wildlife, and the serenity of untouched nature.

The Journey Begins

The trek started from Gushaini, a quaint village in Himachal Pradesh, known as the gateway to GHNP. As we walked through dense forests of oak and pine, the crisp mountain air filled our lungs, and the distant sound of gushing rivers created a soothing rhythm.

Nature at its Best

Every turn in the trail unveiled a new wonder—majestic waterfalls, blooming rhododendrons, and an occasional sighting of exotic birds. The national park is home to rare species like the Western Tragopan, Himalayan Tahr, and even elusive Snow Leopards. Though we didn't spot the big predators, the sheer presence of such rich biodiversity made the trek even more exciting.

Challenges and Rewards

Trekking through steep trails and rocky terrains was no easy feat, but the stunning views of the snow-capped peaks and lush valleys made every step worth it. As we camped under the starlit sky, the silence of the mountains wrapped us in peace, far from the chaos of city life.

A Journey to Remember

Visiting GHNP was more than just a trek; it was a journey of self-discovery, endurance, and deep appreciation for nature. The untouched beauty of this Himalayan gem left an imprint on my heart, reminding me that true adventure lies in exploring the wild, one step at a time.

Lalit Chauhan
B.A. III Year

रात और विचार

क्यों रात में हमारे विचार गहरे हो जाते हैं?
रात का अंधेरा आते ही दुनिया धीमी हो जाती है, लेकिन हमारे विचार तेजी से दौड़ने लगते हैं। दिनभर की हलचल शांत होते ही हमारा दिमाग उन बातों पर सोचने लगता है, जिन्हें हम पूरे दिन नजरअंदाज करते आए हैं।

रात विचारों की प्रयोगशाला
दिन के समय हम बाहरी दुनिया में इतने व्यस्त रहते हैं कि खुद से बात करने का समय ही नहीं मिलता। लेकिन रात, जब सबकुछ शांत होता है, तब हमारे दिमाग में दबी हुई भावनाएँ, अधूरे सपने और अनसुलझे सवाल सतह पर आ जाते हैं।

अकेलापन या आत्मविश्लेषण
रात के समय लोग अक्सर गहरी बातें सोचते हैं, अपने फैसलों पर विचार करते हैं, भविष्य की कल्पना करते हैं या पुरानी यादों में खो जाते हैं। कुछ के लिए यह आत्मविश्लेषण का समय होता है, तो कुछ के लिए अकेलेपन का अहसास बढ़ जाता है।

रचनात्मकता का समय
कई लेखक, कवि, और कलाकार रात में ही सबसे अधिक प्रेरित महसूस करते हैं। अंधेरे की शांति और भीतर की हलचल मिलकर नए विचारों को जन्म देती है। यही कारण है कि कई महान रचनाएँ रात में लिखी गई हैं।

निष्कर्ष
रात हमें खुद से जुड़ने का मौका देती है। यह हमारे भीतर छुपे विचारों और भावनाओं को उजागर करने का समय होता है। इसलिए रात के विचार हमेशा गहरे और अर्थपूर्ण लगते हैं।

सूरज मियां
बी.ए. तृतीय वर्ष

सफर दोस्ताने का

दोनों बहुत समय बाद मिल रहे थे। काफी समय दूर रहने के कारण, मिलते ही एक–दूसरे को गले लगा लेते हैं और साथ बैठकर ढेर सारी बातें करने लगते हैं। बातों ही बातों में कहीं घूमने जाने जैसा अहसास होता है,
और वे दोनों नदी के उस पार वाले झरने पर जाने पर सहमति जताते हैं, जो कि लगभग पाँच किलोमीटर दूर था।
साथ में अधिक समय बिताने के लिए वे बस में न जाकर पैदल ही चल पड़ते हैं।

उन्हें यह अंदाजा नहीं था कि एक अप्रत्याशित चुनौती उनका इंतजार कर रही है।

जगह पर पहुँचने से पहले ही, वे देखते हैं कि आगे का रास्ता कुछ समय पहले आई बारिश की वजह से क्षतिग्रस्त हो चुका है। कुछ देर दाएँ–बाएँ देखने के बाद, जब कोई दूसरा रास्ता नहीं मिलता, तो वे नदी पार करने की कोशिश करते हैं और एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूदते हुए आगे बढ़ते हैं। अपने चारों ओर का सुंदर दृश्य देखते हुए, दोनों कुछ रोमांच महसूस करने लगते हैं –जो कि उनकी सबसे बड़ी गलती बन जाती है।

इतने में उनके बीच यह बातचीत होती है:

कार्तिक: आर्यन, सुनो..... मुझे लग रहा है पानी बढ़ रहा है।

आर्यन (कंधे उचकाते हुए): नहीं, नहीं तो....

कार्तिक: मुझे लगता है अब हमें वापस लौट जाना चाहिए।

(दोनों एकमत होकर आगे बढ़ने लगते हैं)

कार्तिक (हल्की मुस्कान और घबराहट के साथ): आर्यन, मैंने तुमसे कहा था, पानी बढ़ रहा है.... वो देखो, जिन पत्थरों से होकर हम आए थे, वे डूब चुके हैं!

आर्यन (आश्चर्य से): हाँ, तुम सही कह रहे थे.... हमें तुरंत नदी पार करनी होगी।

अब दोनों घबराहट में जल्दी–जल्दी रास्ता खोज रहे थे, क्योंकि पानी तेजी से बढ़ता जा रहा था। दोनों काफी घबरा चुके थे।

आर्यनः वो देखो शायद उस पत्थर से कूदकर हम किनारे तक पहुँच सकते हैं! चलो, जल्दी करो!

कार्तिकः आ रहा हूँ अब उड़कर तो नहीं आ सकता ना?

आर्यन बिना देर किए सामने वाले पत्थर की ओर छलाँग लगाता है, लेकिन उसका पैर फिसल जाता है। वह संतुलन खो बैठता है और तेज बहती नदी में गिर जाता है।

कार्तिक (हक्का–बक्का होकर चिल्लाता है) : आर्यन! आर्यन!!
वो बस देखता रह जाता है – आर्यन बहते हुए पानी में झटपटाता है, लेकिन खुद को संभालने की कोशिश करता है। क्षण भर भी सोचे बिना, कार्तिक भी नदी में छलाँग लगा देता है।

तेज धार उन्हें दूर तक बहा ले जाती है। दोनों लहरों से संघर्ष करते हैं – कार्तिक किसी तरह एक किनारे की ओर तैरता है, जबकि आर्यन नदी के बीच एक चट्टान के पास अटक जाता है।

भीगते, काँपते हुए, कार्तिक मुश्किल से नदी किनारे पहुँचता है। वो चारों ओर कुछ तलाशता है और दूर एक छोटे–से मकान की ओर दौड़ता है। वहाँ उसे एक बच्ची दिखती है – वो उसी से मदद माँगता है। बच्ची उसे घर से एक पुरानी रस्सी लाकर देती है।

कार्तिक वापस आता है, आर्यन की ओर रस्सी फेंकता है और चिल्लाता है –
"पकड़ो! कसकर पकड़ो!!"

आर्यन, बमुश्किल रस्सी पकड़ पाता है।
कार्तिक पूरी ताकत लगाकर रस्सी खींचता है।

कई मिनटों के संघर्ष के बाद, आखिरकार आर्यन बाहर निकल आता है।
भीगी मिट्टी पर गिरते ही, दोनों एक–दूसरे को देखते हैं – पहले घबराहट से, फिर मुस्कान में बदलती हुई राहत से।

दोनों थके हुए, मगर सुरक्षित।

कार्तिक धीरे से कहता है –
"मैंने कहा था, पानी बढ़ रहा है....."

आर्यन हँसते हुएः
"और मैंने सुना नहीं.... शुक्र है तूने हार नही मानी।"

वे दोनों एक–दूसरे को गले लगाते हैं, और ढलती सूरज की किरणों के साथ, चुपचाप घर की ओर लौट पड़ते हैं।

विनीत एवं विनोद
बी.ए. प्रथम वर्ष

जंगल का वो सफर

ये घटना आज से 10–15 साल पहले की है, जब अमित के मामा रात के अंधेरे में अपने गाँव लौट रहे थे। उस समय सड़कों की सुविधा ना होने के कारण उन्हें जंगल के रास्ते से जाना पड़ता था। यह रास्ता लंबा और सुनसान था, जहाँ रात में सन्नाटा डरावना लगता था। लेकिन चूँकि अमित के मामा अक्सर इस रास्ते से आते–जाते थे, उन्हें डर नहीं लगता था।

अचानक कुछ अजीब दिखा...

उस रात घना अंधेरा था, बस चाँद की हल्की रोशनी पेड़ों की शाखाओं पर पड़ रही थी। अमित के मामा धीरे–धीरे चल रहे थे कि तभी उन्होंने सामने एक पेड़ की ऊँची टहनी पर कुछ लटकता हुआ देखा। पहले तो उन्हें लगा कि ये उनकी आँखों का धोखा है, लेकिन जब उन्होंने गौर से देखा, तो उनकी रूह काँप उठी।

वहाँ एक लड़की की लाश झूल रही थी!

उसके लंबे काले बाल हवा में उड़ रहे थे, और उसका चेहरा सफेद और निर्जीव था। ठंडी हवा के झोंके के साथ उसकी लाश धीरे–धीरे आगे–पीछे हिल रही थी, मानो किसी ने अभी–अभी उसे फाँसी पर लटकाया हो। अमित के मामा ने हिम्मत जुटाई और पेड़ के करीब जाकर देखा।

लाश को नीचे उतारा हालाँकि वह डर चुके थे, लेकिन हिम्मत करके उन्होंने लड़की की लाश को नीचे उतारने का फैसला किया। जैसे ही उन्होंने लाश को छुआ, एक ठंडी लहर उनके शरीर में दौड़ गई। अजीब बात ये थी कि लाश पूरी तरह हल्की लग रही थी, जैसे उसमें कोई जान ही ना हो।

गाँव की ओर जाने का रास्ता लंबा था, और मामा को लगा कि गाँव वालों को बुलाने से अच्छा है कि वे खुद ही लाश को अपने कंधे पर उठाकर ले जाएँ। उन्होंने लड़की की लाश को अपने कंधे पर रखा और गाँव की ओर चल पड़े।

भयावह मंजर

कई किलोमीटर चलने के बाद, अमित के मामा थक चुके थे। उन्हें प्यास लगने लगी थी, और उन्होंने सोचा कि थोड़ी दूर बहते हुए पानी के पास जाकर पानी पी लें। उन्होंने लड़की की लाश को जमीन पर रखा और पानी की ओर बढ़ गए। लेकिन जैसे ही वे पानी के पास पहुँचे, उन्होंने जो देखा, उससे उनकी चीख निकल गई—

लड़की की लाश पहले से वहाँ बैठी थी और झुककर पानी पी रही थी! उसके लंबे बाल पानी में लटक रहे थे, और जैसे ही उसने अपना चेहरा ऊपर उठाया, मामा की आँखों के सामने अंधेरा छा गया। उसकी आँखें काली और गहरी थीं, और उसके होंठों पर हल्की मुस्कान थी... एक खौफनाक मुस्कान! अमित के मामा यह दृश्य देखकर जमीन पर गिर पड़े और बेहोश हो गए। जब उन्हें होश आया, तो गाँव वाले वहाँ पहुँच चुके थे। लेकिन आश्चर्य की बात ये थी कि लड़की की लाश वहीं जमीन पर पड़ी थी, ठीक उसी जगह जहाँ उन्होंने उसे छोड़ा था।

अनसुलझी गुत्थी

गाँव वाले यह सुनकर सन्न रह गए। कोई नहीं जान पाया कि मामा ने जो देखा, वह सच था या किसी आत्मा का छलावा। लेकिन इस घटना के कुछ सालों बाद ही अमित के मामा की रहस्यमय तरीके से मौत हो गई।

आज भी जब अमित की माँ यह कहानी सुनाती हैं, तो सुनने वाले काँप उठते हैं। गाँव के बुजुर्ग कहते हैं कि उस जंगल में आज भी कोई भटकता है, शायद वही लड़की जो अब भी किसी राहगीर का इंतजार कर रही है!

मनोज
बी.ए. तृतीय वर्ष

Oliver Twist: A Summary

Oliver Twist is a young orphan born in a workhouse in a small-town of England. His mother dies shortly after his birth and he grows up under hard conditions. As a boy, Oliver faces neglect and mistreatment which leads him to escape to London in search of a better life.
In London, Oliver meets a group of pickpockets led by the cunning Fagin. He is introduced to the criminal underworld and becomes involved with them. However, Oliver is innocent and unaware of their illegal activities. He befriends a boy named Artful Dodger and a kind hearted young woman, Nancy, who feels sympathy for him. Throughout the story, Oliver is caught between the evil influences of Fagin, the kind-hearted Mr. Brownlow, and the corrupt Bill Sikes. The plot reveals the stark contrast between the cruelty of the lower-class criminals and the compassion of those who try to help him.
Oliver ultimately, discovers that he has a noble heritage and with the help of Mr. Brownlow he escapes from the dangerous world of crime. The story ends with Oliver finding a loving home, surrounded by those who care for him.
Charles Dickens wrote *Oliver Twist* to expose the harsh realities faced by the poor and orphaned children in Victorian England, while also highlighting themes of innocence, social injustice and the power of compassion.

Pooja Thakur
B.A. II Year

Letting Go

In the quiet space where memories reside
A lesson learned, as I turn aside
Letting go, a journey to unbind
Embracing freedom, leaving behind.

The weight of what was a heavy load
A bit of sweet farewell, emotions flowed
Like leaves in autumn, I release the past
A chapter concluded, a dye is cast.

No more clinging to what once was mine
A new horizon, a chance to redefine
In the tapestry of home, threads left loose
A metamorphosis like a sacred truce.

The echoes of yesterday slowly fade
As I step into my future, unafraid
Letting go, not an end but a start
A healing journey of the soul and heart.

In the tender release of what is hold tight
I discover the dawn after the darkest night
Letting go, a whisper in the wind
A path to myself, where new beginnings begin.

Nisha Thakur
B.A. III Year

The Strength Within

In the quiet of night, when doubts arise,
A spark of light will fill the skies.
Within your heart, so deep and true,
Lies a strength to see you through.

When the road is rough, the path unclear,
Know that courage is always near.
With each step, with each new day,
The obstacles will forge away.

For you are more than you can see,
A force of nature, wild and free.
So, lift your head, embrace the fight,
And let your spirit take no fright.

The world awaits your brightest glow,
The seeds of greatness you will sow.
In every challenge, find your grace,
For you were born to leave a trace.

Pooja Thakur
B.A. II Year

Listen Dear Self

Listen to the wind as it whispers your name
its soft touch brushes against your mane
for some odd reason it wipes away your pain.

Sometimes it seems as if life is a big game
with lots of sorrow, suddenly it starts to rain
amidst of it all, be sure you are not insane
still, happiness runs through your veins!

Simran Thakur
B.A. I Year

Dept. of English Activities

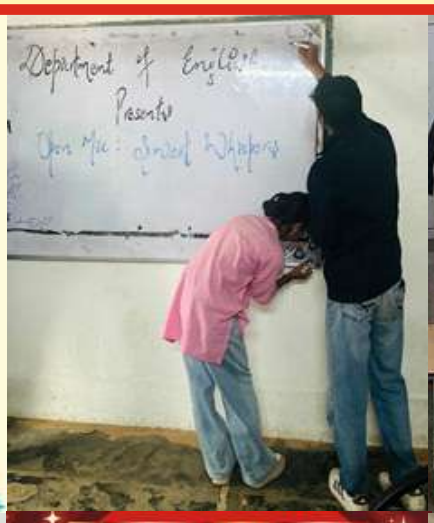

Dresses of India

Eco Club Activities

Section IV
Academic Insights

Dear Readers,

It gives me great pleasure to welcome you to the *Academic Insights* section of our college magazine. This space brings together the thoughtful efforts of students who have explored ideas with clarity, curiosity, and determination.

We live in a time where information is abundant and easily accessible. But having access to facts is not enough. What truly matters is how we understand, connect, and apply that knowledge. This section reflects that aim—encouraging us not only to learn but to think independently and critically.

A strong academic foundation does not come from memorizing content alone. It grows when we question, when we explore different perspectives, and when we're willing to challenge what we already know. This mindset not only strengthens our studies but prepares us for careers and challenges beyond college.

The articles featured here are diverse in subject but united in spirit—each one shaped by inquiry and effort. I applaud all contributors for their dedication and encourage every reader to engage with these pieces thoughtfully.

Let your academic journey be about more than grades—let it be about growth.

In pursuit of wisdom,
Tushar Chauhan
B. Com. III Year
Student Editor

Value of Time

To know the value of one year, ASK the student
who has failed in his examination.
To know the value of one month, ASK the mother
who has delivered a premature baby.
To know the value of one day, ASK the cricket
team which has lost the match.
To know the value of one minute, ASK the
person who has come late for his interview.
To know the value of one second,
ASK the person who has missed his train.
So, time is extremely precious don't waste it.

Tushar Chauhan
B.Com. III Year

Important Factors for Student's Success

Success in school, it's no mystery
A dance of factors, both big and gritty
Internal forces play their part
While external ones are close to heart.

Internal Factors:
Motivation fuels the drive to grow
A burning desire to learn, to know.
It sparks the will to chase the dream
To chase the future, and to gleam.

Self-discipline a sturdy guide
With time well-managed, we take it in stride.
Organized, we rise above
Studying with focus, and dedication's love.

Resilience, when times get tough
Bouncing back when the road gets rough.
Through setbacks, failures, stress, and strain
We find the strength to rise again.

Goal-setting, clear and bright
Measurable goals in sight
With purpose in every step we take
We climb the ladder, for success's sake.

Learning styles, unique and true
Adapting, changing, as we pursue.
Understanding how we learn best
We strive for progress; we do not rest.

External Factors:
A supportive environment, a guiding hand
Family, peers, teachers, they understand.
Encouraging words, a steady guide
With their support, we're filled with pride.

Quality education, a powerful tool
Experienced guides, facilities cool.
Resources abound, we take the chance
In the classroom, we advance.

Mentorship, a path well lit
Experienced guides who never quit.
Their wisdom shared, a steady light
In their guidance, we take flight.

Extracurricular, a world to explore
Sports, clubs, or volunteering, so much more.
Learning skills beyond the books
Growing passions, taking looks.

Networking, connections that grow
Peers and professionals, all in the know.
Opportunities to meet and share
Building bridges, a future fair.

Success, a blend of all these things
Internal drive and external wings.
Together, they guide the way
Shaping students to seize the day.

Diksha Chandni
B.Com. I Year

Role of Research for Commerce Students

In Himachal's heart, where the mountains rise,
Technology opens up new skies.
Transforming classrooms, the digital age,
A new chapter written on education's page.

Bridging Gaps Across the Land:
From Shimla's peaks to Kullu's green,
Tech brings learning where it's been unseen.
In remote villages, once far and wide,
Now students access knowledge with tech as their guide.

Online classes, videos, and streams,
Bring lessons to life, fulfill young dreams.
With just a click, a world of knowledge unfurls,
From science to arts, it connects the world.

Empowering Teachers with Tools:
For educators, tech's a trusted friend,
Smart boards and apps to make lessons bright,
Engage students in new ways, day and night.
No longer bound by chalk and slate,
Tech's a partner that educates.

Bringing Education to the Palm:
Tablets and laptops, now part of the scene,
Making learning accessible, sharp, and keen.
Students in rural towns and remote heights,
Can join the digital world, no matter the nights.

From e-books to virtual labs, they learn,
Exploring subjects at every turn.
Digital libraries and resources galore,
Opening minds, unlocking doors.

Skills for the Future:
In the digital world, tech's key to the door,
Skills for the future, and so much more.
Coding, AI, robotics too, All at the fingertips of the students' view.

Workshops and training in tech abound,
Giving young minds the skills they've found.
Preparing them for the global stage,
Empowering dreams, unlocking a wage.

Breaking Barriers with Access:
No longer bound by the limits of space,
Tech brings learning to every place.
From urban schools to village hearts,
Equal access is where it starts.

Digital tools break barriers down,
No longer just for the city's crown.
A level playing field, everyone can see,
Education for all, that's the key.

The Path Ahead:
So Himachal's schools and colleges, both old and new, Embrace the tech that's changing the view.
From classrooms to online streams,
Tech is shaping tomorrow's dreams.

Investing in tools, embracing the shift,
Will give students a significant lift.
The future's bright with tech in hand,
Transforming education across the land.

Rohit Palsara
B.Com. III Year

Digital Detraction

In the fast paced world of academia where deadlines loom large and the pressure to perform never seems to cease, students are often caught in the delicate balance of time management.

In today's digital age, students face a barrage of distractions at their fingertips. Social media, online gaming, and endless streaming platforms all provide tempting diversions that take students away from their academic responsibilities. Research has shown that students spend an average of 3–5 hours daily on social media platforms such as Instagram, TikTok, and Facebook. While these platforms can be entertaining, they also take away valuable time that could be spent studying, attending lectures, or engaging in constructive activities.

Procrastination is one of the most common culprits of time wastage among students. The causes of procrastination are multifaceted: fear of failure, lack of motivation, poor study habits and overwhelming workloads. Unfortunately, procrastination often leads to students scrambling to meet deadlines, which results in stress and compromised work quality.

Another contributing factor to the wastage of time is the lack of proper time management skills. Many students fail to prioritize tasks effectively, resulting in wasted time on less important activities. Research reveals that students who don't plan their study schedules or follow a structured routine are more likely to waste time and miss deadlines. Instead of dedicating sufficient time to crucial tasks, students may spend excessive hours on low-priority activities, leaving little time for meaningful study. While extracurricular activities play an essential role in a student's personal development, over committing to too many of them can lead to time wastage. Research shows that students who engage in multiple activities often spread themselves too thin, leaving little time for academic work or proper rest. This over-scheduling can result in burnout and inefficiency. Further, many students struggle with time management simply because they do not have clear academic goals or lack motivation. Research indicates that students who set specific, measurable academic goals tend to waste less time and stay focused on their tasks.

Thus, wastage of time is a common issue faced by many students, but with the right strategies, it is possible to mitigate its effects. By addressing digital distractions, overcoming procrastination, improving time management skills, balancing extracurricular activities, creating effective study environments, and prioritizing rest, students can reclaim lost time and enhance their productivity.

Research has consistently shown that the more students invest in honing their time management and study skills, the better their academic performance and overall well-being.

Gopal Thakur
B.Com. II Year

Role of Research in Higher Education

In the world of higher education, where knowledge blooms and young minds are shaped, research stands as a pillar of progress. It is not just an academic pursuit but a vital force that shapes critical thinking, bridges theory with practice, and prepares students for the challenges of tomorrow.

1. Fuelling Curiosity and Innovation
At its core, research is about asking questions that lead to discovery and innovation. College students, equipped with the tools and guidance of their professors, dive into areas of study that spark their curiosity, exploring new ideas, testing hypotheses, and developing solutions. This process doesn't just foster intellectual growth; it nurtures a mind set of continuous inquiry, pushing students to explore the unknown and think beyond the classroom walls.

2. Bridging the Gap Between Theory and Practice
Research is the bridge that connects academic theory with real-world application. While students learn key concepts in their course work, it is through research that these concepts come to life. Whether it's gathering data in the field, or analyzing case studies, research allows students to apply what they've learned to actual problems giving them practical insights that extend far beyond theoretical knowledge.

3. Developing Critical Thinking and Problem-Solving Skills
Through research, students are taught to approach problems methodically, analyze complex information, and challenge existing perspectives. This skill set empowers them to think independently, make well-informed decisions, and tackle challenges with confidence and creativity.

4. Preparing Students for Future Careers
The skills acquired through research—such as analytical thinking, data interpretation, and effective communication—are highly sought after in nearly every industry. Whether students go on to pursue careers in science, business, healthcare, or the arts, their research experience provides a competitive edge.

5. Contributing to the Advancement of Knowledge
College research doesn't just benefit students; it contributes to the larger body of human knowledge. Many groundbreaking discoveries and advancements in technology, medicine, and social sciences have their roots in college research projects. Students, guided by faculty mentors, tackle real world issues—from climate change to public health—contributing new insights that push boundaries and shape our collective future.

6. Fostering Collaboration and Communication
Research often involves collaboration, whether it's working with peers, faculty, or professionals from various fields. Students learn to share ideas, discuss different viewpoints, and work toward a common goal, preparing them for diverse, dynamic work environments after graduation.

7. Building a Culture of Lifelong Learning
Research in college also fosters a culture of lifelong learning. Through research, students develop the discipline to continue exploring, questioning, and discovering throughout their careers. This attitude of lifelong learning is crucial in a rapidly changing world where the ability to adapt and grow is key to long-term success.

Conclusion:
In essence, research is the heartbeat of higher education, offering students the chance to engage deeply with their field of study, think critically, and contribute meaningfully to society. As we look to the future, the role of research in college education will continue to grow, empowering students to lead, discover, and create in ways that transform both their lives and the world around them.

Radhika Sharma
B.Com. I Year

The Impact of Hydropower Projects on Local Ecosystem

Hydropower projects in Himachal Pradesh, while offering energy, can lead local ecosystem to loss, altered river water quality, altered sand deposit, as well as impacting local communities and decline in their livelihood.

1. Habitat Loss and fragmentation:

• Submergence: Building dams and reservoirs can cause land to become submerged, leading to the loss of natural habitat and a change in the landscape.

• Loss of Bio-diversity: The destruction and decline in bio-diversity can lead to negative consequences for both plants and animal species.

2. Impact on River Ecosystem:

• Altered River Flow: Dams and reservoirs disrupt natural river flow patterns, which can affect water temperature, sediment transports and ability of nutrients, impacting aquatic ecosystem.

• Reduced Water Quality: Changes in river flow and reservoir level can damage the surrounding land, influence water ecosystems, and potentially increase pollutant levels, resulting reduced the water clarity.

3. Impact on Local Communities:

• Loss of Livelihoods: Hydropower projects can displace local communities, leading to the loss of agricultural land gazing-depend lands, and traditional livelihoods that rely on the river and its resources.

• Health Problems: Changes in water quality and the spread of diseases associated with water in reservoirs can pose health risks to local communities.

• Loss of Cultural Values: Hydropower projects can lead to the loss of cultural sites and traditional knowledge associated with the river and its ecosystem.

4. Other Impacts:

• Methane Emissions: Dams and reservoirs can release methane, a potent greenhouse gas, into the atmosphere as organic matter decomposes underwater.

• Increased Risks of Landscape and Cloudbursts: Some studies suggest that hydropower projects can increase the risk of landslides and cloudbursts in mountainous region like Himachal Pradesh.

• Deforestation: Hydro projects can lead to deforestation for construction activities such as building dams, tunnels, and access roads. Large areas of forest are often cleared to make space for reservoirs and infrastructure. This not only result in the loss of biodiversity but also disrupts local ecosystem and wildlife habitats. In mountainous region, deforestation can further increase the risk of landslide and

Saniya Chauhan
B. A. II Year

Impact of Tourism in Himachal

Tourism in Himachal Pradesh has both positve and negative impacts, contributing significantly to the state's employment ratio, but also posing challenges to the environment, culture and heritage of Himachal Pradesh.

Positive Impact :

I) Economic Growth: The tourism sector contributes significantly to Himachal Pradesh's Gross Operating Profit and creates numerous job opportunities, both directly and indirectly.
ii) Infrastructure Development: Increased tourism leads to improvements in infrastructure like roads, transportation, and accommodation, benefitting both tourists and locals.
iii) Cultural Preservation: Tourism can raise awareness and appreciation for local culture, traditions, and heritage.
iv) Community Development: Tourism can empower local community, by generating income and providing employment opportunities related to tourism activities, such as home stays and handicrafts.

Negative Impact:

I) Environmental Degradation: Over tourism can led to environmental issues like pollution, deforestation and resource
depletion

ii) Loss of Natural Beauty: Unregulated development and tourism activities lead to the degradation of natural landscapes and the loss of natural beauty.
iii) Congestion and Pollution: Increased tourist traffic can lead to congestion, pollution, and waste management problems in tourist areas.

Shalu
B.A. II Year

Wildfires in Himachal Pradesh: A Fiery Dance of Destruction and Renewal

Himachal Pradesh, a land of serene mountains and lush green forests, has been a haven for nature lovers. However, in recent years, wildfires have cast a blazing shadow over this picturesque landscape.

The once covered valleys now witness flames licking the sky, consuming vast stretches of pine and deodar forests. The delicate balance of nature trembles as the dance of fire sweeps through the hills, leaving behind charred remnants of what once thrived.

The reasons for these fires are many: rising temperature, prolonged dry spells, human negligence, and even deliberate burning for clearing lands. The summer months when the forests are dry and bright, create the perfect conditions for the flames to spread with vengeance.

It is the destruction that nature whispers, yet a tale of resilience; the ashes fertilise the soil and new life emerges.

Communities come together to combat the inferno, learning from each film that flickers with the wildfires of Himachal Pradesh. These are reminders of the powerful bond between humanity and nature, urging us to protect the environment and respect the land that cradles us.

Neetika Chauhan
B.A. II Year

Role of Research for Commerce Students

Research is a powerful tool that unlocks understanding, deepens knowledge, and shapes their future career paths. Research helps students of commerce in gaining insights into market trends and consumer behaviour.

By analysing data, conducting surveys, and studying case studies, students can identify emerging trends and understand the factors that drive consumer decisions. This knowledge is essential for future careers in marketing, retail, finance, and entrepreneurship, where staying ahead of market shifts is crucial. Further, it helps in enhancing the analytical skills by going through the financial reports and provide large amounts of information.

In today's digital age, understanding how technology impacts business practices is more important than ever. Research allows commerce students to explore the intersection of technology and commerce—whether it's studying e-commerce trends, the role of artificial intelligence in finance, or how blockchain is transforming supply chains. By researching the latest technological advancements, students can prepare themselves for the future of business, which will undoubtedly rely on digital innovation. It also plays imperative role in understanding the effects of trade agreements, international politics, and financial policies influencing markets worldwide.

Research helps commerce students understand macroeconomic principles and the global forces that shape industries. By studying case studies on international trade, exchange rates, and global recessions, students can gain a broader perspective on how economic decisions at the global level affect businesses locally and internationally. It also assists in sustainable business practices. By researching sustainable business models, green finance, and corporate social responsibility (CSR), students can contribute to the growing field of sustainable commerce.

Research helps students sharpen their understanding of business strategy. Whether they're studying competitive strategies, mergers and acquisitions, or financial modeling, research gives them the tools to analyze a business's strengths, weaknesses, opportunities, and threats (SWOT).These insights are crucial for students planning careers in management, consultancy, or entrepreneurship, where strategic thinking is key. Through research papers, presentations, or reports, the ability to communicate research findings is a crucial skill in any business environment. Research can also help students build connections within their fields of interest.

Through academic research, students often collaborate with professors, industry experts, or fellow researchers. These relationships can open doors to internships, mentorships, and job opportunities, helping students build a professional network that will support them throughout their careers.

Satiksha
B.Com. III Year

CSCA Function Anugoonj 2024- 25

Annual Function "Triveni" 2024-25

हमारी संस्कृति
हमारी पहचान

Ptd. by. : Harihar Printing Press, Nagwain. Phone : 70188-45202